भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 319 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 14 नवम्बर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

क्रियायोग हं क्षं परमात्म अनुभूति का सर्वोच्च मार्ग

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

मुंबई में बम से संभावित हमले की सूचना के बाद पुलिस अलर्ट

नई दिल्ली। मुंबई में बम से हमला किये जाने की सूचना मिलने के बाद वहां सुरक्षा बढ़ा दी गई है। बम से हमले की सूचना मिलते ही पुलिस ने चप्पे-चप्पे पर निगरानी बढ़ाई है। न्यूज एजेंसी 'अठक' ने मुंबई रेलवे पुलिस कमिश्नर कैसर खालिद के हवाले से इस बात की जानकारी दी है। अधिकारी ने कहा, 'बांद्रा रेलवे स्टेशन पुलिस को संभावित बम हमले की सूचना टेलीफोन के जरिए मिली थी। सूचना मिलने के बाद सभी सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट कर दिया गया है। पुलिस आयुक्त कैसर खालिद ने आगे कहा, 'मुंबई में संभावित बम हमले की सूचना बांद्रा आरपीएस को टेलीफोन से मिली। जिसके बाद सुरक्षा बढ़ा दी गई है। सभी एजेंसियों को सूचना दी गई है।

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में पुलिस को बड़ी कामयाबी

एनकाउंटर में 26 नक्सली ढेर

गढ़चिरौली, एजेंसी)। महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित गढ़चिरौली जिले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। ग्यारापट्टी जंगल में महाराष्ट्र पुलिस की उ-60 यूनिट ने एनकाउंटर में 26 नक्सलियों को मार गिराया है। मुठभेड़ में तीन जवान भी घायल हुए हैं। गढ़चिरौली के एसपी अंकित गोयल ने इसकी पुष्टि की है। महाराष्ट्र छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित घटनास्थल मुंबई से 900 किलोमीटर दूर है। एसपी अंकित गोयल ने कहा, "हमने अभी तक जंगल से 26 नक्सलियों के शव बरामद किए हैं।" मारे गए नक्सलियों के पहचान की कोशिश चल रही है। सूत्रों के मुताबिक, मारे

गए आतंकियों में इनका टॉप कमांडर भी शामिल है। ग्यारापट्टी के वन क्षेत्र स्थित धनोरा में मुठभेड़ उस समय हुई, जब पुलिस टीम तलाशी अभियान चला रही थी। उन्होंने बताया कि नक्सलियों ने कमांडो को देखते ही गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षा बलों की जवाबी कार्रवाई के बाद वे जंगल की ओर भाग निकले। अधिकारी ने बताया कि सुबह मर्दिनटोला गांव के पास मुठभेड़ शुरू हुई थी। घायल हुए तीन पुलिसकर्मियों को उपचार के लिए हेलिकॉप्टर से नागपुर ले जाया गया। उन्होंने बताया कि पुलिस की कमांडो टीम को सूचना मिली थी कि कुछ नक्सली छत्तीसगढ़ के जंगलों से गढ़चिरौली जाने वाले हैं।

मणिपुर आतंकी हमले के बाद हमलावरों को घेरने की तैयारी

म्यांमार सीमा पर निगरानी बढ़ी, सेना प्रमुख बोले- आतंकियों की तलाश जारी

नई दिल्ली। मणिपुर में असम राइफल्स के काफिले पर हमले में कर्नल, उनकी पत्नी, बेटा समेत सात लोगों की मौत के बाद सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि इस हमले में शामिल आतंकवादी फरार ना हो जाएं, इसलिए म्यांमार सीमा पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। आर्मी मुख्यालय हालात पर लगातार कड़ी नजर बना कर रख रहा है। सरकारी सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने इस आतंकी हमले की जानकारी ली है। हमले के बाद इस इलाके में इस हमले में शामिल आतंकवादियों को पकड़ने के लिए ऑपरेशन चलाया जा रहा है। आपको बता दें कि मणिपुर के चुराचांदपुर में शनिवार को हुए हमले में भारतीय सेना का एक कर्नल, उनकी पत्नी और आठ साल का बेटा तथा असम राइफल्स के चार जवान मारे गए। कर्नल विप्लव त्रिपाठी 46वीं असम राइफल्स के कमांडिंग ऑफिसर(सीओ) थे। अधिकारियों ने कहा कि देहेंग क्षेत्र से करीब तीन किलोमीटर दूर घात लगाकर किए गए इस हमले में चार अन्य लोग घायल हो गए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे 'कायरतापूर्ण' हमला बताते हुए कहा कि इसके दोषियों को जल्द ही न्याय के कटघरे में लाया जाएगा।

पुलिस व बदमाशों में भिडंत, गोलीबारी में एक बदमाश घायल, दूसरा गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

मांडा। मांडा जंगल में देर रात मांडा पुलिस, एसओजी व बदमाशों के मुठभेड़ में गोली से घायल एक बदमाश तथा भागता दूसरा बदमाश पुलिस के हत्थे चढ़ा। मौके से दो तमंचे, तीन कारतूस के खोखे व एक जीवित कारतूस मिला।

शनिवार रात लगभग दस बजे मांडा थाना क्षेत्र के भरारी लालगंज मार्ग के किमी तीन पर जंगल में बदमाशों के आने की सूचना पर इंस्पेक्टर मांडा अवन कुमार दीक्षित मांडा थाने, भारतगंज व दिघिया चौकी की संयुक्त पुलिस व एसओजी यमुनापार की टीम के साथ पहुंचे। जंगल में प्रदीप कुमार जोशी (25) ऊर्फ जोशी खरवार पुत्र अनिल खरवार व अनीश खरवार पुत्र सुरेन्द्र कुमार खरवार निवासीगण- ओनशोन डेहरी,, थाना डेहरी बाजार, जिला रोहताश, बिहार पुलिस को देखते ही गोली चलाने लगे। पुलिस ने भी जवाबी गोली चलायी। प्रदीप के पैर में पुलिस की गोली लगी, वह घायल होकर गिर गया और अनीश गोली चलाते हुए जंगल में भागने लगा। पुलिस ने अनीश को दौड़ाकर पकड़ा। जामा तलाशी में दोनों के पास दो तमंचे, प्रदीप के पास कारतूस का एक खोखा व एक कारतूस तथा अनीश के पास दो कारतूस के खोखे मिले। घायल प्रदीप का सीएचसी मांडा में प्राथमिक उपचार जारी है और अनीश से पूछताछ में दोनों ने अन्य अपराधों का भी जुर्म स्वीकार किया है। पुलिस व एस ओ जी की टीम बदमाशों से पूछताछ व अग्रिम कार्यवाही कर रही है। जिले के पुलिस अधिकारियों को भी घटना से अवगत करा दिया गया है, देर रात उच्चाधिकारी भी मांडा थाने पहुंचेंगे।

अमरावती में धारा 144 लागू, तीन दिनों के लिए इंटरनेट भी बंद

अमरावती। त्रिपुरा हिंसा के विरोध में महाराष्ट्र में उपद्रव की घटनाएं कम होने का नाम नहीं ले रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि अमरावती शहर में हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद सीआरपीसी की धारा 144 के तहत लागू कर दी गई है और इंटरनेट सेवाएं तीन दिनों के लिए बाधित कर दी गई हैं। महाराष्ट्र में बीते रोज से कई जगहों पर उपद्रव की घटनाएं हो रही हैं। नांदेड़ा और अमरावती में पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प भी हुई थी। महाराष्ट्र के डीजीपी संजय पांडे का कहना है कि शुक्रवार से कई जगहों पर हिंसा की घटनाएं हो चुकी हैं। हमने कुछ जगहों पर इंटनेट बाधित किया है, जिसका पालन करना होगा। हिंसा, तोड़फोड़ की किसी भी घटना पर आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

मधुबनी में मिली पत्रकार की अधजली लाश

अस्पताल के खिलाफ लिखने पर मर्डर?

मधुबनी। चार दिनों से लापता मधुबनी जिले के बेनीपट्टी के सोशल मीडिया के पत्रकार बुद्धिनाथ झा उर्फ अविनाश झा का अधजला शव शुक्रवार की देर रात पुलिस ने बरामद किया। शव बेनीपट्टी-पुपरी मुख्य पथ एसएच 52 के बगल में उड़ैन गांव के निकट पड़ा था। भाई चंद्रशेखर कुमार ने अपने भाई के गायब होने की एफआईआर कराई थी। बताया था कि उनका भाई वर्षों से बेनीपट्टी में चले रहे फर्जी नर्सिंग होम पर कार्रवाई के लिए कागजी प्रक्रिया कर रहा था। आरोप लगाया है कि एक साजिश के तहत भाई को गायब किया गया है। वहीं एसपी डॉ सत्यप्रकाश ने बताया कि कुछ लोगों को हिरासत में लिया गया है। कुछ और की संलिप्तता सामने आयी है, जिसकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी चल रही है।पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में 4 दिन पहले मृत्यु होने की बात सामने आई है। बेनीपट्टी थानाध्यक्ष अरविंद कुमार ने कहा कि आवेदन मिलने के साथ ही पुलिस जांच-पड़ताल में जुटी हुई थी। अब शव मिलने पर प्राथमिकी दर्ज कर सभी बिंदुओं की जांच-पड़ताल करते हुए पुलिस शीघ्र अपराधियों तक पहुंचने की कोशिश कर रही है। पुलिस हत्यारों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर लेगी। बता दें, बेनीपट्?टी में 19 प्राइवेट अस्पताल हैं। उन सभी की कमियों को अविनाश समय-समय पर उजागर करते रहे थे। वह पत्रकार के साथ-साथ सोशल एक्टिविस्ट भी थे। लोक शिकायत निवारण अधिनियम के तहत उन्होंने इन फर्जी क्लीनिक की शिकायत की थी, जिन पर कार्रवाई हुई थी। परिवार ने इन्हीं फर्जी क्लीनिक के संचालकों पर हत्या के आरोप लगाए हैं।

फूलपुर इफको केंद्र पर भगदड़, महिला गंभीर

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। डीएपी को लेकर किसानों की दुश्वारियां बढ़ गई हैं। शनिवार को इफको फूलपुर किसान सेवा केंद्र पर भगदड़ की वजह से एक महिला गंभीर रूप से जख्मी हो गई। प्राथमिक इलाज के बाद उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। भगदड़ में कई अन्य किसान भी घायल हो गए। इफको केंद्र पर डीएपी के लिए कई दिनों से किसानों की लंबी कतार लग रही है। शनिवार को भी बड़ी संख्या में किसान लाइन में लगे। गेट खुलते ही वहां भगदड़ मच गई। इस दौरान गिरने से कई किसान घायल हो गए। 55 वर्षीय एक महिला के ऊपर से तो कई किसान गुजर गए। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। महिला के पति लगातार गुहार लगाते रहे, लेकिन किसी ने नहीं सुनी। पति संतोष कुमार किसी तरह से पत्नी को किनारे ले जाने में सफल हो पाए। इसके बाद वह इलाज के लिए गुहार लगाते रहे, लेकिन एंबुलेंस पहुंचने में करीब डेढ़ घंटे लग गए। महिला को फूलपुर सामुदायिक केंद्र ले जाया गया।तबीयत बिगड़ने पर उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। भगदड़ की वजह से वहां काफी देर तक खाद की बिक्री भी रुकी रही। सूचना पर उप निदेशक कृषि विनोद कुमार भी केंद्र पर पहुंच गए। प्रशासन तथा कृषि विभाग के अफसरों ने किसी तरह से किसानों को आश्वस्त किया कि सभी को डीएपी मिलेगी। इसकी कोई कमी नहीं है। हालांकि इसके बाद किसानों में नाराजगी रही।

समिति कर्मचारी के घर मिली 23 बोरी डीएपी, जांच शुरू

डीएपी की कालाबाजारी में कर्मचारियों की भी मिलीभगत की बात सामने आई है। होलागढ़ में सहकारी समिति के एक कर्मचारी के घर से 23 बोरी डीएपी मिली है। आरोपी कर्मचारी होलागढ़ सुल्तानपुर अकबर स्थित साधन सहकारी समिति पर कार्यरत है। कमईपुर गांव स्थित उसके घर से खाद मिली है। बताया जा रहा है कि किसी बैंक कर्मचारी ने खाद रखवाई थी। एडीओ को-ऑपारेटिव बृजेंद्र मिश्रा का कहना है कि मामला संज्ञान में आया है। इसकी जांच कराई जा रही है। जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

डीएपी की कालाबाजारी, अवैध भंडारण से बिगड़े हालात

डीएपी के लिए कतार में लगे किसानों की कालाबाजारी और अवैध भंडारण ने मुसीबत और बढ़ा दी है। इसका अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि पिछले वर्ष की तुलना में अधिक आपूर्ति के बावजूद डीएपी की कमी हो गई है और केंद्रों पर लंबी कतार लग रही है। खाद नहीं मिलने से नाराज किसानों ने शनिवार को भी जगह-जगह विरोध प्रदर्शन किया। कालाबाजारी और डीएपी डंप किए जाने की शिकायत पर कृषि विभाग की तीन टीमों ने शनिवार को भ्रमण किया, लेकिन समस्या का समाधान नहीं निकला। रबी सीजन के लिए एक अक्तूबर से अब तक 16600 मीट्रिक टन डीएपी आ चुकी है। वहीं पिछले वर्ष इस अवधि में 15 हजार मीट्रिक टन डीएपी की आपूर्ति हुई थी। इस तरह से अब तक 1660 मीट्रिक टन अधिक डीएपी की आपूर्ति हो चुकी है। ऐसे में डीएपी की कमी से कई सवाल खड़े हो गए हैं। गौर करने वाली बात यह है कि अभी गेहूं की बुवाई पूरी तरह से शुरू नहीं हुई है। गेहूं की बुवाई शुरू होने के बाद खाद की मारामारी और बढ़ने की आशंका है।

अधिक आपूर्ति के बावजूद डीएपी की कमी के पीछे कालाबाजारी और भंडारण को मुख्य वजह माना जा रहा है। कई बाजारों में क्रय केंद्रों से कुछ दूरी पर ही अधिक कीमत पर डीएपी की बिक्री की शिकायतें मिल रहीं हैं। इसके अलावा यह भी कहा जा रहा है कि कालाबाजारी करने वालों ने डीएपी डंप भी कर ली है। इसकी शिकायत प्रशासन तथा कृषि विभाग के अफसरों के पास भी पहुंची है। इसके बावजूद कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई है। हालांकि, जिला कृषि अधिकारी सुभाष मौर्या का कहना है कि कालाबाजारी करने वालों तथा डीएपी डंप करने वालों के खिलाफ अभियान शुरू किया गया है। इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। शनिवार को तीन टीमों ने निरीक्षण किया। इसके अलावा क्रय केंद्रों से सिर्फ जरूरतमंद किसानों को ही डीएपी मिले, इसके लिए भी कई कदम उठाए गए हैं। उप निदेशक विनोद कुमार का कहना है कि जिले में कहीं भी खाद की कमी नहीं है। लोगों में किसी तरह का भ्रम है, इसलिए केंद्रों पर भीड़ जुट रही है। जल्द ही स्थिति सामान्य हो जाएगी।

आज एक रैक खाद आने की उम्मीद

मांग को देखते हुए डीएपी की आपूर्ति बढ़ाई जा रही है। जिला कृषि अधिकारी के अनुसार एक रैक डीएपी आ रही है। रविवार को डीएपी के पहुंचने की उम्मीद है। इसमें 1600 मीट्रिक टन डीएपी होगी। एक सप्ताह में दो रैक डीएपी और आने की उम्मीद है। इसके लिए शासन को पत्र लिखा गया है। डीएपी के अलावा 1650 मीट्रिक टन एनपीकेएस (22020013) खाद भी आ चुकी है।

डीएपी के लिए जद्दोजहद

डीएपी के लिए किसानों की जद्दोजहद को फूलपुर केंद्र पर मची भगदड़ से घायल महिला के संघर्ष से ही समझा जा सकता है। कांदीपुर सोपरावारी की प्रेमा देवी के पति संतोष कुमार दो सप्ताह से लाइन लगा रहे थे लेकिन टोकन ही नहीं मिला और न ही खाद मिली। इसी बीच संतोष को किसी ने बताया कि कोई महिला लाइन में लग जाए तो खाद थोड़ी आसानी से मिल जाएगी। इसके बाद शुक्रवार को प्रेमा देवी ने लाइन लगाई लेकिन उन्हें भी निराशा मिली। इसके बाद भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और केंद्र के बाहर ही रात गुजारी और शनिवार को गेट खुलने का इंतजार करती रहीं। सुबह 10 बजे गेट खुलने पर भगदड़ मच गई जिसमें प्रेमा देवी गंभीर रूप से घायल हो गईं।

मध्य प्रदेश के सीएम शिवराज बोले-

गाय के गोबर और मूत्र से मजबूत हो सकती है देश की अर्थव्यवस्था

नई दिल्ली। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि गाय के गोबर और पेशाब से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकता है। भोपाल में इंडियन वेटनरी एसोसिएशन की महिला विंग के कन्वेंशन को संबोधित करते हुए सीएम ने यह बात कही। सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि गाय, उनकी गोबर और पेशाब देश और राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं, अगर एक सही सिस्टम इसके लिए लागू किया जाए तब। शिवराज सिंह चौहान ने कार्यक्रम में मौजूद वेटनरी डॉक्टर्स को संबोधित करते हुए कहा कि 'गाय/बैल के बिना काम चल नहीं सकता। सरकार ने तो गौशाला बना दी, लेकिन जब तक समाज नहीं जुड़ेगा तब तक सरकारी गौशालाओं से काम नहीं चलेगा। हम मध्य प्रदेश में अलख जगाने की कोशिश कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि 'गाय के गोबर से गोमूत्र से हम चाहे तो खुद की भी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर सकते हैं और देश आर्थिक रूप से सक्षम बना सकते हैं।

सलमान खुर्शीद की किताब की बिक्री और प्रकाशन पर रोक की मांग

नई दिल्ली। सलमान खुर्शीद द्वारा लिखित पुस्तक ₹सनराइज ओवर अयोध्या₹ को लेकर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब एक अधिवक्ता ने इस किताब के प्रसार, बिक्री, खरीद और प्रकाशन को रोकने के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की है। एडवोकेट विनीत जिंदल ने हिंदुत्व की तुलना आईएस और बोको हराम जैसे चरमपंथी संगठनों से करने पर कांग्रेस नेता सलमान खुरीद की किताब पर प्रतिबंध लगाने के लिए दिल्ली हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। अधिवक्ता ने एडवोकेट राज किशोर चौधरी के माध्यम से दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष याचिका दायर की है। याचिकाकर्ता ने यह भी मांग की है कि पुस्तक को किसी भी रूप में प्रकाशित नहीं किया जाए, यानी मुद्रित या इलेक्ट्रॉनिक रूप में भी नहीं।

कांग्रेस शासन में मुस्लिम राष्ट्र था भारत, अब मोदी राज में हुआ धर्मनिरपेक्ष : भाजपा

नई दिल्ली। हिंदुत्व को लेकर कांग्रेस नेताओं की बयानबाजी और सलमान खुर्शीद की किताब को लेकर उपजे विवाद पर भाजपा ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि जब कांग्रेस सत्ता में थी तो उस वक्त भारत आंशिक रूप से एक ₹मुस्लिम राष्ट्र₹ था, क्योंकि शरिया प्रावधान तब कानूनी व्यवस्था का हिस्सा थे।

भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने आरोप लगाया कि त्रिपुरा में मस्जिदों को निशाना बनाने की झूठी खबरों पर महाराष्ट्र में हिंसा, सोशल मीडिया में दुष्प्रचार अभियान और हिंदुत्व पर हमला करने वाले कांग्रेस नेताओं की टिप्पणियां हिंदू धर्म के खिलाफ एक बड़ी साजिश का हिस्सा हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर हमला करते हुए उन्होंने हैरानी जताई कि क्या विपक्षी नेता महाराष्ट्र में उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं को हिंदुत्व को बदनाम करने और सांप्रदायिक कलह और हिंसा भड़काने के लिए एक संगठित अभियान चलाने का प्रशिक्षण दे रहे हैं? एक प्रशिक्षण शिविर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अपने भाषण के दौरान राहुल गांधी ने हिंदू धर्म और हिंदुत्व के बीच अंतर करने की मांग की थी। दरअसल, कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद द्वारा आरएसएस-भाजपा की विचारधारा से जुड़े हिंदुत्व की तुलना आतंकवादी इस्लामी संगठनों के साथ करने के बाद भाजपा आक्रामक हो गई है। त्रिवेदी ने कहा कि कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति का प्रतीक है और हिंदू धर्म के खिलाफ नफरत फैलाती है और दंगों का कारण बनती है। यह देखते हुए कि शिवाजी का शासन हिंदू धर्म से भी जुड़ा था, त्रिवेदी ने कहा कि राहुल गांधी जैसे नेता इस अवधारणा को नहीं समझ सकते हैं और इसलिए उन्हें महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक और जवाहरलाल नेहरू जैसे अपनी पार्टी के दिग्गजों को पढ़ना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, नेहरू ने लिखा था कि 'हिंदू' शब्द को भारतीय पहचान के व्यापक संदर्भ में समझा जा सकता है और इसे संकीर्ण रूप से नहीं देखा जाना चाहिए।

खबर संक्षेप

आज सुबह 10 से 1 बंद रहेगी तीन घंटे बिजली

नैनी। कॉटन मिल उपकेंद्र से जुड़े पीएसी कॉलोनी, नैनी बाजार, चक दाउद नगर, चक भटाही व चक रघुनाथ मोहल्लों की बिजली आपूर्ति रविवार को सुबह 10:00 लेकर दोपहर 1:00 बजे तक बंद रहेगी। संबंधित एसडीओ दिनेश प्रसाद सोनकर ने जानकारी देते हुए बताया कि विद्युत कार्य होने की वजह से उक्त मोहल्लों की बिजली आपूर्ति तीन घंटे बंद रहेगी।

विधायक ने व्यक्त की शोक संवेदना

सहसों। सहसों क्षेत्र के रामनाथपट्टी गांव निवासी राममूरत गुप्ता 40 वर्ष पुत्र बैजनाथ गुप्ता के असामयिक निधन पर क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल ने मृतक के आवास पर पहुंच कर शोक संतप्त परिवार को ढांढस बंधाया तथा मृत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। इस अवसर पर उन्होंने गरीब परिवार को आर्थिक मदद भी दी। इस मौके पर टीएन सिंह, संदीप द्विवेदी, संजय शुक्ला, रजनीश पांडे, विश्वनाथ गुप्ता, पुरुषोत्तम, सुभाष चन्द्र विश्वकर्मा, राजेश कुमार आदि रहे।

ऋषिकेश से गंगा टास्क फोर्स द्वारा प्रारंभ की गई मशाल यात्रा पहुंचा प्रयागराज

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। गंगा को स्वच्छ, अविरल व निर्मल बनाये रखने के लिए जन जागरूकता हेतु दिनांक 08.11.2021 को ऋषिकेश से गंगा टास्क फोर्स द्वारा प्रारंभ की गई मशाल यात्रा का प्रयागराज पहुंचने पर शनिवार को उसका भव्य स्वागत किया गया। इस मशाल यात्रा का नेतृत्व मेजर एल एन जोशी कर रहे हैं। यात्रा सुबह 9:50 बजे सरस्वती घाट से नांव से चलकर वी आई पी घाट पहुंची। मशाल यात्रा के साथ कर्नल वेदब्रत वैद्य, लेफ्टिनेंट कर्नल विनीत सेठ, प्रभागीय निदेशक श्री रमेश चंद्र, उप प्रभागीय वनाधिकारी संजय शर्मा, वन क्षेत्राधिकारी के वी आई पी घाट पहुंचने पर माननीय सांसद श्रीमती केशरी देवी पटेल, मेयर श्रीमती अभिलाषा गुप्ता नन्दी, गंगा विचार मंच प्रांत संयोजक अनामिका चौधरी,तीर्थ पुरोहितों, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन से निधि द्विवेदी व नेहरू युवा केंद्र, प्रयागराज से जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे, जिला परियोजना अधिकारी नमामि गंगे एषा सिंह,जिला परियजना अधिकारी, प्रतापगढ़ शिवम यादव ,वन्य जीव संस्थान से कृष्णा प्रकाश उपाध्याय, स्वयं सेवक, गंगादूत ,छात्र छात्राओं ने स्वागत किया। उसके बाद गंगा आरती हुई। तदुपरान्त मशाल मुख्य पंडाल में रखी गई। जहां छात्र छात्राओं ने भव्य रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जिला गंगा समिति के सदस्य सचिव/प्रभागीय निदेशक प्रयागराज श्री रमेश चंद्र ने सभी गणमान्य आगंतुकों का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। सभी गणमान्य लोगों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सैण्ड आर्ट से गंगा के उद्गम का आकर्षक चित्रण किया गया। इसी कड़ी में दूसरा कार्यक्रम चंद्रशेखर आजाद पार्क में रखा गया नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज, नमामि गंगे परियोजना के द्वारा गंगा गीत, पोस्टर प्रदर्शनी एवं गंगा प्रदर्शनी, नमामि गंगे के कार्यों पर डॉक्यूमेंट्री आयोजित की गई। कार्यक्रम में स्वयंसेवक अमन, रितिका, रोहित,निर्मल कांत, हिमांशु, मनीष, अंकित, वल्लभ आदि उपस्थित रहे।

गंगा को स्वच्छ अविरल व निर्मल रखने के लिए जन जागरूकता हेतु प्रयागराज पहुंचा मशाल का हुआ भव्य स्वागत

सौतेली बेटी से कर रहा था दुष्कर्म, पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रयागराज। कीडगंज में रहने वाले एक व्यक्ति ने अपनी 14 वर्षीय सौतेली बेटी से दुष्कर्म किया। शिकायत पर जान से मारने की धमकी भी दी। घटना की जानकारी पर पत्नी बेटी को लेकर थाने पहुंची। जिसके बाद मुकदमा दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने बताया कि आरोपी कीडगंज निवासी कैलाश केशरी है। पहली पत्नी के बाद उसने एक महिला से दूसरी शादी की है। महिला की भी यह दूसरी शादी है और उसकी एक बेटी भी है जिसे वह साथ लेकर रहती है। महिला का आरोप है कि दो दिन पहले उसकी बेटी ने उसे बताया कि पिता उसके साथ गलत काम करता है। वह पिछले कई साल से उसके साथ दरिंदगी कर रहा है और मुंह खोलने पर जान से मारने की धमकी भी देता था। डर के चलते वह चुपचाप सब कुछ सहती रही। यह सुनकर महिला के होश उड़ गए। वह बेटी को लेकर थाने पहुंची और लिखित शिकायत दर्ज कराई। जिसके बाद पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

हिंदू धर्म में एकादशी का है अत्याधिक महत्व, भगवान विष्णु को होती है समर्पित

(सुनील गिरि)

- विधि- विधान से की जाती है भगवान विष्णु की पूजा
- सभी प्रकार के मांगलिक कार्य हो जाते हैं प्रारंभ
- प्रयागराज समेत कई जिलों में 15 नवंबर को भी एकादशी का पर्व मनाया जाएगा

नैनी। देवउठनी एकादशी तिथि 14 नवंबर सुबह 5 बजकर 48 मिनट पर शुरू हो जाएगी। जो 15 नवंबर सुबह 6 बजकर 39 मिनट तक रहेगी। 14 नवंबर को उदयातिथि में इस तिथि के प्रारंभ होने से एकादशी का व्रत रखा जाएगा। 15 नवंबर को सुबह श्री हरि का पूजन करने के बाद व्रत का पारण करेंगे। वहीं प्रयागराज समेत विभिन्न कई क्षेत्रों में 15 नवंबर को भी व्रत के साथ तुलसी माताजी का पूजन किया जाएगा। मान्यता है कि मंगलवार व रविवार के दिन तुलसी माता जी को स्पर्श नहीं किया जाता है। जिसकी वजह से कई क्षेत्रों के रहने वाले लोग 15 नवंबर को व्रत के साथ ही तुलसी पूजन करेंगे। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी को देवउठनी एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस दिन भगवान विष्णु योग निद्रा से जागते हैं और सृष्टि का कार्य भार संभालते हैं। इस दिन से विवाह, गृह प्रवेश, जातकर्म संस्कार आदि सभी प्रकार के मांगलिक कार्य शुरू हो जाते हैं। हिंदू धर्म में एकादशी का बहुत अधिक महत्व होता है। एकादशी तिथि भगवान विष्णु को समर्पित होती है। इस दिन विधि- विधान से भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना की जाती है। एकादशी व्रत करने से मृत्यु के पश्चात मोक्ष की प्राप्ति होती है। हिंदू पंचांग के अनुसार प्रत्येक माह में दो बार एकादशी तिथि आती है। एक कृष्ण पक्ष में और एक शुक्ल पक्ष में।

देवउठनी एकादशी की सरल पूजा-विधि

गन्ने का मंडप बनाने के बाद बीच में चौक बना लें। इसके बाद चौक के मध्य में चाहें तो भगवान विष्णु का चित्र या मूर्ति रख सकते हैं। चौक के साथ ही भगवान के चरण चिह्न बनाए जाते हैं। जिसे ढक दिया जाता है। इसके बाद भगवान को गन्ना, सिंघाड़ा और फल-मिठाई समर्पित किए जाते हैं। घी का एक दीपक जलाया जाता है, जो कि रातभर जलता रहता है। भोर में भगवान के चरणों की विधिवत पूजा की जाती है। फिर चरणों को स्पर्श करके उनको जगाया जाता है। इस समय शंख-घंटा-और कीर्तन की आवाज की जाती है। इसके बाद व्रत-उपवास की कथा सुनी जाती है। जिसके बाद सभी मंगल कार्य विधिवत शुरू किए जा सकते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि भगवान को सिर्फ सात्विक चीजों का भोग लगाया जाता है। भगवान विष्णु के भोग में तुलसी को जरूर शामिल करें। बिना तुलसी के भगवान विष्णु भोग ग्रहण नहीं करते हैं। इस पावन दिन भगवान विष्णु के साथ ही माता लक्ष्मी की पूजा भी करें और भगवान का अधिक से अधिक ध्यान करें। भजन और मंत्र भी जाप करें। एकादशी के दिन चावल खाना पूरी तरह वर्जित माना गया है। इसके अलावा मांसाहार या तामसिक गुणों वाली चीजों का सेवन करने से भी बचना चाहिए। एकादशी के दिन तुलसी तोड़ने से बचें।

बसपा प्रमुख मायावती को मातृ शोक बसपाइयों ने शोक व्यक्त किया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री मायावती की 92 वर्षीय माता रामरती जी का शनिवार को इलाज के दौरान ह्रदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। बसपा प्रमुख की माँ के निधन की सूचना मिलते ही बसपा के पदाधिकारियों व कार्यकताओं ने शोक व्यक्त करते हुये इस बेदना को सहने की शक्ति परिजनों को मिले प्रकृति से प्रार्थना की गई। मिली जानकारी के अनुसार बसपा प्रमुख मायावती की माँ ने अपने जीवनकाल में कड़ी मेहनत व लगन से कार्य करती रही । वे अपने आखिरी समय तक परिवार के बीच रही तथा सभी के लिए प्रेरणाश्रोत बनी रही। बहन मायावती के पिता प्रभुदयाल जी का निधन 95 वर्ष की आयु में 19 नवम्बर 2020 को ही हो चुका है। शोक प्रकट करने वालो में मिजार्पुर,प्रयागराज मण्डल के मुख्य सेक्टर प्रभारी अशोक गौतम,बाबूलाल भवरां, सहित मण्डल के सभी मुख्य सेक्टर प्रभारी, सेक्टर प्रभारी सहित जिले के बसपा पदाधिकारियों व कार्यकताओं ने शोक प्रकट करते हुऐ इस आत्मा की शान्ति तथा शोकसंतप्त परिवार को इस असहय वेदना को सहने की शक्ति मिले ऐसी प्रार्थना की है। शोक व्यक्त करने राजू गौतम, अतुल टीटू, रविन्द्र गांधी, रामबृज गौतम, अभिषेक गौतम, शारदा प्रसाद, सन्तोष हेला, अवधेश गौतम, अनिल गौतम, मनोज पासी, महेन्द्र दीवान, संदीप कुशवाहा, टिकेश गौतम, एड.रामचन्द्र वर्मा, एड. अनुज कुमार, समरजीत चौधरी, जगदम्मा कुशवाहा, मनोज कुशवाहा आदि लोग उपस्थित रहे।

संदिग्ध दशा में युवक का बबूल के पेड़ से फांसी पर लटकता मिला शव

अखंड भारत संदेस

कारणों का पता लगाने में पुलिस कर रही हैं छानबीन

भड़ेवरा / करछना। सुलमई गांव में धनराज निषाद पुत्र स्व श्री शिव मूरत निषाद ने फांसी लगाकर जान दी।बताते चलें कि व्यक्ति मेजा थर्मल पावर प्लांट में कार्यरत था और साइकिल लेने के लिए घर से निकला और वह बहाना बनाकर नदी के किनारे स्थित जवा महारानी देवी मंदिर के आसपास बबूल के पेड़ में फांसी लगा ली । दोपहर के समय जब आसपास के लोग टहलने के लिए निकले तो देखा कि व्यक्ति वहा पर मरा पड़ा हुआ था । उसकी शादी बगल के गांव नदी पार साहपुर में हुई थी ,उसके तीन बच्चे हैं , बड़े बेटे का नाम प्रवेश निषाद उम्र 13 वर्ष , बेटी का नाम काजल , पत्नी का नाम अंगूरा देवी और छोटे बेटे का नाम कुंदन को सूचना मिली तो घर के परिजन वहा पर पहुंचे , मरा हुआ देखकर घर वाले तुरंत पुलिस के पास सूचना दी , मौके पर पहुंची पुलिस थाना प्रभारी के साथ शव को कब्जे में लेकर पोस्ट मार्टम के लिए चीरघर भेज दी ।फांसी लगाने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है । पुलिस मामले में छानबीन करने में लगी हैं।

घटना स्थल पर पुलिस व गांव की जुटी भीड तथा इन्सेट में मृतक की फोटो

न्यूज झरोखा

बच्चों ने निकाली कोविड-19 जागरूकता टोली

सहसों। क्षेत्र के चन्दरपुर उर्फ बसमहुआ ग्राम सभा स्थित प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय विकासखंड बहरिया के अध्यापकों ने शनिवार को बच्चों के साथ एक टोली बनाकर कोविड-19 के तहत टीकाकरण हेतु जन जागरूकता अभियान के लिए टोली निकालकर ग्रामीणों को कोविड-19 एवं टीकाकरण संबंधी जानकारी देते हुए जागरूक किया गया। इस अवसर पर विकासखंड बहरिया के खंड शिक्षा अधिकारी धर्मेंद्र कुमार मौर्य ने जागरूकता अभियान टोली में शामिल बच्चों एवं शिक्षकों का उत्साहवर्धन करने के लिए टोली के साथ उपस्थित रहे। इस मौके पर पूर्व जिला पंचायत सदस्य अशोक तिवारी भी मौजूद रहे। कोविड-19 जन जागरूकता अभियान टोली के साथ प्रमुख रूप से शिक्षक आमोद श्रीवास्तव, जयशंकर, योगेश, तथा जावेद रसीद गौहर एवं स्वास्थ्य कर्मी आशा बहू , आंगनवाड़ी कार्यकत्री शामिल रहे।

मां सेवा संस्थान ने गरीब बूढ़ी दिव्यांग महिला की मदद्

करछना। माँ सेवा संस्थान रोकडी करछना प्रयागराज के सदस्यों ने शनिवार को सडक पर दूसरों से मांग कर जीवन यापन करने वाली बुजुर्ग महिला रामरती आदिवासी से मुलाकात हो गई, पूछने पर बताया कि गाँव में घर घर जाकर किसी तरह अपना जीवन यापन करती है, माँ सेवा संस्थान के सदस्यों ने पूछा आपका आधार बना है माँ ने कहाँ हां फिर बैंक में खाता है माँ ने कहाँ हां फिर मैंने कहाँ पेंशन मिलती है आपको माँ ने कहाँ बेटा किसी ने अभी तक नही करवाया गया है, जिस पर माँ सेवा संस्थान के अध्यक्ष विनायक पंडित नें अपने घर लेकर आये और कहाँ कि हर महीने जब भी आप इधर आना इस घर से 10 किलो गेहूं या चावल हमेशा लेकर जाना और बैंक पासबुक, आधार भी साथ लेकर आना आपकी पेंशन जल्द ही माँ सेवा संस्थान परिवार के माध्यम से करवा दी जाएगी कहीं भी आपको जाना नहीं पडेगा बुजुर्ग महिला ने कहाँ बेटा तुझे मेरी भी उम्र लगे और हमेशा ऐसी माताओं का आशीर्वाद तुम्हें मिलता रहें ,संस्थान की ओर से की गई मदद् से लोगों नें सराहना की।

आल इंडिया कम्युनिटी हेल्थ वर्कर की हो नियुक्ति : शहादत अली

अखंड भारत संदेश

ऑल इंडिया कम्युनिटी हेल्थ वर्कर की बैठक में शामिल हेल्थ वर्कर।

कोराव। शनिवार को ऑल इण्डिया कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर की बैठक जिला महासचिव राजमणि के नेतृत्व समदायिक स्वास्थ्य केंद्र कोरांव में हुई। बैठक में उपस्थित सभी संगठन के लोगों को निर्देशित किया गया कि सभी व्यक्ति सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अधीक्षक के निर्देश पर जहाँ भी आपकी ड्यूटी लगाई जाए पूरी जिम्मेदारी व ईमानदारी से कार्य करे।

बैठक में उपस्थित आल इण्डिया कम्युनिस्ट हेल्थ वर्कर जिला उपाध्यक्ष शहादत अली ने कहाँ की आल इंडिया कम्युनिस्ट हेल्थ वर्कर के सदस्यों ने बैगैर किसी लोभ लालच के मानव सेवा को ईस्वर सेवा समझते हुए जनमानस का कार्य करते आ रहे है। चाहे कोरोना काल रहा हो या वैक्सीन लगाने का कैम्प आल इंडिया कम्युनिस्ट हेल्थ वर्कर लगातार क्षेत्र में कार्य कर रहे है। सरकार को ऐसे लोगों का ध्यान देना चाहिए। आल इंडिया कम्युनिस्ट हेल्थ वर्कर 1977 से जुड़े है चाहें महामारी का समय रहा हो या सामान्य दिन या फिर कोरोना काल ए हमेशा अपना योगदान देते आए है।2002 में सरकार ने इनको बाहर कर दिया था तब से ऐ लगातार कार्य कर रहे है और न्यायालय से मुकदमा भी जीत चुके है।उपस्थित सभी सदस्यों ने सरकार से नियुक्त की मांग की। वहाँ पर प्रमुख रूप से धीरज श्रीवास्तव जिलासचिव सतेंद्र यादव गुलाब कली चंद्रावती देवी मयंक गौड़ रामचंद्र यादव रविशंकर तिवारी नेहा सिंह व अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

घर में घुसकर चोरों ने पार किये नगदी समेत लाखों का आभूषण

करछना। थाना अंतर्गत देवरी कला गांव में बीती रात अज्ञात चोरों ने पीछे के रास्ते से घर में घुसकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। जानकारी के मुताबिक उक्त गांव निवासी हौसला प्रसाद मिश्रा के यहां शुक्रवार की रात रोजाना की तरह उनका पूरा परिवार खाना-पीना करने के बाद आगे के कमरे में सो गया था।उसी बीच देर रात होने पर अज्ञात चोरों ने पीछे के रास्ते से घर में घुसकर घर से बासख उठा ले गए। वही घर से थोड़ी दूर पर खेत में ले जाकरके उसमें रखा गया 60 हजार नगदी समेत लगभग 3 लाख रुपए तक के सोने चांदी के आभूषण को उठा ले गए। सुबह होने पर शौच करने गए ग्रामीणों को खेत में बासख व बिखरा हुआ सामान देखे जाने पर समूचे गांव में हड़कंप मच गया। वही भुक्तभोगी के द्वारा घटना की जानकारी फोन के माध्यम से डायल 112 व स्थानीय पुलिस को दी गई। सूचना होने पर भीरपुर चौकी इंचार्ज शिवांशु पांडे मौके पर पहुंचे। जहां मामले को लेकर जांच पड़ताल करने में जुटे हैं।

शातिरों ने पार किए चालीस हजार

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के मेवा लाल बगिया तिराहे के समीप स्थित एक एटीएम मशीन में पहुंचे एक छात्र से एक शातिर ने धोखाधड़ी कर एटीएम कार्ड बदलकर चालीस हजार रुपए पार कर दिया। भुक्तभोगी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए नैनी कोतवाली में तहरीर दी है। जानकारी के मुताबिक औद्योगिक क्षेत्र स्थित सण्डवा निवासी देवेंद्र गिरि पुत्र स्वर्गीय नरेंद्र गिरि मध्यप्रदेश के सतना जिले में वन विभाग में दरोगा पद पर तैनात हैं। वह इन दिनों अपने मूल निवास स्थान पर मकान का निर्माण करा रहे हैं। शनिवार को वह अपने पुत्र तुषार गिरि को एटीएम द्वारा पैसे निकालने के लिए भेजे हुए थे। तुषार गिरि नैनी के मेवा लाल की बगिया स्थित एसबीआई बैंक के एटीएम मशीन में पहुंचा और पैसे की निकासी कर रहा था कि उसके पीछे एक शातिर मौजूद था और उसने बड़ी चालाकी के साथ पासवर्ड हासिल कर लिया। साथ ही धोखाधड़ी कर छात्र से उसका एटीएम कार्ड बदल लिया। कुछ ही देर बाद उक्त शातिर ने चार बार में चालीस हजार रुपए पार कर दिया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटित वारदात की जांच पड़ताल की।

करछना में ट्रेन की चपेट में आने से अज्ञात महिला की मौत

करछना। थाना क्षेत्र के अंतर्गत पचदेवरा गांव स्थित दिल्ली हावड़ा रेल रूट मार्ग के बगल शनिवार को एक महिला घायल अवस्था में मिली। जिसेकी जानकारी आसपास के ग्रामीणों को हुई तो लोगों की भारी भीड़ जुट गई। वही उपस्थित कुछ लोगों में फोन के माध्यम से घटना की जानकारी करछना पुलिस को दी। सूचना होने पर पहुंची पुलिस ने उपस्थित लोगों से घायल महिला का पहचान कराने का प्रयास किया लेकिन किसी के द्वारा पहचान नहीं किया जा सका। जिसके बाद पुलिस ने घायल महिला को उपचार के लिए सीएचसी करछना ले गई जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। वही मृतक महिला का शिनाख्त न होने की दशा में पुलिस ने अज्ञात में शव को पोस्टमार्टम भेज दिया।

जीव परमात्मा का अंश है इसलिए जीव के अंदर अपारशक्ति रहती है : हरिप्रपन्नाचार्य महाराज

अखंड भारत संदेश

जंघई। श्रीमद्भागवत कथा जंघई में रामानुजाचार्य हरिप्रपन्नाचार्य महाराज ने रास पंच अध्याय का वर्णन किया उन्होंने कहा कि महारास में पांच अध्याय है। उनमें गाए जाने वाले पंच गीत भागवत के पंच प्राण है। जो भी ठाकुरजी के इन पांच गीतों को भाव से गाता है वह भव पार हो जाता है। उन्हें वृंदावन की भक्ति सहज प्राप्त हो जाती है। कथा में भगवान का मथुरा प्रस्थान, कंस का वध, महर्षि संदीपनी के आश्रम में विद्या ग्रहण करना, कालयवन का वध, उधव गोपी संवाद, ऊधव द्वारा गोपियों को अपना गुरु बनाना, द्वारका की स्थापना के प्रसंग का संगीतमय भावपूर्ण पाठ किया गया। भारी संख्या में भक्तगण कथा के दौरान मौजूद रहे महाराज ने कहा कि महारास में भगवान श्रीकृष्ण ने बांसुरी बजाकर गोपियों का आह्वान किया और महारास लीला द्वारा ही जीवात्मा परमात्मा का ही मिलन हुआ। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने 16 हजार कन्याओं से विवाह कर उनके साथ सुखमय जीवन बिताया।इस मौके पर कथा के मुख्य यजमान रामराज मिश्रा, प्रेमलता मिश्रा, मानस भास्कर अनुज महाराज, आचार्य अंबुज द्विवेदी, मदन गोपाल, संघर्षण, संजय तिवारी, दिनेश शुक्ल, ब्रह्मा तिवारी, नागेंद्र प्रताप सिंह, आनंद सिंह, मधुसूदन पांडेय, विवेक शुक्ल, मनीष पांडेय, अभिषेक शुक्ला, मनोज कुमार मिश्रा, अभिषेक मिश्रा, मयंक मिश्रा, शिवम मिश्रा, दीपक मिश्रा, छोटेलाल सोनी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

कपारी रोड की पटरी पर बिछेगी इंटरलाकिंग

सांसद रीता बहुगुणा जोशी ने लोनिवि को लिखा पत्र

शंकरगढ़। कपारी जोरवट से शंकरगढ़ को जोडने वाली सडक की दोनों पटरी पर इंटरलाकिंग बिछाए जाने के लिए सांसद रीता बहुगुणा जोशी ने लोक निर्माण विभाग को पत्र लिखा है। सांसद ने कहा कि उक्त पटरी काफी क्षतिग्रस्त हो गई है। जिससे आए दिन हादसे हो रहे हैं। इसे तत्काल संज्ञान में लेते हुए अग्रिम कार्यवाही की जाए।नगर पंचायत शंकरगढ़ की नामित सभासद सुधा गुप्ता ने बताया कि उक्त मार्ग का निर्माण 22 लाख रुपये की लागत से करवाया गया है। मार्ग के चौड़ीकरण के उपरांत दोनों तरफ की पटरी काफी गहरी हो गई है। जगह-जगह गड्ढे हो गए हैं। इसके लिए सांसद रीता बहुगुणा जोशी से गुजारिश की गई। बताया कि सांसद रीता जोशी ने उक्त मामले को गंभीरता से लेते हुए मार्ग के दोनों तरफ इंटरलाकिंग बिछवाए जाने के लिए लोक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता को लिखा है।

पिता ने बेटे पर दर्ज कराया मुकदमा

बेटी को खुदकुशी के लिए मजबूर किया था बेटा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बेटी के खुदखुशी के लिए उकसाने एवं शव को दफनाने का आरोप लगाते हुए पिता ने फरार बेटे के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराया है। पुलिस रिपोर्ट दर्ज करते हुए फरार आरोपी की तलाश में जुट गई है। जबकि मां-बेटी के शव मिलने के बाद से ही वह घर छोड़कर फरार है। घटना मऊआइमा के किरांव मजरा चौहान का पुरा गांव का है।किरांव चौहान का पुरा निवासी नरेंद्र सिंह ने आरोप लगाया है कि उसकी 16 वर्षीय बेटी नंदनी सिंह को उसके ही बेटे सरदार सिंह द्वारा घरेलू अनबन को लेकर कहासुनी हो गई थी। जिसके बाद भाई की बातों से वह आहत आकर घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर खुदखुशी कर ली। बेटी के खुदकुशी करने की खबर से मां सुशीला देवी भी गहरपुर सोरांव में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मां-बेटी के खुदखुशी करने के बाद से ही उसका पुत्र सरदार घर छोड़कर फरार हो गया है। जिसको लेकर सरदार पर संदेह हो गया। वहीं शुक्रवार को घटना मामले में मृतका नंदनी सिंह के पिता नरेंद्र सिंह ने पुलिस थाने में बेटी को खुदखुशी के लिए उकसाने का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज कराया है। जिसकी तलाश में पुलिस जुट गई है।

कोराव के कोइलरिहा गांव में बाइक चोरी

कोरांव। थाना पुलिस कोराव के ग्राम कोइलरिहा खजुरी ग्राम निवासी मुस्ताक अली की बाइक हमेशा की तरह घर के दरवाजे पर सेड के नीचे खड़ी की थी। रात में चोर बाइक को चुरा ले गए। उसकी प्रथिमिकी कोरांव थाने में दी गई। समाचार लिखे जाने तक बाइक की बरामदगी नहीं हो सकी थी।

खबर संक्षेप

दूसरे की जगह पर परीक्षा देते सॉल्वर गिरफ्तार

प्रयागराज। धूमनगंज में एक बार फिर एसएससी परीक्षा के दौरान सॉल्वर पकड़ा गया। स्टेनोग्राफर परीक्षा के दौरान एक युवक दूसरे की जगह परीक्षा देते मिला जिस पर उसे पुलिस को सौंप दिया गया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह अपने दोस्त की जगह पर परीक्षा दे रहा था। पुलिस ने बताया कि केंद्र प्रबंधन की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। 12 नवंबर को एसएससी स्टेनोग्राफर परीक्षा आयोजित थी जिसके लिए सुलेमसराय स्थित मधु वाचस्पति इंटर कॉलेज को भी केंद्र बनाया गया था। परीक्षा के दौरान शक होने पर स्कूल प्रबंधक अनिल कुमार द्विवेदी ने जांच पड़ताल की तो एक युवक दूसरे की जगह परीक्षा देते पकड़ा गया। उसने खुद को मो. हसन निवासी सोरांव बताया। जिसके बाद उसे पुलिस को सौंप दिया गया। पुलिस ने सख्ती से पूछताछ की तो आरोपी ने सच्चाई बयां कर दी।बताया कि उसका नाम हसन यादव निवासी संदलपुर, पटना बिहार है। वह अपने दोस्त मो. निजाम निवासी उतरामपुर सोरांव की जगह पर परीक्षा देने आया था। पुलिस का कहना है कि उसके कब्जे से जाली पैन कार्ड, जाली वोटर आईडी कार्ड बरामद हुआ है। यह निजाम केमूल दस्तावेजों में छेड़छाड़ कर बनाए गए थे। पुलिस ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

सीडीआर व वॉइस क्लिप से खुल सकता है महंत के मौत का राज

जिन दो करीबियों के लेने हैं वॉइस क्लिप वह महंत व आनंद गिरि के भी हैं करीबी, सीबीआई को 5 लोगों की वॉइस क्लिप लेने की मिली है अनुमति

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अखाड़ा परिषद के पूर्व अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि की मौत के मामले में नामजद तीन आरोपियों के अलावा दो अन्य लोगों का भी वॉइस सैंपल लिया जाएगा। नामजद आरोपियों के अलावा यह दोनों भी सीबीआई के रडार पर हैं और सीबीआई को जिन पांच लोगों के वॉइस सैंपल लेने की अनुमति कोर्ट से मिली है, उनमें इनका भी नाम शामिल है। सीबीआई जल्द ही इनका भी वॉइस सैंपल एकत्र करेगी।

नामजद आरोपियों के अलावा जिन दो लोगों का वॉइस सैंपल लिया जाना है, वह महंत के साथ-साथ आनंद गिरि के भी करीबी हैं। उनकी सीडीआर से पता चला है कि वह महंत के साथ-साथ आनंद गिरि के भी लगातार संपर्क में थे। आनंद गिरि के साथ उनकी बातचीत के भी कुछ ऑडियो क्लिप सीबीआई के हाथ लगे हैं। माना जा रहा है कि यह ऑडियो क्लिप महंत की मौत की गुत्थी सुलझाने में बेहद अहम सबूत साबित हो सकती हैं। यही वजह है कि ऑडियो में जिन भी लोगों के बीच बातचीत है, उन सभी के वॉइस सैंपल लेने की अनुमति सीबीआई ने कोर्ट से अनुमति ली है।

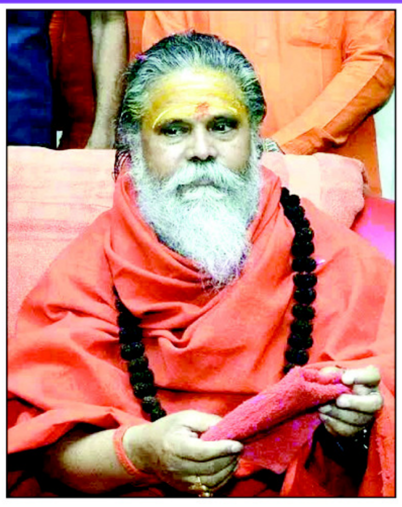

सीबीआई के पास 45 दिनों का है और वक्त

सूत्रों का कहना है कि मामले में किसी नतीजे तक पहुंचने के लिए सीबीआई के पास डेढ़ महीने का वक्त और है। दरअसल सात साल से ज्यादा की सजा वाले मामलों में जांच एजेंसी को 90 दिन के भीतर चार्जशीट न्यायालय में प्रेषित करनी होती है। महंत की मौत को 44 दिन बीत चुके हैं। इस तरह 19 दिसंबर तक मामले की जांच पूरी हो जानी चाहिए।

सीबीआई के पास 45 दिनों का है और वक्त

सूत्रों का कहना है कि मामले में किसी नतीजे तक पहुंचने के लिए सीबीआई के पास डेढ़ महीने का वक्त और है। दरअसल सात साल से ज्यादा की सजा वाले मामलों में जांच एजेंसी को 90 दिन के भीतर चार्जशीट न्यायालय में प्रेषित करनी होती है। महंत की मौत को 44 दिन बीत चुके हैं। इस तरह 19 दिसंबर तक मामले की जांच पूरी हो जानी चाहिए।

न्यूज झरोखा

भाजपा भगाओ महंगाई हटाओ के नारे के साथ प्रतिज्ञा यात्रा आज से : संजय तिवारी

जंघई। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिन 14 नवंबर से 24 नवंबर तक 403 विधानसभा में भाजपा भगाओ महंगाई हटाओ प्रतिज्ञा पदयात्रा निकालेगी।जिसमें प्रत्येक दिन न्यूनतम 10 किमी की पदयात्रा 7 ग्राम सभाओं/वार्डो से होकर गुजरेगी जिसमें मंहगाई पर ग्रामीणों के साथ बैठक करके प्रतिज्ञा पत्र वितरित किया जाएगा।पदयात्रा के रुट पर स्थानीय हाट बाजार में शाम को नुक्कड़ सभा भी होगी।प्रतापपुर विधानसभा में कांग्रेस प्रदेश सचिव एवं पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय संजय तिवारी के नेतृत्व में प्रतिज्ञा यात्रा नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए सुबह 11 बजे से स्वर्गीय राजितराम पांडेय पूर्व विधायक के गांव सेवना से यात्रा प्रारंभ होगी जो कि ग्रामसभा रिठुवां, चकिया, पूरेडीह, किशुनपुर, बरियांवा, मिसिरपुर, चंपापुर महुआपुर होते हुए नुक्कड़ सभा सायं 5 बजे चौका मोड़ जंघई पर आयोजित होगी।15 नवंबर को ग्राम सभा चकिया, जलालपुर, पतईयां नेदुला, बरीयारामपुर, रस्तीपुर, लोढ़ीडीह, खानपुर डांडी होते हुए देवीपुर उग्रसेनपुर में मीटिंग नुक्कड़ सभा शाम बजे होकर समाप्त होगी।

रुद्र प्रताप सिंह बने भाजपा किसान मोर्चा के सदस्यता प्रमुख

प्रतापपुर। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा गंगापार के जिलामंत्री रुद्र प्रताप सिंह को किसान मोर्चा से गंगापार का सदस्य प्रभारी बनाया गया है।शुक्रवार को किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष लक्ष्मीकांत उपाध्याय ने देर शाम उनके नाम की घोषणा किया।रुद्र प्रताप सिंह ने जिलाध्यक्ष व शीर्ष नेतृत्व का आभार जताते हुए कहा कि गंगापार में ज्यादा से ज्यादा लोगो को भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता दिलाने का कार्य करूँगा।वरुणा मंडल अध्यक्ष समरजीत मौर्या, फूलपुर मंडल अध्यक्ष समरजीत मौर्या, वरुणा मंडल के मीडिया प्रभारी धीरज मिश्रा, वरुणा पिछड़ा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष अनुज साहू, मयंक मिश्रा, शनि पटेल, इसरार अहमद, सूरज जायसवाल, सत्या जायसवाल, हिमांशू तिवारी सहित तमाम लोगो ने सदस्यता प्रभारी बनाये जाने पर बधाई दिया।

असिस्टेंट प्रोफेसर के पांच मददगार शिक्षकों पर भी लटकी तलवार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज निवासी दुष्कर्म पीड़िता के मामले में आरोपी असिस्टेंट प्रोफेसर मदन यादव के पांच मददगार प्रोफेसरों पर भी तलवार लटक रही है। पीड़िता ने पुलिस को दिए बयान में उन पर जान से मारने की धमकी देने, मारपीट समेत अन्य आरोप लगाते हुए पुलिस को बयान दिया है। फिलहाल मामले की विवेचना चल रही है। उधर इंस्पेक्टर-दरोगा समेत तीन पर दर्ज मुकदमे की जांच भी शुरू कर दी गई है। कर्नलगंज निवासी दुष्कर्म पीड़िता ने मदन यादव व चार अज्ञात पर इसी साल 29 सितंबर को मारपीट, धमकी देने समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कराया था। सुनवाई न होने पर उसने कोर्ट में गुहार लगाई थी और कोर्ट के आदेश पर ही यह केस दर्ज किया गया था। इसमें पीड़िता ने आरोप लगाया है कि वह प्रयागराज स्टेशन जा रही थी तभी सीएमपी गेट पर रोककर मदन यादव व उसके तीन-चार साथी उसे जबरन कॉलेज के भीतर घसीट ले गए और मीटिंग हाल में बंद कर अभद्रता करते हुए पूर्व में दर्ज मुकदमे में गवाही देने पर जान से मारने की धमकी दी।वहां से जार्जटाउन थाने जाते वक्त 100 मीटर पहले ही रोककर जान से मारने की नीयत से नाले में फेंक दिया। साथ ही ईंट-पत्थर से वार किए। सूत्रों का कहना है कि पीड़िता का आरोप है कि उसे धमकाने, मारपीट आदि में पांच अन्य प्रोफेसरों ने मदन की मदद की और उसने उनका नाम अपने बयान में पुलिस को बताया है। ऐसे में उन प्रोफेसरों पर भी कार्रवाई की तलवार लटक रही है। पुलिस फिलहाल इस मामले में ज्यादा कुछ बताने को तैयार नहीं है। अफसरों का सिर्फ इतना ही कहना है कि विवेचना चल रही है। जो भी तथ्य सामने आएंगे उसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

स्पेक्टर - दरोगा समेत 3 पर दर्ज हो चुका है मुकदमा

पीड़िता को घटनास्थल पर बुलाकर की पूछताछ

इस मामले में जांच पड़ताल करने शुक्रवार को एक बार फिर पुलिस सीएमपी डिग्री कॉलेज स्थित घटनास्थल पर पहुंची। इस दौरान पीड़िता को भी बुलाया गया। उससे घटना के बाबत पूछताछ की गई। साथ ही कॉलेज स्टाफ से भी घटना के बाबत जानकारी ली गई। हालांकि पीड़िता का आरोप है कि उस पर लगातार मुकदमे में सुलह करने का दबाव बनाया जा रहा है। जिससे वह और उसके परिवारवाले बेहद परेशान हैं। उधर दुष्कर्म केस के गवाह को फर्जी तरीकेसे जेल भेजने के मामले में इंस्पेक्टर-दरोगा समेत तीन पर दर्ज मामले की जांच भी शुरू हो गई है। मामले के विवेचक सीओ कर्नलगंज अजीत सिंह चौहान ने मुकदमे से संबंधित साक्ष्य संकलन शुरू कर दिया है। शुक्रवार को इस मामले में दो पुलिसकर्मियों का बयान भी दर्ज किया गया। सूत्रों का कहना है कि इस मामले में गवाह की फर्जी तरीके से गिरफ्तारी में शामिल सभी पुलिसकर्मियों का बयान दर्ज किया जाएगा। साथ ही कर्नलगंज व फूलपुर थाने के पुलिसकर्मियों का बयान भी लिया जाएगा।

लुटेरों को जेल भेजने के बाद दर्ज कराई एफआईआर

प्रयागराज। मम्फोर्डगंज में अधिवक्ता से तीन लाख रुपये लूटने वाले लुटेरों ने सिविल लाइंस में भी डेढ़ लाख रुपये उड़ा दिए थे। उनके जेल जाने के बाद अब सिविल लाइंस पुलिस ने डेढ़ लाख रुपये गायब करने की एफआईआर दर्ज की है। कल्याणपुर, कानपुर निवासी नितेश तिवारी प्रयागराज में एक ठेकेदार के यहां काम करता है।

उसने सिविल लाइंस थाने में एफआईआर दर्ज कराई है कि उसने एक नवंबर को अपनी बाइक पत्रिका चौराहे पर खड़ी की थी। इस दौरान बाइक की डिक्की तोड़कर किसी ने डेढ़ लाख रुपये उड़ा दिया। घटना स्थल के पास लगे सीसीटीवी कैमरे में टप्पेबाज नजर आए। उनका हुलिया मम्फोर्डगंज लूट में पकड़े गए आरोपियों की तरह से है। पुलिस ने बताया कि आरोपी जेल जा चुके हैं।

अध्यापकों से चुनाव ड्यूटी लेना गलत नहीं : हाईकोर्ट

अखंड भारत संदेश

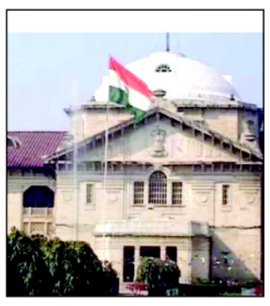

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट के दो जजों की खंडपीठ ने अपनी कोर्ट के एकल जज के उस आदेश को सही ठहराया है, जिसमें शिक्षकों की ड्यूटी चुनाव के काम में लगाने को जायज ठहराया गया था। एकल जज के आदेश के खिलाफ दो जजों की खंडपीठ में विशेष अपील दाखिल कर चुनौती दी गई थी। कहा गया था कि एकल जज ने चुनाव ड्यूटी में प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों को लगाने के बेसिक शिक्षा अधिकारी कौशाम्बी के आदेश को सही ठहराया है, जो गलत है।यह आदेश न्यायमूर्ति एम एन भंडारी व न्यायमूर्ति पीयूष अग्रवाल की खंडपीठ ने कौशाम्बी के बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राइमरी स्कूल के टीचर, शिव सिंह, दरियाव का पुरा, नेवादा, जिला कौशाम्बी की विशेष अपील को निस्तारित करते हुए दिया है। याची का कहना था कि वह प्राइमरी स्कूल में टीचर है। उसे व उसके साथ के अन्य टीचरों को बीएलओ के रूप में चुनाव ड्यूटी पर लगाया जा रहा है, जो गलत है। कहा गया था कि कि टीचरों का काम पढ़ाने का है, चुनाव ड्यूटी करने का नहीं। टीचरों से शिक्षण के अलावा अन्य काम लेने से छात्रों की पढ़ाई प्रभावित होगी।हाईकोर्ट के एकल जज ने अपने पारित विस्तृत आदेश में कहा था कि शिक्षकों को चुनाव ड्यूटी में लगाया जा सकता है। इस प्रकार से शिक्षकों को चुनाव ड्यूटी पर लगाया जाना गैरकानूनी नहीं है। कोर्ट ने कहा कि उत्तर प्रदेश निशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार नियमावली-2011 की धारा 27 शिक्षकों की चुनाव ड्यूटी लगाने की अनुमति देती है। कोर्ट ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने भी इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया बनाम सेंट मैरी स्कूल केस में यह फैसला दे रखा है कि शिक्षकों को चुनाव ड्यूटी में लगाया जा सकता है। एकल जज ने याची की याचिका खारिज कर दी थी। विशेष अपील बेंच ने भी एकल जज के आदेश में किसी भी प्रकार हस्तक्षेप से इनकार कर दिया और अपील निस्तारित कर दी।

प्रेमी की हत्या की आरोपी महिला की सशर्त जमानत मंजूर

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पुत्री से प्रेम संबंध के चलते प्रेमी की हत्या की आरोपी गाजियाबाद, साहिबाबाद की सुलेखा की सशर्त जमानत मंजूर कर ली है। यह आदेश न्यायमूर्ति राजीव जोशी ने दिया है। अर्जी पर अधिवक्ता दिलीप कुमार पांडेय ने बहस की। इनका कहना था कि मृतक अपने कमरे से याची के घर जाते हुए देखा गया और लौटा नहीं। उसकी लाश सह अभियुक्त मुन्ना उर्फ हरिओम के घर के बेसमेंट से बरामद हुई। अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई। पंचनामा के समय याची, उसके पति मुन्ना उर्फ हरिओम व पुत्री अंकिता का नाम दिया गया। पुलिस ने चार्जशीट दाखिल कर दी है। याची चार नवंबर 2019 से जेल में बंद हैं। महिला हैं।उ सके खिलाफ हत्या में शामिल होने का कोई साक्ष्य नहीं है। गवाह व सीसीटीवी फुटेज में मृतक अपने कमरे से याची के घर जाते हुए देखा गया है। हत्या याची ने की है, इसका कोई सबूत नहीं है। उसका कोई आपराधिक इतिहास नहीं है। सह अभियुक्त पर आरोप है।कोर्ट ने दाताराम केस के दिशा-निर्देशों के आधार पर कहा कि याची जमानत पर रिहा होने की हकदार हैं।

पत्नी की धमकी से डरे पति ने दर्ज कराया मुकदमा

प्रयागराज। पत्नी की धमकी से डरे एक युवक ने पुलिस से मदद की गुहार लगाई है।खौफजदा युवक ने पत्नी और उसके प्रेमी के खिलाफ धमकाने की एफआईआर दर्ज करा दी है। आरोप लगाया है कि उसको फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश रची जा रही है। रेलवे कॉलोनी निवासी युवक ने सिविल लाइंस थाने में एफआईआर दर्ज कराई है कि उसकी शादी वाराणसी की युवती से 2020 में हुई थी। शादी के बाद उसे पता चला कि वह अपने प्रेमी से कोर्ट मैरिज कर चुकी थी लेकिन परिजनों के दबाव में दूसरी शादी कर ली। शादी के बाद भी वह अपने प्रेमी से फोन पर चैट करती रही। विरोध करने पर विवाद बढ़ गया। उसके ससुरालवालों ने भी धमकाया। अब उसकी पत्नी और उसका प्रेमी फोन करके उसकी हत्या की धमकी दे रहे है। पीड़ित ने धमकी भरे कॉल की रिकार्डिंग भी पुलिस को मुहैया कराई है। सिविल लाइंस पुलिस मामले की जांच कर रही है।

भेद भाव विहीन विकास भाजपा सरकार की प्राथमिकता : केशव प्रसाद मौर्या

अखंड भारत संदेश

हंडिया। सब का साथ सब का विकास के मंसूबे से प्रदेश को मजबूती प्रदान करना भाजपा सरकार से ही संभव है। भेद भाव विहीन विकास भाजपा सरकार की प्राथमिकता है। उक्त बातें हड़िया कस्बा में स्थित पी जी कालेज सभागार में विधानसभा हंड़िया एवं प्रतापपुर के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं के सम्मेलन में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहीं। उन्होंने कहा कि उपलब्धियों के चलते ही प्रंचड बहुमत से भाजपा दोबारा सरकार बनाएगी। कहा कि सपा, बसपा और कांग्रेस सव समाज के हित व उपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर सकी है। कहा कि योजनाओं का लाभ जरूरत मंदो तक पहुंचाना केवल भाजपा सरकार में ही संभव है। राष्ट्रीय सुरक्षा और ईमानदारी के साथ भ्रष्टाचार मुक्त विकास कार्य को सरकार ने बढ़ावा दिया है। कार्यकताओं की सक्रियता का आवहन करते हुए कहा कि विकास और गरीबी मुक्त प्रदेश की स्थापना के लिए भाजपा सरकार ही आवश्यक है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ बी के सिंह, सांसद रमेश बिंद, डा पंकज त्रिपाठी, डीसीएफ चेयरमैन प्रेम कुमार सिंह लल्ले, भाजपा गंगापार अध्यक्ष अश्वनी द्विवेदी,सैफुल अब्बास, जवाहर जयसवाल, धवल तिवारी ने सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए जोर दिया। इस मौके पर न ज्ञानेनद्र सिंह, अवधेश तिवारी, सरोज श्रीवास्तव, कमलभान सिंह, संतोष मणि त्रिपाठी, राजेन्द्र पांडेय,विनय पांडेय,मदन लाल बिंदी,प्रमोद त्रिपाठी बुलबुल,अजय पांडेय समेत कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे। संचालन संतोष शुक्ला ने किया।

हण्डिया पी जी कालेज सभागार में पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को सम्बोधित करते डिप्टी सीएम।

कार्यालय ग्राम पंचायत अर्का फतेहपुर विकास खण्ड कौशाम्बी जनपद कौशाम्बी

निविदा सूचना

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कौशांबी विकासखंड के अर्का फतेहपुर ग्राम पंचायत में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायत अर्का फतेहपुर में संदीप पांडेय के घर से श्याम बाबू के घर तक इंटरलॉकिंग का कार्य कराया जाना प्रस्तावित है जिसकी अनुमानित लागत 3 लाख 86 हजार 995 रुपए प्रस्तावित है। उक्त कार्यों के लिए पंजीकृत फर्मो से टेंडर आमंत्रित किये जाते है 15 नवम्बर 2021 से 22 नवम्बर 2021 तक टेंडर फार्म ग्राम पंचायत में जमा किए जाएंगे और 23 नवम्बर 2021 को 12 बजे दिन में ग्राम पंचायत भवन में टेंडर खोला जाएगा।

अभिमन्यु विश्वकर्मा
ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत अर्का फतेहपुर कौशाम्बी

अजय सिंह
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत अर्का फतेहपुर कौशाम्बी

सन्तोष कुमार
तकनीकी सहायक मनरेगा ग्राम पंचायत अर्का फतेहपुर कौशाम्बी

कार्यालय ग्राम पंचायत गोपसहसा विकास खण्ड कौशाम्बी जनपद कौशाम्बी

निविदा सूचना

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कौशांबी विकासखंड के गोपसहसा ग्राम पंचायत में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायत गोपसहसा में सामुदायिक भवन के पास से नारायण देव के घर के पास तक इंटरलॉकिंग का कार्य कराया जाना प्रस्तावित है जिसकी अनुमानित लागत 3 लाख 99 हजार 656 रुपए प्रस्तावित है। इसी ग्राम पंचायत गोपसहसा में पक्की सड़क से जूनियर विद्यालय तक इंटरलॉकिंग कार्य कराया जाना प्रस्तावित है इस कार्य की अनुमानित लागत 3 लाख 98 हजार 852 रुपए प्रस्तावित है। उक्त कार्यों के लिए पंजीकृत फर्मो से टेंडर आमंत्रित किये जाते है 15 नवम्बर 2021 से 22 नवम्बर 2021 तक टेंडर फार्म ग्राम पंचायत में जमा किए जाएंगे और 23 नवम्बर 2021 को 11 बजे दिन में ग्राम पंचायत भवन में टेंडर खोला जाएगा।

तेरसी देवी
ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत गोपसहसा कौशाम्बी

सत्य प्रकाश पाण्डेय
ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत गोपसहसा कौशाम्बी

सूर्य प्रकाश सिंह
तकनीकी सहायक मनरेगा ग्राम पंचायत गोपसहसा कौशाम्बी

20 माह बाद आज से शुरू होगी काशी-महाकाल एक्सप्रेस

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। देश की तीसरी कार्पोरेट ट्रेन काशी महाकाल एक्सप्रेस का संचालन करीब 20 माह बाद 14 नवंबर से शुरू हो जाएगा। तीन ज्योतिलिंगों को जोड़ने वाली इस ट्रेन का संचालन कोरोना और उसके बाद लॉडाउन के चलते बंद कर दिया गया था। गत दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए ट्रेन को हरी झंडी दिखाई थी।

एनसीआर के सीपीआरओ डॉ. शिवम शर्मा के मुताबिक वाराणसी से इंदौर और इंदौर से वाराणसी तक इस ट्रेन की केवल दो ट्रिप आयोजित की जाएंगी। वाराणसी से गाड़ी संख्या 82403 रविवार 14 नवंबर की दोपहर 3.15 बजे चलकर शाम 5.30-5.35 बजे प्रयागराज जंक्शन एवं अगले दिन सुबह 7.05 बजे उज्जैन और 9.05 बजे इंदौर पहुंच जाएगी। वापसी में गाड़ी संख्या 82484 इंदौर से 15 नवंबर की सुबह 10.15 बजे चलकर रात 1.25-1.30 बजे प्रयागराज जंक्शन पहुंच जाएगी। तीन ज्योतिलिंगों को जोड़ती है काशी महाकाल 12 कोच की काशी महाकाल सुपरफास्ट, वातानुकूलित ट्रेन है, जिसमें दस कोच एसी थ्री एवं दो एसएलआर के कोच रहेंगे। यह ट्रेन तीन ज्योतिलिंगों- ओंकारेश्वर (इंदौर के पास), महाकालेश्वर (उज्जैन) और काशी विश्वनाथ (वाराणसी) को जोड़ती है।

किसानों से एडीओ पंचायत के पांव पकड़ने के आरोप पर जिला प्रशासन ने बैठाई जांच

प्रयागराज ' मऊआइमा में प्रदर्शन कर रहे किसानों से एडीओ पंचायत के पांव पकड़ने के आरोप पर जिला प्रशासन ने मामले की जांच बैठा दी है। डीडीओ अशोक कुमार मौर्य को जांच अधिकारी बनाया गया है। जल्द से जल्द रिपोर्ट देने के लिए कहा है। इस प्रकरण व किसानों की दूसरी समस्याओं पर सपा के जिलाध्यक्ष योगेश चंद्र यादव ने शुक्रवार को जिला प्रशासन को ज्ञाप सौंपा। जिलाध्यक्ष की ओर से दिए गए ज्ञापन में किसानों को खाद व बीज तत्काल उपलब्ध कराने, इसका सत्यापन कराने, सत्यापन के नाम पर शोषण बंद करने, धान में नमी का बहाना बनाकर धान वापस करने और फूलपुर में किसानों पर लाठी चार्ज के आरोपित पुलिस वालों पर कार्रवाई की मांग उठाई गई। इसके साथ ही जिला मुख्यालय में जमा सपा कार्यकताओं ने मऊआइमा प्रकरण पर जिला प्रशासन को घेरा। सपा कार्यकताओं ने तत्काल एडीओ पंचायत पर कार्रवाई की मांग डीएम के सामने रखी। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच अधिकारी डीडीओ को बनाया गया है। उनसे तत्काल रिपोर्ट देने के लिए कहा गया है।

बाल दिवस पर बच्चों ने मनाया चाचा नेहरु का जन्मदिन

आनंदवन इंटर कालेज में हुआ आयोजन

आनंदनवन इंटर कालेज में आयोजित बाल मेले का लुत्फ उठाते बच्चे

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर क्षेत्र के शुकुलपुर स्थित आनंदवन इंटर कॉलेज में विद्यालय के बच्चों द्वारा बाल मेले का आयोजन कर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिन बाल दिवस के रूप में मनाया। बाल दिवस पर आयोजित बाल मेला में विद्यालय के बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यंजन के स्टाल लगाए गए जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य राघवेंद्र नाथ शुक्ल ने बच्चों द्वारा लगाए गए स्टालों पर पहुंचकर खरीददारी करते हुए बच्चों को बाल दिवस के महत्व को बताते हुए कहा कि बच्चों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है,बस आवश्यकता है सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें। बाल-मेला बच्चों के द्वारा बच्चों के लिए लगाया गया एक ऐसा मंच है जिससे बच्चों के जीवन में व्यावहारिक गुणों के साथ व्यावसायिक गुणों का विकास भी होता है। बाल मेले में लगाए गए स्टालो पर बच्चों में जहां फुल्की खाने के लिए खरीदारी करने की भीड जमा रही वही मेले में लगाए बच्चों के विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को विद्यालय के शिक्षक -शिक्षकाये व अभिभावकों ने खरीददारी कर बच्चों के हौसले को अफजाई किया। इस मौके पर बच्चों ने बाल मेले का भरपूर आनंद उठाया। बाल मेला के दौरान विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं में प्रदीप शुक्ल, साधना, गरिमा, सरिता गुप्ता समृद्धि शुक्ला, अंशिका, रिचा माहेश्वरी, दिव्या सहित सभी अध्यापकों ने सहयोग किया।

प्रभात एकेडमी में लगे स्टाल, बच्चों ने मनाया जश्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर क्षेत्र के अष्ट भुजा नगर स्थित प्रभात एकेडमी में बाल दिवस के अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा बाल मेले का आयोजन किया गया। उक्त बाल मेले का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक डॉ. प्रभात शर्मा ने बच्चों द्वारा बनाए गए विभिन्न व्यंजनों की खरीददारी करते हुए किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की याद में 14 नवम्बर के दिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि पंडित नेहरू बच्चों से बेहद प्यार करते थे और बच्चे उन्हें प्यार से चाचा नेहरू कहकर बुलाते थे। विद्यालय परिसर के अंदर बच्चों द्वारा फुल्की, रसगुल्ला, समोसा,मैक्रोनी,भेल पुड़ी, कैंडल गेम, चाऊमीन, काफी,वाटर गेम सहित विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के स्टाल लगाए गए जहां पर विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ ही बच्चों के अभिभावक भी भागीदारी निभाते हुए बच्चों को प्रोत्साहित कर खरीददारी की। बाल मेले में बच्चों ने खूब आनंद लिया। इस मौके पर पूजा सिंह, अर्पणा भारती, अंजू, जया,सारा, अंकिता,किरन, पूनम, रुचिता, अमरजीत, संतोष, हरकेश, रितेश,यू एस मिश्रा,रवि प्रताप, मुन्ना, अमरेंद्र सहित आदि शामिल रहे।

प्रभात एकेडमी में लगे स्टाल में पानी पूड़ी खाते बच्चे

इंदिरा भवन पर आयोजित बैठक में बोलते जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी

प्रतिज्ञा पद यात्रा को लेकर कांग्रेस की बैठक सम्पन्न

14 नवम्बर को निकलेगी मंहगाई हटाओ प्रतिज्ञा पदयात्रा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार 14 से 24 नवंबर 2021 तक मंहगाई हटाओ प्रतिज्ञा पदयात्रा को सम्पन्न करने हेतु तैयारी बैठक जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय इंदिरा भवन पर जिलाध्यक्ष डॉ0लालजी त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में उ0प्र0कांग्रेस के महासचिव मुकुंद तिवारी तथा विशिष्ठ अतिथि के रूप में उ0प्र0कांग्रेस कमेटी के सचिव व प्रतापगढ़ प्रभारी रंजीत सिंह सलूजा मौजूद रहे। बैठक में जनपद के समस्त ब्लॉक अध्यक्षों व सभी संभावित उम्मीदवारों की राय से सभी विधान सभाओं में पदयात्रा का रूट निर्धारित किया जा रहा है। यात्रा के कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए प्रदेश महासचिव मुकुंद तिवारी ने कहा कि सभी साथी पदयात्रा के रास्ते मे आ रहे गांवों के प्रत्येक घरों में प्रियंका की सातों प्रतिज्ञाओं से संबंधित परिपत्र पहुंचाने का काम करें। बैठक का सफल संचालन उपाध्यक्ष (प्रशासन) डा0 वी0के0सिंह ने किया। बैठक में प्रमुख रूप से डा0वी0के0सिंह, वेदान्त तिवारी, नरसिंह प्रकाश मिश्र, डॉ0नीरज तिवारी, बृजेन्द्र मिश्र, रोहित शुक्ल, बीना रानी, दिलीप गौतम, करुण पांडेय, शिव शंकर भुर्जी आदि लोग मौजूद रहे।

बच्चों ने रैली निकाल कर दिया जागरूक होने का संदेश

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रतापगढ़ के अध्यक्ष और जनपद न्यायाधीश संजय शंकर पांडेय और सचिव नीरज कुमार त्रिपाठी के निर्देश पर चाइल्ड हेल्प लाइन की तरफ से पट्टी नगर स्थित गुडविल पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने जागरूकता रैली निकालकर बच्चों के प्रति होने वाले अपराध और आजादी की अमृत महोत्सव के तहत विधिक जानकारी पट्टी कोतवाली पहुंचकर हासिल किया। पट्टी कोतवाली में छात्र-छात्राओं थाने में एफ आई आर कराने की प्रक्रिया भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता के तहत प्रावधानों के बारे में जाना और समझा सब इंस्पेक्टर मनोज कुमार ने बच्चों को और मौजूद लोगों को इसके संबंध में जानकारी प्रदान किया। पीएलवी शमीम अंसारी ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 39 (क)में सभी नागरिकों को निशुल्क विधिक सेवा प्रदान करने का प्रावधान किया गया है वही बच्चों को भी अपने हक और अधिकार के संबंध में जानकारी प्राप्त करना और जागरूक रहना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने की स्थिति में गिरफ्तारी की सूचना देना अनिवार्य है। गैर जमानती प्रकृति के आरोप में 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के समक्ष आरोपी को प्रस्तुत करना अनिवार्य है। चाइल्ड हेल्पलाइन के सेंटर कोऑर्डिनेटर हकीम अंसारी ने बताया कि किसी भी व्यक्ति की गिरफ्तारी करने से पूर्व निशुल्क विधिक सलाह जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में उपलब्ध पैनल से प्राप्त किया जा सकता है। इस अवसर पर मुख्य रूप से गुडविल पब्लिक स्कूल के प्रबंधक स्वतंत्र कुमार प्रधानाचार्य मनीष कुमार बृजलाल शकुंतला कलावती मुजम्मिल हुसैन राकेश गिरी सहित कई लोग मौजूद रहे।

टिकट के दावदारों ने समाजवादी पार्टी की हुई किरकिरी

पूर्व मंत्री शिवाकांत ओझा सहित 53 के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज, पूर्व विधायक का रिवाल्वर जब्त

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रानीगंज विधान सभा सीट पर समाजवादी पार्टी के टिकट के दावेदारों ने सपा के पूर्व मंत्री आर0के0 चौधरी की सभा में बवाल कर समाजवादी पार्टी की ही किरकिरी कराई है। सपा के टिकट के दावेदारों की टीका-टिप्पणी से ही बवाल शुरू हुआ और मारपीट और असलहों के प्रदर्शन के बाद एक पक्ष द्वारा पुलिस में पूर्व मंत्री प्रो0 शिवाकांत ओझा, उनके पुत्र पूर्व ब्लाक प्रमुख पूर्णाशु ओझा सहित 53 लोगों के विरुद्ध जहां मारपीट की रिपोर्ट दर्ज कराई है, वहीं दूसरे पक्ष के एक पूर्व विधायक के बेटे द्वारा अपने पिता का लाइसेंसी रिवाल्वर लहराने पर रिवाल्वर जब्त कर ली है। इस बारे में सपा के पदाधिकारी चुप्पी साधे हुए हैं। इस तरह पूर्व मंत्री आरके चौधरी के रानीगंज क्षेत्र के मिजापुंर चौराही की सभा बवाल की भेंट चढ़ गई। बता दें कि शुक्रवार को रानीगंज क्षेत्र के मिजापुंर चौराही में पूर्व मंत्री आरके चौधरी की सभा का आयोजन भव्य ढंग से किया गया था। मंच पर पूर्व मंत्री आरके चौधरी व शिवाकांत ओझा अगल-बगल बैठे थे तभी वक्ताओं ने टीका टिप्पणी कर सभा में जहर घोलना शुरू किया। मामला उग्र हुआ तो माइक छीनकर वक्ताओं को धकेला गया। पूर्व विधायक, उनके बेटे सपा के दावेदार प्रत्याशी के साथ धक्का मुक्की हुई तो एक पूर्व विधायक अपने पिता की रिवाल्वर लेकर लहराने लगे। इसकी सूचना पर क्षेत्राधिकारी रानीगंज ने पहुंचकर लहराई गई रिवाल्वर को जब्त कर लिया और मंच से भीड़ को हटाया। इसके बाद असंतुष्ट गुट वहां से चला गया और रानीगंज थाने जाकर शिवाकांत ओझा सहित 53 लोगों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करा दी। इस घटना की सूचना जब सपा के हाइकमान को पहुंची तो सब स्तब्ध रह गये और घटना पर गहरी नाराजगी जताई गई लेकिन राजनैतिक लोगों का कहना है कि ऐसी घटनाओं को तूल देने से सपा का नुकसान होगा इसलिये चुनाव को देखते हुए दोनों मामले को रफा-दफा करने का प्रयास किया जा रहा है।

सपा की सभा में एक दूसरे से भिड़ते नेतागण

एमडीपीजी में बीए प्रथम वर्ष का आंतरिक टेस्ट 22 से

प्रतापगढ़। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत स्नातक प्रथम प्रथम वर्ष(बीए, बीकॉम एवं बीएससी) में सभी विषयों का निर्धारित 25 अंकों के आंतरिक टेस्ट का प्रथम टेस्ट 22 नवंबर से 30 नवंबर के मध्य होगा। यह जानकारी देते हुए एमडी पीजी कॉलेज के जन सूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडे ने बताया कि प्रथम आंतरिक टेस्ट साढ़े 12 अंकों का होगा जो कि 22 नवंबर से 30 नवंबर के मध्य होगा। यह टेस्ट 1 घंटे का होगा। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित 3 आंतरिक टेस्ट की दो परीक्षाओं में छात्र-छात्राओं की उपस्थिति अनिवार्य है। छात्र-छात्राएं अपने-अपने विषय के विभाग में संपर्क कर आंतरिक टेस्ट के परीक्षा की तिथि एवं समय की जानकारी अवश्य कर लें।

जिले में आज आएगी अन्नपूर्णा यात्रा, तैयारी पूरी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रविवार को अयोध्या-प्रयागराज मार्ग से गुजरने वाली अन्नपूर्णा यात्रा की तैयारी लगभग पूरी कर ली गई है। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल के निर्देश पर नगर पालिका अध्यक्ष प्रेमलता सिंह व ईओ मुदित सिंह ने रथ यात्रा के मार्ग को साफ-सुथरा करने के निर्देश दिये थे जिसके अनुसार शनिवार को नगर पालिका के लभगग 150 सफाई कर्मी चिलबिला-रंजीतपुर से लेकर सीताराम धाम तक के मार्ग की साफ-सफाई में जुटे रहे। नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि 14 नवम्बर को रथ यात्रा दिन में दो से तीन बजे के बीच गुजरेगी जिसमें लक्ष्मी मंदिर चिलबिला, सदर मोड़ तथा हादीहाल में रथयात्रा पर पुष्पवर्षा की जाएगी। उधर भाजपा के मीडिया प्रभारी राघवेन्द्र शुक्ल ने बताया कि 100 वर्ष बाद अपने धाम लौट रही देवी अन्नपूर्णा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अथक प्रयासों और करोड़ों श्रद्धालुओ की आस्था से यह संभव हुआ है। श्री शुक्ल ने बताया कि यात्रा 14 नवंबर को दो बजे कोहंडौर बाजार पहुंचेगी जहां पर यात्रा की अगवानी करते हुए कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत किया जाएगा। इसके उपरांत गोड़े, चिलबिला बाजार, सदर बाजार, चौक घंटाघर ,भाजपा जिला कार्यालय के सामने लोगो द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया जाएगा। यात्रा तुलसी सदन हादीहाल पहुंचेगी जहां पर जनसभा का आयोजन किया गया है। उक्त कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश पर पर्यटन संस्कृति धर्मार्थ कार्य प्रोटोकॉल स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्री नीलकंठ तिवारी होंगे।

नपा के 150 कर्मचारियों ने की मार्ग की साफ-सफाई

राजमार्ग की साफ-सफाई करते सफाई कर्मचारी

असलहे के साथ वीडियो वॉयरल मे आरोपी धराया

लालगंज, प्रतापगढ़। संगीत कार्यक्रम मे खुलेआम मंच पर असलहे के साथ अफरातफरी के मामले मे दर्ज मुकदमें का एक और वांछित पुलिस के हत्थे चढ़ा है। कोतवाली के दरोगा जयकिशुन ने पूरे जनई गांव मे शनिवार की सुबह दबिश देकर पुलिस द्वारा दर्ज कराये गये दहशतगर्दी के मुकदमे मे आरोपी हरिकेश पुत्र छोटे लाल सरोज को भी गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को पुलिस ने जेल भेज दिया। इसके पहले शुक्रवार को रानीगंज कैथौला पुलिस चौकी द्वारा भी इस घटना को लेकर एक आरोपी को तमंचे व कारतूस समेत हिरासत मे लिये जाने मे सफलता मिली थी।

तमंचे की नोंक पर बवाल करने पर दो आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नेशनल हाइवे पर स्थित पेट्रोल पम्प मे असलहे की नोंक पर सरेआम दहशतगर्दी कर गालीगलौज व धमकी को लेकर पुलिस ने दो आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है। लखनऊ वाराणसी के लालगंज रानीगंज कैथौला के मध्य रायपुर तियाई स्थित एनआरएस फीलिंग स्टेशन पर शुक्रवार को दिन मे डेढ़ बजे दो आरोपियो ने पहुंचकर जमकर बवाल काटा। आरोपियो ने पम्प के मैनेजर कक्ष मे घुसकर मैनेजर पर असलहा तान दिया। मैनेजर के विरोध करने पर आरोपी उसे गाली देते हुए जानलेवा धमकी देने लगे। पेट्रोल पम्प पर सरेआम दहशतगर्दी का माहौल देख अन्य ग्राहक भी सन्नाटे मे आ गये। मैनेजर कक्ष मे असलहे के साथ आरोपियो की दबंगई का वीडियो वायरल होते ही पुलिस प्रशासन मे भी हडकंप मच गया। फीलिंग स्टेशन के मैनेजर प्रभात मिश्र निवासी ग्राम कांटा थाना नसीराबाद रायबरेली की तहरीर पर कोतवाली लालगंज के अर्जुनपुर निवासी राजेश प्रताप सिंह एवं लल्लन सिंह पुत्रगण देवीबक्श सिंह के खिलाफ पुलिस ने गंभीर धाराओं मे केस दर्ज किया है। घटना की जानकारी मिलने पर सीओ रामसूरत सोनकर तथा कोतवाल कमलेश पाल भी मौके पर पहुंचे और घटना की जांच पडताल की। कोतवाल का कहना है कि केस दर्ज किया गया है, आरोपियो के खिलाफ कडी कार्रवाई की जाएगी। इधर घटना को लेकर आसपास के व्यापारियों मे भी आक्रोश का माहौल देखा गया। शुक्रवार को भी फीलिंग स्टेशन मे असलहे की नोंक पर हुए बवेले को लेकर लोगों का आक्रोश भांप इलाकाई पुलिस को अलर्ट देखा गया।

बाजार में निकाली कलश यात्रा

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। परियावां पाइकगंज बाजार के माता मईया धाम में शनिवार को महिलाओं ने सिर पर कलश रखकर यात्रा में शामिल हुईं। कलश यात्रा माता मइया धाम से परियावां सूर्या पेट्रोल पम्प तक गई जहाँ से वापस नवाबगंज चौराहे तक गई जो वापस माता मईया धाम पहुची जहाँ शास्त्री केशव उमेश कृष्ण जी महाराज ने यजमान राम सनेही जायसवाल से वेदों मन्त्रोच्चारण के साथ कलश पूजन अर्चन कर स्थापित कराया। शाम को 6 बजे भागवत कथा प्रारम्भ किया गया जिसमे कथा वाचक आचार्य श्री पंकज कृष्ण महाराज ने भागवत माहात्म, भक्ति ज्ञान व वैराग्य, गौकर्ण और धुन्ध कारी कथा का अपने मुखार बिंदु से श्रद्धालुओं को सुनाया और कहा कि भागवत कथा के सुनने से सभी पाप नष्ट होते है। भागवत कथा रात 10 बजे चलता रहा।जिसमे सहयोगी के रूप में डॉ0 सुरेश जायसवाल, ब्रजेश चन्द्र जायसवाल, रमेश जायसवाल, अरुण कुमार जायसवाल, अजय जायसवाल, सुधीर जायसवाल, कल्लू जायसवाल, सचिन जायसवाल, राजा बाबू, रिशु जायसवाल, दिलीप जायसवाल राजू गुप्ता, लक्ष्मी नारायण गुप्ता, मनोज जायसवाल, दीनानाथ जायसवाल आदि लोग रहे।

सुरक्षा बैंड बांधकर बच्चों ने पुलिसकर्मियों से लिया सुरक्षा का भरोसा

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। नगर स्थित गुडविल पब्लिक स्कूल शनिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और चाइल्ड हेल्पलाइन के तत्वावधान में आजादी की अमृत महोत्सव के तहत विद्यार्थियों को विधिक जानकारी तथा उनकी सुरक्षा के संबंध में जानकारी प्रदान की गई इस अवसर पर पीएलवी समीम अंसारी ने बताया कि बच्चों की सहायता के लिए 1098 बहुत ही मददगार हेल्पलाइन है। इसके साथ ही अभिभावकों को भी सचेत और सजग रहकर बच्चों की सुरक्षा और उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देने की आवश्यकता है इस अवसर पर छात्र छात्राओं ने पट्टी कोतवाली के सब इंस्पेक्टर मनोज कुमार तथा सर्वेश पटेल सहित आए हुए पुलिसकर्मियों को सुरक्षा बैंड बांध कर उनसे सुरक्षा करने का विश्वास हासिल किया। सब इंस्पेक्टर मनोज कुमार ने कहा कि पुलिस बच्चों और समाज के सबसे अच्छे दोस्त हैं इनसे डरने की नहीं बल्कि इनसे दोस्ती करके अपराध को खत्म किया जा सकता है।

9वां दीपदान महोत्सव 15 को

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अंतर्गत नवाबगंज सोनामऊ गंगाघाट पर 15 नवम्बर को 9वां दीपदान महोत्सव मनाया जाएगा जिसमे ग्राम प्रधान श्रीमती संगीता देवी पत्नी सुरेश कुमार यादव 5100 दीप जलाकर दीपदान महोत्सव को सम्पन्न करेंगे जिसकी तैयारी समाज सेवी एवं पूर्व ग्राम प्रधान जीवन लाल यादव अपने सहयोगियों के साथ साफ सफाई व तैयारी में लगे हुए है। बिजली की सजावट से गंगातट किनारे स्थित मंदिर रंग बिरंगे झालरों से दूध की रोशनी में जगमगा उठा। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों का जमावड़ा रहेगा।

ट्रक से कुचलकर युवक की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज,प्रतापगढ़। बाइक से रिश्तेदार को घर छोडने जा रहे युवक की दुर्घटना मे मौके पर ही मौत हो गयी। युवक की मौत को लेकर परिजनों मे कोहराम मचा हुआ है। कोतवाली के हण्डौर वल्दियान निवासी दानपाल सरोज 30 पुत्र रामअंजोर शनिवार की सुबह करीब सात बजे अपने रिश्तेदार सांगीपुर थाना के जोगीपुर बासूपुर गांव निवासी रामलौटन सरोज 23 पुत्र श्यामलाल व लालगंज के पूरे मुरली अमांवा निवासी अरूण सरोज 27 पुत्र रामू सरोज को बाइक से उनके घर छोडने जा रहा था। सगरा सुंदरपुर बाजार मे अचानक सड़क पर कुत्ते के आ जाने से बाइक अनियंत्रित हो गयी। इस बीच लालगंज की तरफ आ रही रोडवेज बस से टकराते हुए बाइक सामने से आ रही ट्रक की चपेट मे आ गयी। ट्रक से कुचलकर रामलौटन की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। घटना मे अरूण व दानपाल गंभीर रूप से घायल हो गये। दोनों घायलो को आननफानन मे जिला अस्पताल भेजवाया गया। मृतक रामलौटन अपने पीछे पत्नी अर्चना तथा बेटे अभि ढाई वर्ष को निराश्रित छोड गया है। सूत्रों के मुताबिक घटना मे घायल अरूण व मृतक लखनऊ मे मजदूरी कर परिवार का भरण पोषण किया करते थे। शुक्रवार की देर रात मृतक रामलौटन तथा अरूण दानपाल के घर हण्डौर ठहर गये।

मेडिकल कालेज से चोरी मशीन बरामद, तीन गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मेडिकल कालेज की पैथोलॉजी से सीबीसी मशीन चोरी का पुलिस ने खुलासा कर दिया। पुलिस ने सीबीसी मशीन के साथ तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। यह वारदात सीसीटीवी कैमरे में मशीन को ले जाते समय कैद हो गई थी। बता दें कि कृति पैथोलॉजी के संचालक ने टेक्नीशियन व अन्य से सौदेबाजी करके सीबीसी मशीन की चोरी करवाई थी। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने प्रेसवार्ता में मशीन चोरी का खुलासा किया। पैथोलॉजी का संचालक महकमे के ड्राइवर का बेटा बताया जा रहा है। चोरी में शामिल एक आरोपी को पुलिस से बचाने में एक चिकित्सक मशक्कत कर रहे हैं।

जमीनी विवाद में आरोपियों ने महिला समेत परिवार को पीटा

पट्टी, प्रतापगढ़। कोतवाली क्षेत्र के रायपुर गांव में जमीनी विवाद को लेकर पड़ोसियों ने एक महिला समेत परिवारीजनों को पीटकर जख्मी कर दिया पीड़ित महिला ने इस संबंध में कोतवाली पट्टी में तहरीर देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के रायपुर गांव की रहने वाली गुलनाज पत्नी नाटे ने कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि शनिवार को वह अपनी आबादी की जमीन में कुछ काम कर रही थी तभी पड़ोसी उसके जमीन पर लकड़ी कंडा, आदि फेंकने लगे महिला ने जब इसका विरोध किया तो पड़ोसी एक राय होकर आधा दर्जन लोग महिला पर टूट पड़े बीच बचाव करने जब महिला के पति नाटे और परिवारीजन इसराइल, सैफ, राजिया, इशरत जहां आदि दौड़े तो आरोपियों ने उन्हें भी मारकर जख्मी कर दिया और जान से मारने की धमकी भी दिया। पीड़ित महिला ने इस संबंध में कोतवाली पट्टी में तहरीर देकर आरोपियों पर कार्रवाई की मांग की है।

कौशाम्बी संदेश

खबर संक्षेप

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त राजू पुत्र फूलचंद निवासी मडुकि टेनशाह आलमाबाद थाना मंझनपुर को मुखबीर खास की सूचना पर ओसा चौराहा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना चरवा पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त मो० सैफ उर्फ राजू पुत्र स्व० सादिक अली निवासी सैयद सरावां थाना चरवा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

चेकिंग के दौरान हुई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई, चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया, जिनमें 209 वाहनों का ई चालान किया गया व 05 वाहन का चालान कर 3500 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया साथ ही बिना मास्क लगाये घूमने एवं सरकार द्वारा जारी गाइड लाइन का उल्लंघन करने वाले 13 व्यक्तियों से 2100 रुपये जुमार्ना वसूला गया।

डम्फर ने बाइक सवार को कुचला मौके पर हुई मौत

हादसे के बाद घटनास्थल पर मौजूद भीड़

अखंड भारत संदेश

हादसे के बाद वाहन छोड़कर डम्फर चालक मौके से हुआ फरार

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम मखऊपुर के पास डम्फर वाहन ने बाइक सवार युवक को कुचल दिया है जिससे मौके पर युवक की मौत हो गई हादसे के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई है सूचना पुलिस को दी गई है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक युवक की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मृतक प्रतापगढ़ जनपद के जेठवारा थाना अंतर्गत रहने वाला बताया जाता है। घटनाक्रम के मुताबिक अभिषेक कुमार मौर्या उम्र 32 वर्ष पुत्र रामगोपाल मौर्या निवासी काछा पुरे सुरजई कुठिलिया थाना जेठवारा जनपद प्रतापगढ़ बाइक से कौशांबी के तिल्हापुर इलाकों की ओर जा रहे थे जैसे ही बाइक सवार अभिषेक मौर्य मखऊपुर गांव के पास पहुंचे कि तेज रफ्तार डम्फर वाहन के चालक ने बाइक सवार अभिषेक मौर्या को कुचल दिया है जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई है हादसे के बाद डम्फर चालक वाहन खड़ा कर मौके से फरार हो गया है हादसे के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई है मामले की सूचना ग्रामीणों ने स्थानीय पुलिस को दिया है मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के जेब में मिले आधार कार्ड के जरिए उसकी पहचान की है और उसके परिजनों को सूचना दी है पुलिस ने मृतक युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

स्वरोजगार हेतु युवाओं को दिया गया दस दिवसीय प्रशिक्षण

कौशाम्बी। देश में लगातार बढ़ रही आबादी से बेरोजगार युवाओं की संख्या में बेतहासा बढ़ोत्तरी देखने को मिल रहा है। बेरोजगार युवाओं की समस्या को ध्यान में रखते हुए बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान मंझनपुर कौशाम्बी के द्वारा आत्मनिर्भर बनने के लिए युवाओं को सुअर पालन हेतु दस दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। आर्थिक रूप से कमजोर प्रशिक्षित युवाओं की योग्यतानुशार उक्त संस्थान के द्वारा उचित ऋण भी मुहैया कराए जाने की समुचित व्यवस्था की गई है। प्रशिक्षण में बेरोजगार युवाओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया और उन्हें अनुभवी प्रशिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षित किया गया। बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान के द्वारा प्रशिक्षुओं को सूअर पालन के लिए प्रशिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षित किया गया क्योंकि सूअर पालन एक ऐसा बिजनेस है जिससे कम समय व कम लागत में अत्यधिक लाभ कमाया जा सकता है। प्रशिक्षण का कार्यक्रम 30 अक्टूबर से शुरू होकर 12 नवंबर तक किया गया। प्रशिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षित युवाओं को फील्ड विजिट कराने के लिए अनुराधा सूअर फार्म ग्राम रामपुर बरोलहा का भ्रमण कराया गया जहां प्रशिक्षित बच्चों को काफी कुछ सीखने को मिला। प्रशिक्षण में प्रतिभाग किए युवा विजय कुमार, मानसिंह, राजू ,अनीश, शिवदानी सहित आदि युवाओं को प्रशिक्षण समाप्ति के पश्चात अनुभव प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया और उन्हें प्रशिक्षकों के द्वारा भविष्य की योजना के लिए अग्रिम बधाई दी गई। इस मौके पर जिला अग्रणी प्रबंधक जेके चौधरी, मुख्य शाखा प्रबंधक बैंक आफ बड़ौदा सुभाष कुमार, निदेशक ग्रामीण स्वरोजगार नवीन कुमार झा, ऋण परामर्श दाता ईश्वरी प्रसाद ,प्रशिक्षक नीरज आर्य , परीक्षित मौर्य, आशुतोष व राजकुमार आदि रहे।

दबंगों ने किया खेत में काम कर रहे किसान पर प्राण घातक हमला

मंझनपुर के एक निजी नर्सिंग होम में घायल किसान का चल रहा है इलाज

अखंड भारत संदेश

कल्यानपुर कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम घसपुरवा मजरा गोविंदपुर गोरियों में मुन्ना लाल पटेल पर शनिवार की सुबह तीन लोगों ने प्राण घातक हमला किया है घायल अवस्था में उन्हें इलाज के लिए मंझनपुर के एक निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया है जहां वह गंभीर हालत में जीवन और मौत से जूझ रहे हैं मामले की सूचना पुलिस को दी गई है।

घटनाक्रम के मुताबिक सैनी कोतवाली क्षेत्र के घसपुरवा मजरा गोविंदपुर गोरियों निवासी मुन्ना लाल पटेल पुत्र नानकु पटेल शनिवार की सुबह अपने खेत में काम कर रहे थे वही बगल में उनका बेटा प्रिंस ट्रैक्टर से खेत की जुताई कर रहा था इसी बीच गांव के अब्दुल सलाम मोहम्मद कलाम मोहम्मद कलीम आदि धारदार हथियार लेकर मौके पर पहुंचे और मुन्ना लाल पटेल पर उन्होंने प्रहार करना शुरू कर दिया इस हमले में मुन्ना लाल पटेल गम्भीर लहूलुहान हो गए उन्हें गंभीर चोटें आई मौके पर पिता पर हमला देखकर उनका बेटा प्रिंट चिल्लाते हुए घटनास्थल की ओर भागा जिस पर हमलावर मौके से फरार हो गए हैं घायल मुन्ना पटेल को इलाज के लिए एक निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया है जहां वह जीवन और मौत से जूझ रहे हैं मामले की सूचना पुलिस को दी गई है खबर लिखे जाने तक मामले में पुलिस ने मुकदमा नहीं दर्ज किया है हमलावरों की गिरफ्तारी भी पुलिस ने अभी नहीं की है।

अस्पताल में भर्ती घायल किसान

डीएम ने किया मतदान केंद्र का निरीक्षण

मतदान केंद्रों का निरीक्षण करते जिलाधिकारी

अखंड भारत संदेश

डीएम ने कहा कि फार्म पूर्ण रूप से भरकर ही करें जमा

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने अर्हता तिथि 01 जनवरी 2022 के आधार पर विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के संक्षिप्त पुनरीक्षण की द्वितीय विशेष अभियान पर मतदान केन्द्र प्राथमिक विद्यालय पाता कोतारी पश्चिम गौसपुर टिकरी एवं भेलखा तथा दुर्गा देवी इण्टर कालेज का निरीक्षण कर वस्तुस्थिति का जायजा लिया जिलाधिकारी ने पदाभिहित अधिकारी एवं बीएलओ से अब तक प्राप्त फार्म-06,07 एवं 08 तथा ईपीरेशियों, जेण्डर रेशियों व दिव्यांग मतदाताओं आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हुए ईपी एवं जेण्डर रेशियों मानक के अनुसार ठीक करने हेतु सभी आवश्यक कार्यवाही करने तथा घर-घर जाकर सर्वे करने के निर्देश दिये, ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति छूटने न पाये। उन्होनें कहा कि ग्राम प्रधान एवं लेखपाल के माध्यम से प्रचार -प्रसार कराकर पात्र व्यक्तियों का नाम मतदाता सूची में अंकित कराया जाय। उन्होनें बीएलओ से कहा कि फार्म पूर्ण रूप से भरकर ही जमा करें।

विभिन्न मांगों को लेकर स्वास्थ्य संविदा कर्मचारियों ने सौंपा ज्ञापन

अपर मुख्य सचिव चिकित्सा से वार्ता में सहमति के बाद भी दो मांगों पर 3 माह व्यतीत हो जाने के बाद नही हुई कोई कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

कल्यानपुर कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन संविदा कर्मचारी संघ के द्वारा धरना प्रदर्शन कर विभिन्न मांगों को लेकर जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा गया है। स्वास्थ्य मिशन संविदा कर्मचारी संघ ने बताया गया कि उत्तर प्रदेश में लगभग 1 लाख की संख्या में संविदा कर्मचारी चिकित्सक पैरामेडिकल मैनेजमेन्ट व अन्य स्वास्थ्य विभाग में कार्य कर रहे हैं उन्होंने बताया कि लगभग 2 लाख की संख्या में आशा बहुऐं भी कार्य कर रही है पिछले 2 वर्षों से कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी व कोविड टीकाकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में निरन्तर अपनी सेवा प्रदान कर पूर्ण योगदान देने के बावजूद संविदा कर्मियों की उपेक्षा की जा रही है स्वास्थ्य संविदा कर्मचारी संघ का कहना है कि संविदा कर्मचारियों से प्रत्येक राजकीय अवकाशों व साप्ताहिक अवकाशों में भी लगातार विभागीय कार्य लिया जा रहा है 26 जुलाई 2021 को संगठन प्रतिनिधिमण्डल से अपर मुख्य सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण उत्तर प्रदेश से हुई वार्ता के दौरान 3 मांगों को पूरा किये जाने की सहमति प्रदान किये जाने के उपरान्त भी 2 मांगों पर 3 माह व्यतीत हो जाने के उपरान्त भी कोई कार्यवाही न होने से प्रदेश के संविदा कर्मचारियों में काफी रोष व्याप्त है।

कलेक्ट्रेट में ज्ञापन सौंपते स्वास्थ्य संविदा कर्मी

न्यूज झरोखा

95 लोगों का ई-चालान कर 1500 रुपया वसूला गया जुर्माना

कोखराज कौशाम्बी। यातायात माह के 12वें दिन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यातायात उप निरीक्षक धीरज जायसवाल द्वारा हेलमेट लगाकर न चलने वालों व सीट बेल्ट लगाकर न चलने वालों तथा वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग करने वालों की विशेष रूप से चेकिंग की गई तथा उनका चालान मोटर वाहन अधिनियम के तहत किया तथा इन्हें यातायात नियमों के बारे में जागरूक करते हुए पम्पलेट वितरित किए गए तथा सोशल मीडिया के माध्यम से यातायात नियमों के बारे में आम जन मानस को जागरूक किया गया। साथ ही साथ ओसा स्थित दुर्गा देवी इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य चुन्नीलाल सरोज के नेतृत्व में विद्यालय परिषर में बच्चों को यातायात नियमो के प्रति यातायात निरीक्षक धीरज जायसवाल द्वारा जागरूक कर पम्पलेट वितरित कर वाद विवाद प्रतियोगिया आयोजित कराई गई बिना वैध दस्तावेज और आज्ञप्ति के वाहन चलाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए कुल 95 लोगो का ईचालान किया गया व मौके पर 1500 रुपया जुमार्ना भी वसूला गया।

मामूली विवाद में दबंगों ने मां-बेटों को जमकर पीटा

कौशाम्बी। सैनी कोतवाली इलाके में मामूली विवाद को लेकर दबंगों ने मां बेटों को जमकर पीट दिया। जिससे वह दोनों घायल हो गए। जानकारी के मुताबिक सिराथू वार्ड नंबर 10 के रहने वाले रामचंद्र की पत्नी कमला देवी से पड़ोस के ही संजय से किसी बात को लेकर मामूली सा विवाद हो गया। विवाद के दौरान संजय ने अपने परिजनों संग उन पर हमला कर उनको पीटने लगे।महिला को पीटता देख अपनी माँ को बचाने आया उनका लड़का सुरेंद्र को भी दबंगों ने जमकर पीट दिया।शोर सराबा सुन पास रहे लोगों ने बीच बचाओ कर घायल मां बेटे को एम्बुलेन्स की मदद से जिला अस्पताल में भर्ती कराया। मामले की शिकायत थाने में की गई। शिकायत मिलने के बाद पुलिस जांच पड़ताल में जुटी है।

अंतिम संस्कार से लौट रही महिला सड़क हादसे में घायल

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के घना पुरवा गांव निवासी एक महिला रिस्तेदार के अंतिम संस्कार में शामिल होने चित्रकूट जनपद के मऊ बाजार अपने बेटे के साथ बाइक से गई थी अंतिम संस्कार से वापस लौट रही महिला मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के टेवा के पास बाइक से गिर गई है जिससे महिला को गंभीर चोटें आई हैं घायल अवस्था में उसे इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है । जानकारी के मुताबिक मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के घना पुरवा गांव निवासी शिव मोहन की रिश्तेदारी चित्रकूट जनपद के मऊ बाजार में है जहां उनके रिश्तेदार की मौत हो गई थी मौत की जानकारी मिलने पर शिव मोहन की पत्नी जगरानी अपने बेटे अजय के साथ बाइक से मऊ बाजार अंतिम संस्कार में गयी थी शुक्रवार की शाम मां बेटे बाइक से वापस घर लौट रहे थे जैसे ही बाइक सवार मां बेटा टेवा के पास पहुंचे कि ब्रेकर के चलते अनियंत्रित होकर महिला बाइक से गिर गई जिससे महिला को चोटें आई हैं घायल महिला को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अवैध तमंचा व कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त राजेन्द्र कुमार सरोज उर्फ अंकित पुत्र धर्मपाल निवासी नरसिंहपुर कछुआ थाना सैनी को मुखबीर खास की सूचना पर पाल चौराहा से गिरफ्तार कर अभियुक्त की जामातलासी लिए जाने के दौरान उसके पास से 01 अदद तमचा 315 बोर व 01 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर व 01 अदद मोबाइल फोन लूट का बरामद होने पर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

सड़क हादसे में चौकी इंचार्ज घायल

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली के पतौना पुलिस चौकी में तैनात चौकी इंचार्ज राजीव नारायण सिंह शुक्रवार की शाम गस्त में जाते समय सड़क हादसे के शिकार हो गए हैं जिससे उन्हें गंभीर चोट आई हैं घायल चौकी इंचार्ज को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां से चिकित्सकों ने उन्हें प्रयागराज रिफर कर दिया है हालत में सुधार न होने पर प्रयागराज के चिकित्सकों ने उन्हें लखनऊ अस्पताल में रेफर कर दिया है जहां उनका इलाज चल रहा है घायल चौकी इंचार्ज का दुर्घटना में ब्लड अधिक निकल जाने से उन्हें ब्लड की जरूरत पड़ी है जिस पर एसओजी टीम ने ब्लड किया डोनेड किया है चौकी इंचार्ज के इलाज में सहयोग करने के लिए पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर तमाम पुलिसकर्मी लगे हुए हैं।

यातायात की जानकारी देते उपनिरीक्षक यातायात धीरज जायसवाल

वाहन चलाते समय न करे मोबाइल का उपयोग : धीरज जयसवाल

यातायात नियमो के प्रति किया गया जागरूक

कौशाम्बी। यातायात माह के 13 वें दिन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यातायात उपनिरीक्षक धीरज जायसवाल द्वारा हेलमेट न लगाकर चलने वाले चालक व सीट बेल्ट न लगाकर चलने वालों तथा वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग करने वालों की विशेष रूप से चेकिंग की गई तथा उनका चालान मोटर वाहन अधिनियम के तहत किया गया तथा इन्हें यातायात नियमों के बारे में जागरूक करते हुए पम्पलेट वितरित किए गए तथा सोशल मीडिया के माध्यम से यातायात नियमों के बारे में आम जन मानस को जागरूक किया गया साथ ही साथ स्वदेशी मेला डायट मैदान मंझनपुर में सुशील उपाध्याय के नेतृत्व में मेले में आये लोगो को यातायात नियमो के प्रति जागरूक कर पम्पलेट वितरित किया गया बिना वैध दस्तावेज और आज्ञप्ति के वाहन चलाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए कुल 75 लोगो का ई चालान किया गया व मौके पर 1000 रुपया जुमार्ना भी वसूला गया।

स्कूल कालेजों से ही निकल कर आते हैं नेतृत्व क्षमता वाले लोग : देवबाबू

कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल एंड कॉलेज भीटी में आयोजित हुआ बैच अलंकरण समारोह

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चायल तहसील के भीटी स्थित कौशांबी प्रेसीडेंसी स्कूल एंड कॉलेज में शनिवार को बैच अलंकरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें छात्र एवं छात्राओं ने प्रतिभाग किया और स्कूल मैनेजमेंट के माध्यम से नेतृत्व क्षमता का विकास करने हेतु बैच अलंकरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया वास्तव में नेतृत्व का बीज स्कूल या कालजो से ही प्रारंभ होता है और इस पहल की शुरूआत आज कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल एंड कॉलेज ने किया। इस अलंकरण समारोह में हेड ब्वॉय का ताज स्वप्निल सोनी एवं हेड गर्ल का ताज प्रज्वलि केशरवानी को पहनाया गया। इसी क्रम में रेड हाउस कैप्टन बालक वर्ग आलोक,रेड हाउस कैप्टन बालिका वर्ग एंजलीना, ग्रीन हाउस कैप्टन बालक वर्ग दिव्यांश,ग्रीन हाउस कैप्टन बालिका वर्ग गार्गी,येलो हाउस कैप्टन बालक वर्ग शुभम, येलो हाउस कैप्टन बालिका वर्ग महक,ब्लू हाउस कैप्टन बालक वर्ग सत्यम,ब्लू हाउस कैप्टन बालिका वर्ग साफिया बानो,डिसिप्लिन कैप्टन महेंद्र प्रताप,स्पोर्ट्स कैप्टन अभय सिंह,एक्टिविटी कैप्टन मान सिंह पदों से अलंकृत किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे किडजी केपीएस के फाउंडर मास्टर देव बाबू गुप्ता ने सभी पदाधिकारियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दिया और अपने संदेश में कहा कि स्कूल कालेजों से ही नेतृत्व क्षमता वाले निकल कर आते हैं उन्होंने कहा कि आप सभी देश का भविष्य है अपनी क्षमता का भरपूर प्रयोग करिए और आगे चलकर के स्कूल ,संस्थान, समाज ,प्रदेश ,देश में अपना नाम रोशन करिए वही संस्थान की प्रिंसिपल श्रीमती सीमा पवार ने भी समस्त छात्र छात्राओं को उनके उज्जवल कार्यकाल की बधाई एवं शुभकामनाएं दिया कार्यक्रम में अकांत गुप्ता, गिरिजा शंकर ,प्रकाश एवं समस्त शिक्षक, शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

बैज अलंकरण समारोह में मौजूद छात्र-छात्राएं

आंगनवाड़ी ना होती तो बच्चों का कौन करता विकास

अखंड भारत संदेश

कई दिन से विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलनरत हैं आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ

कौशांबी। अपनी विभिन्न मांगों को लेकर महिला आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश जनपद मुख्यालय मंझनपुर के ब्लॉक परिसर में धरना प्रदर्शन सभा आंदोलन कर अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं शनिवार को फिर ब्लॉक परिसर में आंगनवाड़ी कार्यकत्रिया एकत्रित हुई और उन्होंने अपने विभिन्न मांगों से संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजा है। इस मौके पर उपस्थित महिला आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ की प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष माया सिंह ने कहा कि आंगनवाड़ी ना होती तो 0 वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों का विकास कौन करता उन्होंने कहा कि साइंस कहता है कि 0 वर्ष से लेकर 6 वर्ष तक के बच्चों के विकास पर विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए उन्हें विशेष देखभाल की जरूरत होती है और बच्चों के विकास के देखभाल की जिम्मेदारी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को मिली है जो बखूबी अपनी ड्यूटी निभा रही हैं उन्होंने कहा कि उसके बाद भी सरकार उनके अधिकारों पर ध्यान नहीं दे रही है जबरिया उन्हें सेवानिवृत्त किया जा रहा है समय से वेतन नहीं दिया जा रहा है आंगनवाड़ी कर्मियों के परिवार के लोगों की भर्तियां नहीं की जा रही हैं इतना ही नहीं पोषाहार वितरण में स्वयं सहायता समूह की भागीदारी सरकार ने शामिल कर दिया है जिससे आंगनवाड़ी केंद्रों में संचालित योजनाएं चौपट हो चुकी हैं उन्होंने कहा कि आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ की मांगों पर यदि सरकार ने विचार नहीं किया तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा इस मौके पर सुषमा सिंह सुनीता देवी पुष्पा देवी संजना दीक्षित सुधा कुशवाहा रेनू प्रजापति प्रेमा देवी रंजना कुमारी अर्चना सरोज गंगा देवी सोफिया सहित सैकड़ो आंगनवाड़ी कार्यकत्रिया मौजूद रही।

आंगनवाड़ी को संबोधित करती माया सिंह

बिना उपयोग के नाले का निर्माण कर लाखों की रकम किया बर्बाद

नगर पंचायत चायल में कमीशन खोरी के चलते बने नाले में भरा गंदा पानी बीमारियों को दे रहे दावत

अखंड भारत संदेश

चायल कौशाम्बी। विकास योजनाओं के नाम पर केवल कमीशन खोरी को नजर में रखकर सरकारी कार्य कराए जा रहे हैं योजनाएं जन उपयोगी नहीं साबित हो रही हैं जिससे एक और जहां सरकारी खजाना में बड़ी चपत लग रही है वही कमीशन खोरी कर जिम्मेदार मालामाल हो रहे हैं ताजा मामला नगर पंचायत चायल कस्बे का है जहां नाला निर्माण के नाम पर योजना बनाकर नगर पंचायत के जिम्मेदारों ने अर्ध निर्मित नाला निर्माण कराकर सरकारी खजाने से पूरी रकम निकाल ली है नाला निर्माण के ठेकेदार ने घटिया क्वालिटी का मानक विहीन अर्ध निर्मित नाला निर्माण कर नगर पंचायत को नाला सौप दिया है अभिलेखों में नाला निर्माण पूर्ण दिखाकर ठेकेदार को बजट की रकम अवमुक्त कर अधिकारियों ने कमीशन खोरी का हिस्सा वसूल लिया है। चायल कस्बे में अधूरा घटिया नाला निर्माण से नाला में पूरा गन्दा पानी भरा हुआ है नाले में बहाव नहीं है नाले में गंदा पानी भरा रहने से कीड़े बजबजा रहे हैं जिससे नगर वासियों में बीमारी और परेशानी उत्पन्न हो रही है बार-बार शिकायत के बाद अर्ध निर्मित और बिना उपयोग के नाले के निर्माण की योजना की जिम्मेदारों ने जांच नहीं कराई है नाला सफाई कराए जाने और नाले से पानी के बहाव की बात करना पूरी तरह से बेईमानी साबित होगी। उत्तर प्रदेश सरकार डेंगू जैसी खतरनाक बीमारियों को रोक थाम करने के लिए जद्दोंजहद कर रही है लेकिन नगर पंचायत चायल के भ्रष्ट अधिकारियों ने योजनाओं के संचालन की आड़ में कमीशन खोरी का ठेका ले रखा है अपने चहेतों को ठेका दे कर कमीशन खोर अधिकारियों द्वारा काम कराया जा रहा है चायल वार्ड न 5 के नव निर्मित नाला में भरा गन्दा पानी बुखार डेंगू जैसी बीमारी को दावत दे रहा है जिससे नगर में महामारी फैलने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन बार-बार शिकायत के बाद भी नगर पंचायत चायल के अधिकारियों के कानों में जूं नहीं रेंग रही है और वह धृतराष्ट्र बने बैठे हैं।

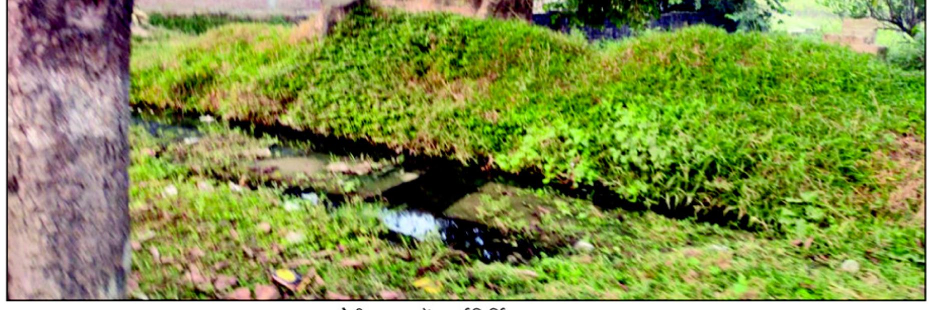
अनुपयोगी जगह में अर्द्धनिर्मित नाला का दुश्य।

सम्पादकीय

क्या करेंगे चिनफिंग?

यह बात गौर करने लायक है कि अब तक के इतिहास में यह तीसरा ही मौका है, जब पार्टी ने ऐसा प्रस्ताव पारित किया। ऐसे ही तंग श्याओ फंग अगर माओ के नेतृत्व में सांस्कृतिक क्रांति के दौरान की गई गलतियों को रेखांकित करते हुए देश में आर्थिक सुधारों का सूत्रपात कर सके, तो उसके पीछे 1981 में पारित इस प्रस्ताव से मिली ताकत की बड़ी भूमिका मानी जाती है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के छठे प्लेनरी सेशन में पार्टी के सौ साल के इतिहास से संबंधित दस्तावेज पारित हुआ। इसे शी के राष्ट्रपति के रूप में अगले कार्यकाल की तैयारी भी माना जा रहा है। उन्हें माओ से भी अधिक ताकतवर माना जा रहा है। यह बात गौर करने लायक है कि अब तक के इतिहास में यह तीसरा ही मौका है, जब पार्टी ने ऐसा प्रस्ताव पारित किया। पहली बार 1945 में माओत्से तुंग के नेतृत्व में और दूसरी बार 1981 में तंग श्याओ फंग की अगुआई में पार्टी ने ऐसा प्रस्ताव पारित किया था। ध्यान रहे पार्टी से पारित इस प्रस्ताव के बाद ही माओ के नेतृत्व को वह मजबूती मिली, जिसकी बदौलत 1949 में वह पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की घोषणा कर देश को समाजवादी रास्ते पर ले जा सके। ऐसे ही तंग श्याओ फंग अगर माओ के नेतृत्व में सांस्कृतिक क्रांति के दौरान की गई गलतियों को रेखांकित करते हुए देश में आर्थिक सुधारों का सूत्रपात कर सके, तो उसके पीछे 1981 में पारित इस प्रस्ताव से मिली ताकत की बड़ी भूमिका मानी जाती है। अब जब शी ने भी वह ताकत हासिल कर ली है तो सवाल उठना लाजिमी है कि वह इस ताकत का कैसा इस्तेमाल करने वाले हैं।

जवाब का कुछ संकेत पार्टी की ओर से आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही गई इस बात से मिल जाता कि यह प्रस्ताव दूसरे शतकीय लक्ष्य को प्राप्त करने में मददगार होगा। ध्यान रहे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जो दो शतकीय लक्ष्य तय कर रखे हैं, उनमें पहला है 2021 तक सामान्य रूप में समृद्ध समाज (मॉडरेटली प्रॉस्परस सोसायटी) बनना और दूसरा 2049 तक पूर्ण विकसित, अमीर और ताकतवर देश बनना। इस दूसरे लक्ष्य को हासिल करने की चीनी नेतृत्व की बेकरारी ही है जो दुनिया के तमाम बड़े देशों की चिंता का कारण बनी हुई है। चूंकि मामला अपने समाज को समृद्ध बनाने भर का नहीं, पूर्ण विकसित, अमीर और ताकतवर देश का रुतबा पाने का है, इसलिए स्वाभाविक ही पिछले कुछ समय से चीन की अंतरराष्ट्रीय नीति में एक तरह की आक्रामकता झलकने लगी है। चाहे भारत के साथ सीमा विवाद का मसला हो या हांगकांग में लोगों के लोकतांत्रिक प्रतिरोध को दबाने का, चाहे साउथ चाइना सी में कृत्रिम द्वीपों के जरिए अपने दावों को ठोस रूप देने की कोशिशों का हो या फिर अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों में अपनाई जाने वाली रणनीति का- हर जगह उसकी यह आक्रामकता अन्य पक्षों को अपनी रणनीति पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही है। यही वजह है कि दुनिया में एक नई तरह की गोलबंदी बनने लगी है, जिसे कुछ प्रेक्षक शीत युद्ध के एक नए दौर की शुरूआत के रूप में देख रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि 21वीं सदी की दूसरी चौथाई में दुनिया का स्वरूप काफी हद तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर की इन गतिविधियों के भविष्य पर निर्भर करेगा।

उप्र : योगी का हिंदुत्व नाम केवलम

राजेंद्र शर्मा

आदित्यनाथ की यह सांप्रदायिक दुहाई सबसे मुकम्मल तरीके से सामने आई, एकदम हाल के उनके मुजफ्फरनगर और कैराना के दौरे में। मुजफ्फरनगर में अपनी सभा में, जिसमें 2013 के दंगे के दोषी/आरोपी कई भाजपा नेता मंच पर योगी के अगल-बगल में थे, योगी ने दंगों के दोषियों को पीड़ित बताकर, उनकी हिमायत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पर योगी इन संघी वीरों की वकालत करने पर ही नहीं रुक गए। इससे बढ़कर उन्होंने 2013 की घटनाओं की घोर सांप्रदायिक प्रस्तुति में, इस दंगे के मुख्य पीड़ित, मुस्लिम अल्पसंख्यकों को ही हमलावर बना दिया। भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पिछली बैठक का सत्ताधारी पार्टी के शीर्ष नीति-निर्धारक निकाय की दो साल अंतराल के बाद हुई बैठक के नाते, रस्म-अदायगी के सिवा कोई खास अर्थ भले न हो, पर इस बैठक का संदेश बिल्कुल स्पष्टद्द था। अगले महीने के शुरू में होने जा रहे राज्य विधानसभाई चुनावों के अगले चक्र में, राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश में, सत्ताधारी पार्टी के चुनाव अभियान की कमान इस समय मुख्यमंत्री के पद पर आसीन, आदित्यनाथ के ही हाथों में रहने जा रही है। बैठक का मुख्य राजनीतिक प्रस्ताव, आदित्यनाथ के हाथों से रखवाया जाना, इसी का स्पष्टद्द संदेश देने के लिए था। वैसे यह स्पष्ट तो अब से कई महीने पहले ही हो गया था, जब कोविड-19 के वेग में जरा सी कमी होते ही, तीन स्तरीय पंचायत चुनावों में भाजपा के साफतौर पर पिछड़ने के बाद, आरएसएस-भाजपा की विभिन्न स्तरों पर समीक्षा की कसरत के बाद, मोदी-शाह की जोड़ी ने उत्तर प्रदेश में योगी पर ही दांव लगाने का फैसला लिया था। वैसे तभी इसका भी एलान कर दिया गया था कि योगी, अकेले चलने की अपनी हेकड़ी छोड़कर, छोटी-छोटी जाति-आधारित पार्टियों के साथ गठबंधन का और दूसरी पार्टियों से छांट-छांटकर नेताओं को भाजपा के पाले में लाने का रास्ता तैयार करेंगे। इसी हिसाब से उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में विस्तार के लिए भी, योगी की रजामंदी हासिल की गयी थी। फिर भी, इस संबंध में सिर्फ तार्किक अनुमान ही लगाया जा सकता था कि, योगी को इस राजनीतिक रूप से अति-महत्वपूर्ण चुनाव में, भाजपा का चेहरा बनाने का मोदी-योगी जोड़ी ने, असंतोष से निपटने के लिए चेहरा बदलने के अपने नियम के खिलाफ जाकर फैसला क्यों किया? बेशक, योगी के संबंध में जानने वालों के उस समय आए इस अनुमान में भी कुछ तथ्य हो सकता है कि उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाने का मतलब, चुनाव से पहले सत्ताधारी पार्टी के लिए एक नयी समस्या खड़ी हो जाना होता। सबसे अनुकूल प्रतिक्रिया की स्थिति में भी, योगी ने खुद को गोरखपुर के अपने मठ में बंद कर लिया होता और उनकी अघोषित नाराजगी ने चुनाव में संघ-भाजपा की मुश्किलें बढ़ायी होतीं। फिर भी, योगी को सत्ताधारी पार्टी द्वारा चुनाव में अपना चेहरा बनाए जाने का यह आनुषांगिक कारण ही हो सकता है, मुख्य कारण नहीं।

मुख्य कारण तो यही लगता है कि मोदी-शाह की भाजपा जानती है कि जनता की नाराजगी से बचने के लिए, उसे जिस तरह के सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की जरूरत होगी, उसके लिए भगवाधारी योगी से उपयुक्त चेहरा उत्तर प्रदेश में दूसरा नहीं हो सकता है। आखिरकार, उग्र-मुस्लिमद्वेष की राजनीति से अपनी पहचान बनाने वाले योगी ने, पांच साल के अपने मुख्यमंत्रित्व में, अपनी इस छवि को और चमकाया ही है। चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आते जा रहे हैं, वैसे-वैसे योगी, शीर्ष भाजपा नेतृत्व के उक्त आकलन को सही साबित करते जा रहे हैं। अपनी प्रचार सभाओं के पहले चक्र में ही पूर्वी उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती इलाके में योगी ने, अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों पर इसके आरोप लगाने से शुरूआत कर दी थी कि पिछली सरकारों के जमाने में तो अब्बा जान बोलने वाले, बाकी सब के हिस्से का राशन खा जाते थे। इसके साथ ही वह यह दावा जोड़ना नहीं भूले के तब के विपरीत अब तो, अब्बा जान बोलने वालों की ऐसा कुछ करने की हिम्मत ही नहीं होगी। वास्तव में, मुसलमानों को सिर चढ़ाने वाली पिछली (सपा तथा बसपा) सरकारें बनाम उन्हें उनकी जगह पर रखने वाली योगी सरकार का यही प्रस्तुतीकरण, योगी के चुनाव अभियान का मुख्य प्रचार अस्त्र ही बन गया है। बेशक, इस तर्क के विस्तार में लगातार नयी-नयी सामग्रियां जुड़ती जाती हैं, पर उससे इस बुनियादी तर्क की पुष्टिद्द ही होती है। और यह तर्क सारतः मुसलमानों को दबाकर रखने को

हिंदू हित का पर्याय बना देता है और ठीक ऐसे ही हिंदू हित के लिए, योगी और उनकी पार्टी का साथ देने की दुहाई बन जाता है। इसी तर्क का कमाल है कि योगी, कोई न कोई प्रसंग निकालकर, आए दिन अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के श्रेय की अपनी और अपनी पार्टी की दावेदारी तो दोहराते ही हैं, लेकिन इसके साथ ही यह याद दिलाना भी नहीं भूलते हैं कि किस तरह उनके विरोधी ही, मंदिर विरोधी थे! अब्बाजान प्रसंग के फौरन बाद, अयोध्या के अपने एक दौरे पर योगी ने कार सेवकों पर गोली चलाने वालों आदि, नामों से अपने विरोधियों पर हमला बोल दिया। पुनः, दीपावली के मौके पर सार्वजनिक कोष से लाखों दिए जलवाने के अपने विश्व रिकार्ड बनाने और हैलीकाप्टर से लाए गए राम-लक्ष्मण-सीता का राज्याभिषेक आदि आयोजित करने के मौके पर, योगी ने फिर अपने रामभक्त होने और दूसरों के रामद्रोही-रामभक्तद्रोही होने का बखान किया। इसी क्रम में प्रधानमंत्री मोदी के अमरनाथ धाम के आयोजन के साथ जोड़कर, योगी ने फिर, वे कब्रिस्तान की दीवारों पर पैसा खर्च करने वाले बनाम हम मंदिर बनाने, उनका रख-रखाव करो वाले की दुहाई का सहारा किया। इसी बीच, सपा नेता अखिलेश यादव के स्वतंत्रता के संघर्ष के नेताओं के नामोल्लेख के क्रम में जिन्ना का नाम ले देने भर को, योगी ने अपने हिंदुत्व में राष्टवादी छोंक लगाने का मौका बना लिया।

फिर भी, आदित्यनाथ की यह सांप्रदायिक दुहाई सबसे मुकम्मल तरीके से सामने आई, एकदम हाल के उनके मुजफ्फरनगर और कैराना के दौरे में। मुजफ्फरनगर में अपनी सभा में, जिसमें 2013 के दंगे के दोषी/आरोपी कई भाजपा नेता मंच पर योगी के अगल-बगल में थे, योगी ने दंगों के दोषियों को पीड़ित बताकर, उनकी हिमायत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पर योगी इन संघी वीरों की वकालत करने पर ही नहीं रुक गए। इससे बढ़कर उन्होंने 2013 की घटनाओं की घोर सांप्रदायिक प्रस्तुति में, इस दंगे के मुख्य पीड़ित, मुस्लिम अल्पसंख्यकों को ही हमलावर बना दिया। पर वह इतने पर भी नहीं रुके और उन्होंने यह भी बताया कि कैसे, हिंदू होने के आधार पर सांप्रदायिक गोलबंदी ही, हिंदुओं को बचा सकती है। खासतौर पर जाटों की भाजपा से मुखर नाराजगी को लक्षित कर, योगी ने बार-बार जाति की बात करने वालों पर हमला किया और लोकदल, समाजवादी पार्टी आदि, को उक्त दंगे के ही संदर्भ से, हिंदूविरोधी साबित करने पर पूरा जोर लगा दिया। बहरहाल, भाजपा का चेहरा बने आदित्यनाथ ने इतने पर भी बस नहीं की। पहले से तय कार्यक्रम से वह बगल के कस्बे, कैराना विशेष रूप से उन परिवारों से मिलने के लिए गए, जो पहले मुसलमान समाज विरोधी तत्वों के आतंक के चलते वहां से पलायन करने पर मजबूर हो गए थे और योगी के राज में सुरक्षित महसूस होने से वापस लौट आए हैं। योगी जी के हिसाब से इसे कश्मीर से पंडितों के पलायन का, उत्तर प्रदेश समकक्ष माना जा सकता है और वह भी इस महत्वपूर्ण अंतर के साथ कि योगी के राज में इन पलायनकर्ता हिंदुओं की वापसी हो गयी है, जबकि मोदी-शाह का राज भी कश्मीर में पंडितों की वापसी अब तक नहीं करा पाया है! बेशक, यह दूसरी बात है कि यह पूरा का पूरा मामला ही झूठे सांप्रदायिक प्रचार का है।

कैराना से तत्कालीन भाजपाई सांसद, हुकुम सिंह ने 2016 से पहली बार इस तरह के पलायन का प्रचार शुरू किया था, जिसे 2017 के चुनाव के समय अपने प्रचार में खुद आदित्यनाथ ने खूब उछाला भी था। पर बाद में इसका प्रचार ज्यादा बढ़ने पर, डबल इंजन सरकार ने जो जांच कराई गई, उसमें हिंदुओं के पलायन के इन दावों का कोई आधार ही नहीं मिला, जिसके बाद उक्त जांच को ही दफन कर दिया गया। उस जमाने में मीडिया आई अनेक खोजी रिपोर्टों में यह सच सामने आया था कि सैकड़ों लोगों के पलायन और डर से अपने पुश्तैनी घर बेचने की सूचियां झूठी थीं और अधिकांश मामले रोजगार की तलाश में, कस्बों से शहरों की ओर, लोगों के स्वाभाविक पलायन के थे। क्या हम उम्मीद करें कि पत्रकारों की खोजी रिपोर्टें एक बार फिर हमें बताएंगी कि इस पलायन और घर-वापसी में कितना सच है और कितना झूठ! मुजफ्फरनगर-कैराना के आदित्यनाथ के प्रचार का यह उग्र सांप्रदायिक स्वर, इसलिए और भी महत्वपूर्ण है कि यह स्वर, उस क्षेत्र में आया है जो किसान आंदोलन से हुए मंथन से, योगी की पार्टी के लिए एक तरह से प्रवेश-वर्जित क्षेत्र बन गया है। यह उग्र तथा खुली सांप्रदायिक मुद्रा इसकी संकेतक है कि जनता की नाराजगी का सामना करने के लिए मोदी-शाह की भाजपा के पास एक ही हथियार है— सांप्रदायिक गोलबंदी। जैसे-जैसे चुनाव प्रचार के क्रम में बढ़ते स्तर पर जनता की नाराजगी सामने आएगी, वैसे-वैसे भाजपा खुलकर इस मुद्रा में आती जाएगी, जिसके लिए ही उसने आदित्यनाथ को चुनाव के लिए अपना चेहरा बनाना तय किया है। इसके बावजूद, अगर कांग्रेस के महत्वपूर्ण मुस्लिम नेता, गुलाम नबी आजाद को, अपनी पार्टी के एक और वरिष्ठद्द नेता, सलमान खुर्शीद के यह कहने पर सार्वजनिक रूप से ऐतराज जताना जरूरी लगा है कि आइसिस आदि की ही तरह, हिंदुत्व परंपरागत हिंदू धार्मिक विश्वासों के नाम पर बोलने का दावा करने वाला, किंतु उनसे बिल्कुल अलग, एक पूरी तरह से राजनीतिक गढ़ंत है, तो इसे विडंबना ही कहा जाएगा। वास्तव में इस मुकाम पर आजाद का इस तरह की बहस छेड़ना कि हिंदुत्व, आइसिस आदि के मुकाबले कितना कम खतरनाक है, कांग्रेस के असंतुष्टद्द नेताओं के कथित जी-23 के, जमीनी राजनीतिक-वैचारिक लड़ाई के तकाजों से बिल्कुल कटे होने को ही दिखाता है।

नोटबंदी के पांच साल : आखिर हासिल क्या हुआ?

डॉ. अजीत रानाडे

नोटबंदी के उद्देश्यों को कभी स्पष्ट नहीं किया गया और उसके परवर्ती वर्षों में इस बारे में कुछ और बातें कही गईं। पहले इसे काले धन, जाली मुद्रा, आतंकवादी वित्त पोषण पर हमला बताया गया। इसके बाद यह अतिरिक्त आयकर को मोपिंग कर रहा था और अधिक लोगों को कर के दायरे में लाने की बात कही गई। उसके बाद कहा गया कि इसके जरिए भारत को कैशलेस ट्रांजेक्शन की ओर तेजी से आगे बढ़ने देना था। पांच साल पहले सिर्फ 4 घंटे का समय देकर देश पर नोटबंदी थोप दी गई थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 8 नवंबर, 2016 को रात 8 बजे घोषणा की कि हजार और पांच सौ रुपये के सभी नोट आधी रात से वैधानिक मुद्रा नहीं रह जायेंगे। इस घोषणा के बाद प्रभावी रूप से 86 प्रतिशत मुद्रा प्रभावी रूप से छीन ली गई जबकि उनके बदले चलने वाले नए प्रतिस्थापन नोट अभी तक तैयार नहीं थे। कई महीनों तक भारतीयों के पास अपने फंड तक पहुंच नहीं थी। शुरू में कम संख्या में जारी किए गए 2000 रुपये मूल्य वर्ग के नोटों से जनता को कोई राहत नहीं मिली क्योंकि इस नोट के 500 रुपये के छुट्टे नहीं मिलते थे। शुरूआती दिनों में बैंक की शाखाओं और एटीएम के सामने सरकार द्वारा तय 4000 रुपये की छोटी सी रकम निकालने के लिए लोगों की लंबी लाइनें लगी थीं। दंगे, बैंक स्टाफ पर हमले और लोगों की मौत के मामले भी सामने आए थे जिनमें से कुछ की मृत्यु पैसे निकालने के लिए लगी लंबी कतारों में इंतजार के दौरान हुई थी। लोगों से उनकी जमा-पूंजी छीनने का यह एक बहुत ही कड़ा और क्रूरता भरा सार्वजनिक उपाय था। 50 दिन बाद सरकार ने एक और अध्यादेश निकालकर प्रतिबंधित किए गए नोटों को अपने पास रखने को भी अपराध घोषित कर दिया। यह अध्यादेश बाद में कानून में बदल गया। विडंबना यह है कि पांच साल पहले नोटबंदी से अनजान एक नेत्रहीन व्यक्ति ने कृष्णागिरी जिले के कलेक्टर से मिलकर अपनी जीवन भर की कमाई के 65000 रुपये बदलने का अनुरोध किया। इस व्यक्ति ने भीख मांगकर ये रुपये इकठ्ठे किए थे। उसकी मांग को अस्वीकार कर दिया गया। ऐसे लाखों बचतकर्ता हैं जिनकी जीवन भर की कमाई पल भर में कागज के टुकड़ों में बदल गईं और उनकी मदद के लिए कोई भी मौजूद नहीं था। इसके बावजूद 8 नवंबर की रात के कई महीनों बाद किए सर्वेक्षण में जनता ने प्रधानमंत्री के इस कदम का जबरदस्त समर्थन किया था।

देश की जनता खास तौर पर गरीब वर्ग को लग रहा था कि सरकार, इस कदम से बड़ी मछलियों को अपने जाल में फंसा लेगी। प्रधानमंत्री का संदेश यह था कि लोगों के पास जमा नगदी काला धन है और सरकार के इस अचानक किए गए सर्जिकल हमले से काला धन जमाखोर आश्चर्य में पड़ जाएंगे। यदि यह धारण सही निकलती तो बंद किए नोटों का अच्छा-खासा भाग बैंकों में जमा होना चाहिए था लेकिन नोटबंदी के 60 दिनों के भीतर ही यह भ्रम टूट गया था और बाद में अगस्त 2017 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने भी इस बात की पुष्टि की कि करीब 99 प्रतिशत राशि नकदी में बदल दी गई है। बैंकिंग सिस्टम में विमुद्रीकृत राशि की यह वापसी बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं थी। ऐसा इसलिए है क्योंकि पिछले कई वर्षों में मारे गए आयकर छापे और प्रवर्तन निदेशालय द्वारा की गई कार्रवाइयों से सरकार को पता चला था कि गैर कानूनी तरीके से कमाई गई संपत्ति का लगभग 93 प्रश बेनामी भूमि, सोने, अचल संपत्ति, स्टॉक और विदेशी खातों के रूप में था। इसलिए केवल 7 प्रतिशत काला धन नकदी के रूप में बैठता है। ये सारे आंकड़े सरकार के अपने हैं। उच्च मूल्य के नोटों को बंद करना भी एक अच्छा विचार है। ओईसीडी, यूरोपियन

सेंट्रल बैंक और अन्य लोगों के अलावा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री केन रोगोफ ने भी इससे सहमति जताई है लेकिन उच्च मूल्य के नोटों को बंद करने के लिए उनका समर्थन 12 से 18 महीने की अग्रिम सूचना के साथ था और निश्चित रूप से यह उच्च मूल्य के नए नोट जारी करने के लिए तो नहीं ही था। अमेरिका में सबसे अधिक मूल्य का नोट 100 डॉलर का है जो उनकी प्रति व्यक्ति आय के मूल्य का 016 प्रतिशत है। 100 डॉलर के अधिकांश नोट वास्तव में अमेरिका के भीतर नहीं चल रहे हैं। उनका चलन विदेशों में ज्यादा है। भारत में 2000 रुपये का नोट देश की प्रति व्यक्ति आय का 1.3 प्रतिशत दशार्ता है। यह अमेरिका के अनुपात से 8 गुना अधिक है। चूंकि यह अमेरिका की तुलना में सापेक्ष दृष्टि से 8 गुना अधिक है तो अमेरिकी मानकों के अनुसार, हमारा उच्चतम मूल्य वर्ग 2000 रुपये का 1/8 यानी करीब 350 रुपए होना चाहिए। इसलिए अधिकतम 500 रुपये का नोट पर्याप्त होना चाहिए। यदि नोटबंदी का बड़ा उद्देश्य काले धन पर रोक लगाना था तो स्पष्ट रूप से सरकार इस उद्देश्य में विफल रही है।

संयोग से 8 नवंबर, 2016 से पहले 18 लाख करोड़ की नकदी प्रचलन में थी और पांच साल बाद 28.3 लाख करोड़ की नकदी प्रचलन में है। मतलब नकदी के प्रचलन ने 57.5 प्रतिशत की छलांग लगाई है अर्थात लगभग 10 प्रतिशत प्रति वर्ष की वृद्धि हुई है जो वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि से अधिक है। उच्च मुद्रास्फीति के इस वर्तमान दौर में जनता के पास मौजूद नकदी असाधारण रूप से अधिक है। यह स्थिति इलेक्ट्रॉनिक भुगतान में भारी वृद्धि और यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) के व्यापक उपयोग के बावजूद है। यूपीआई के जरिए हर महीने 4 अरब से अधिक का लेनदेन हो रहा है और सालाना 25 अरब का लेनदेन होगा। चीन में करीब 15 अरब का लेनदेन हो रहा है। हालांकि यह तर्क दिया जा सकता है कि भारत में डिजिटल यात्रा शुरू करने के लिए झटके की आवश्यकता नहीं थी। जिस गति से डिजिटल लेन-देन को भारत में अपनाया गया है उससे यह लगता है कि देर सबेर इस प्रणाली को जनता स्वीकार कर ही लेती। एसीआई वर्ल्डवाइड नामक अमेरिकी कंपनी के एक अध्ययन के अनुसार, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यूपीआई की तरह का तत्काल भुगतान का हिस्सा (मूल्य के हिसाब से) करीब 15.6 प्रश है। यहां तक कि भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट से भी पता चलता है कि रिटेल नॉन-कैश, इंस्टेंट पेमेंट सिस्टम में अभी भी सुधार की काफी संभावना है। निस्संदेह डिजिटल भुगतान को अपनाने की गति सुपरफास्ट है लेकिन इसके लिए नोटबंदी को कोई श्रेय नहीं दिया जाना चाहिए। नोटबंदी के उद्देश्यों को कभी स्पष्ट नहीं किया गया और उसके परवर्ती वर्षों में इस बारे में कुछ और बातें कही गईं। पहले इसे काले धन, जाली मुद्रा, आतंकवादी वित्त पोषण पर हमला बताया गया। इसके बाद यह अतिरिक्त आयकर को मोपिंग कर रहा था और अधिक लोगों को कर के दायरे में लाने की बात कही गई। उसके बाद कहा गया कि इसके जरिए भारत को कैशलेस ट्रांजेक्शन की ओर तेजी से आगे बढ़ने देना था। फिर बताया गया कि यह फिनटेक कंपनियों (वित्तीय कार्यों को पूरा करने के लिए टेक्नालॉजी की मदद लेने वाली कंपनियां) के पारिस्थितिकी तंत्र और वित्तीय प्रणाली में नवाचार को सक्षम करने के लिए किया गया था। इसमें से किसी को भी स्वीकार नहीं किया गया है। कुल मिलाकर नोटबंदी के ये सारे उद्देश्य बाद में जोड़े गए हैं जो नोटबंदी के औचित्य को साबित करने के लिए हैं। निर्विवाद रूप से नोटबंदी का असर अभी भी जारी है। सबसे पहले तो लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। दूसरा, अनौपचारिक क्षेत्र की अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई। तीसरा, इस फैसले का श्रेय लेने वाले प्रधानमंत्री की लोकप्रियता कम नहीं हुई। यह उनके करिश्मे की ताकत है। चौथा, डिजिटल भुगतान में भारी वृद्धि के बावजूद नकदी अपनी पूरी ताकत के साथ प्रचलन में वापस आ गई है। पांचवां, कोविड-19 महामारी के वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में लगातार गिरावट आई और सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में निवेश स्थिर रहा। अंत में, कुल अर्थव्यवस्था के एक हिस्से के रूप में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सिकुड़ गई है हालांकि इसके कई कारण हैं जिन पर अलग से चर्चा की जानी चाहिए।

ईवी दौड़ में भारत की गति धीमी

के रवींद्रन

हाल के महीनों में पेट्रोल की कमी का सामना करना पड़ा है, ने ईवी बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि देखी, जो वाहन बिक्री का 22 प्रतिशत तक पहुंच गया। 2030 में गैर-इलेक्ट्रिक, गैर-हाइब्रिड वाहनों पर प्रतिबंध लगाने के अपने कदम से पहले, सरकार ने स्थानीय वाहन निमार्ताओं के लिए हर साल शून्य-उत्सर्जन वाहनों के बढ़ते प्रतिशत को बेचने की आवश्यकता की भी घोषणा की। जबकि दुनिया इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के लिए तेज गति से आगे बढ़ रही है, ऐसा लगता है कि भारत ने एक या दो गियर नीचे कर लिए हैं, जिसके परिणामस्वरूप देश दुनिया भर के प्रमुख ईवी बाजारों के विकास अनुमानों में भी नहीं है। यहां तक कि इंडिया एनर्जी स्टोरेज एलायंस की एक आशावादी रिपोर्ट का अनुमान है कि 2027 तक भारत में (ईवी) बाजार का आकार 63 लाख यूनिट मार्क प्रति वर्ष होगा। गौरतलब है कि इनमें से अधिकांश वाहन दोपहिया वाहन होंगे, जहां अपनाने की दर काफी बेहतर है। लेकिन समग्र भारतीय ईवी अपनाने की दर अगले दस वर्षों में वैश्विक स्तर पर अनुमानित 72 प्रतिशत और उसके अगले दशक में लगभग 100 प्रतिशत की तुलना में बहुत कम है। ईवी कारों के लिए रोडमैप कुछ हद तक स्पष्ट हो गया जब मारुति के अध्यक्ष आरसी भार्गव ने हाल ही में संकेत दिया कि उनकी कंपनी मांग की कमी के कारण इलेक्ट्रिक वाहन दौड़ में शामिल होने की जल्दी में नहीं है। हालांकि सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों पर जोर दे रही है, लेकिन कंपनी का कहना है कि वह इस सेगमेंट में तभी प्रवेश करेगी, जब ग्राहकों के लिए वहन करने की क्षमता के साथ-साथ चार्जिंग के लिए बुनियादी ढांचे को संतोषजनक स्तर तक विकसित किया जाएगा।

जबकि अन्य निमार्ता, जैसे महिंद्रा, टाटा आदि संक्रमण की तैयारी कर रहे हैं, आंदोलन को अभी तक कर्षण प्राप्त करना बाकी है क्योंकि ईवी अपनाने के लिए शर्तों को पूरा करने के मामले में बहुत कुछ आवश्यक है। सरकार ने इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए फास्टर एडॉप्शन एंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल योजना के दूसरे चरण को दो साल बढ़ाकर 31 मार्च, 2024 कर दिया है। लेकिन नतीजे उम्मीद के मुताबिक नहीं रहे।

वैश्विक स्तर पर, ईवी की बिक्री इस साल 7 मिलियन कारों को पार करने का अनुमान है, 2020 में 3.2 मिलियन की बिक्री की दोगुनी से भी यह अधिक है। प्रमुख ऊर्जा सलाहकार रिस्टैड एनर्जी का अनुमान है कि प्लग-इन हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहन (पीएचईवी) और बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन (बीईवी) सहित ईवी, खरीदी गई प्रत्येक 10 नई कारों में से एक के लिए जिम्मेदार होगी, जिसकी वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी 10.3 प्रतिशत है। पिछले साल यह 5.3 प्रतिशत थी। यह बाजार हिस्सेदारी एक नया वैश्विक रिकॉर्ड होगा, पहली बार ईवी की बिक्री ने कुल वाहन बिक्री के दोहरे अंकों के हिस्से के लिए जिम्मेदार है, जो कि 2027 में लगभग 69 मिलियन होने का अनुमान है। ईवीएस की बिक्री ने सितंबर में ऊपर की ओर बढ़ना जारी रखा, लगभग 700,000 इकाइयों की बिक्री हुई। ईवी बिक्री के मामले में शीर्ष 10 देशों का वैश्विक वॉल्यूम में 83 प्रतिशत का दबदबा है। सितंबर लगातार दूसरा महीना है, जिसमें वाहनों की बिक्री में इलेक्ट्रिक वाहनों की बाजार हिस्सेदारी 10 प्रतिशत को पार कर गई है। इसके साथ, 2021 की पहली तीन तिमाहियों के दौरान कुल ईवी बिक्री लगभग 4.72 मिलियन वाहनों तक पहुंच गई है। रिस्टैड एनर्जी के ऊर्जा संक्रमण विश्लेषक अभिषेक मुरली के अनुसार, चीन में व्यापक रूप से अपनाने के कारण दुनिया भर में ईवी बिक्री वृद्धि की तीव्र दर बड़े हिस्से में है। अकेले सितंबर 2021 में चीन में 340, 000 से अधिक नए ईवी बेचे गए, जो वैश्विक बिक्री का लगभग आधा है। चीन में ईवी बाजार हिस्सेदारी सितंबर में 19.5 फीसदी तक पहुंच गई। पिछले साल, बीजिंग में अधिकारियों ने सभी वाहनों की बिक्री के 40 फीसदी ईवी शेयर को लक्षित करने वाली एक कार्य योजना की घोषणा की, 2025 तक 20 प्रतिशत के पहले घोषित लक्ष्य को दोगुना कर दिया। हालांकि चीन वैश्विक संख्या वृद्धि का नेतृत्व कर रहा है, कई अन्य देशों में उच्च ईवी अपनाने की दर देखी जा रही है। उदाहरण के लिए, नॉर्वे ने अपने 100 प्रतिशत शून्य-उत्सर्जन वाहन लक्ष्य की ओर बढ़ना जारी रखा, जिसमें ईवी बाजार हिस्सेदारी सितंबर के दौरान बेचे गए सभी वाहनों के 90 प्रतिशत को पार कर गई। इसके अलावा, जबकि टेस्ला सबसे ज्यादा बिकने वाली निमार्ता कंपनी बनी हुई है, चीनी ऑटोमोटिव कंपनियां बाजार में साहसपूर्वक आगे बढ़ रही हैं। जर्मनी ने सितंबर में यूरोप में सबसे अधिक ईवी बेचे। 56,000 बिक्री दर्ज की। ईवी का भी जर्मन बाजार हिस्सेदारी में 30 प्रतिशत का योगदान है, जबकि पेट्रोल से चलने वाले वाहनों की बिक्री का प्रतिशत 38 प्रतिशत पर स्थिर रहा। फ्रांस ने यूरोप में दूसरे स्थान पर कब्जा कर लिया, करीब 29,000 ईवी बेचे गए क्योंकि देश 1 मिलियन कुल ईवी बिक्री के अपने 2022 लक्ष्य को प्राप्त करने के करीब पहुंच गया। फ्रांसीसी सरकार ने अगले साल जनवरी से बीईवी और पीएचईवी पर सब्सिडी कम करने की अपनी योजना में देरी की, उन्हें छह महीने के लिए जुलाई 2022 तक बढ़ा दिया। यूके, जिसे हाल के महीनों में पेट्रोल की कमी का सामना करना पड़ा है, ने ईवी बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि देखी, जो वाहन बिक्री का 22 प्रतिशत तक पहुंच गया। 2030 में गैर-इलेक्ट्रिक, गैर-हाइब्रिड वाहनों पर प्रतिबंध लगाने के अपने कदम से पहले, सरकार ने स्थानीय वाहन निमार्ताओं के लिए हर साल शून्य-उत्सर्जन वाहनों के बढ़ते प्रतिशत को बेचने की आवश्यकता की भी घोषणा की।

पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज ने शोएब अख्तर ने बताया

सेमीफाइनल में बाबर आजम ने की कौन सी गलती

नई दिल्ली। पाकिस्तान टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया से हारकर बाहर हो गया है। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने बाबर आजम की कप्तानी पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा है कि बाबर आजम अभी युवा कप्तान हैं और इसी वजह से वह दबाव में बिखर गए। वह खुद को शांत और फोकस नहीं रख सके। गौरतलब है कि गुरुवार को खेले गए दूसरे सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान को 5 विकेट से हराकर फाइनल में जगह बनाई थी। शोएब ने अपने यू-ट्यूब चैनल पर बातचीत के दौरान कहा, पाकिस्तानी टीम डरी नहीं थी, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के सामने घबरा गई। आपको यह मानना होगा कि हमारा कप्तान अभी नया और युवा है। वह खुद को स्थिर और शांत नहीं रख सके, जबकि दूसरी तरफ ऑस्ट्रेलिया एक परिपक्व टीम थी, जिसने अपने अनुभव का पूरा फायदा उठाया। वह घबराई नहीं और आसानी से खेलती रही। वहीं पाकिस्तानी टीम भी डरी नहीं, लेकिन घबरा जरूर गई। बाबर आजम अभी नए कप्तान हैं, लेकिन उन्होंने छह में से पांच मुकाबले जीते। पूर्व तेज गेंदबाज ने कहा,मुझे ऐसा लगता है कि इस वर्ल्ड कप में पाकिस्तान को जीत हासिल करनी चाहिए थी। यह वर्ल्ड कप जीता जा सकता था। हमें शायद ऐसा आसान मौका दोबारा ना मिले। बेशक हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की, लेकिन इस मुकाबले में यह कोशिश काफी नहीं थी। हमसे बेहतर टीम ने मुकाबला जीता।

आरोन फिंच ने न्यूजीलैंड के खिलाफ खिताबी मुकाबले से पहले भरी हुंकार, कहा, हमारा फाइनल में पहुंचना सरप्राइज नहीं

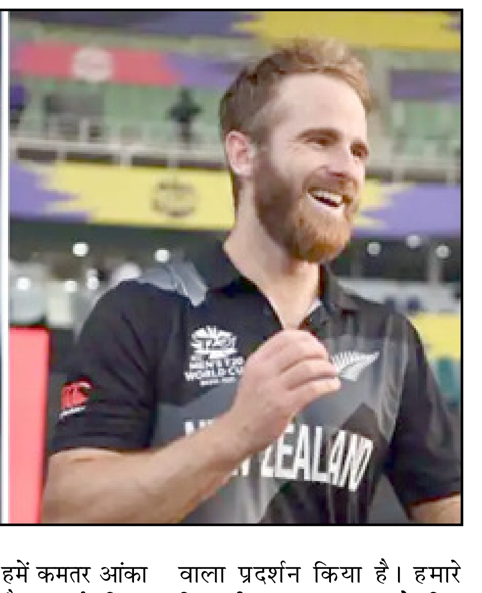

नई दिल्ली, एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान आरोन फिंच ने टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल से पहले बड़ा बयान दिया है। उनका का मानना है कि उनकी टीम आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंचना आश्चर्यजनक नहीं है और इतनी दूरी तय करने के बाद इस फॉर्मेट में पहली बार चैम्पियन बनने के लिए उनकी टीम के पास जरूरी टैलेंट है। ऑस्ट्रेलिया इस साल खेली गई सभी सीरीज में हार का सामना कर के इस ग्लोबल प्रतियोगिता में पहुंचा था। टीम को इस टूनामेंट से पहले न्यूजीलैंड, वेस्टइंडीज और बांग्लादेश से हार का सामना करना पड़ा था। उसने हालांकि गुरुवार को दूसरे सेमीफाइनल में पाकिस्तान को पांच विकेट से हराकर खिताबी मुकाबले में जगह पक्की की, जहां उसका सामना न्यूजीलैंड से होगा। फिंच से फाइनल की पूर्व संध्या पर कहा, यह अप्रत्याशित नहीं है। हम इस टूनामेंट को जीतने की कोशिश करने के लिए एक स्पष्ट योजना के साथ यहां आए हैं। हमने हमेशा महसूस किया कि हमारे पास ऐसा करने की प्रतिभा और खिलाड़ियों का शानदार कॉम्बिनेशन है। बहुत से लोगों ने टूनामेंट से पहले हमें कमतर आंका था। ऐसे में हमने जैसा प्रदर्शन किया वह वास्तव में प्रभावशाली रहा है। सभी ने वास्तव में अच्छी तैयारी की है और किसी न किसी समय मैच में टीम की पकड़ मजबूत करने वाला प्रदर्शन किया है। हमारे खिलाड़ी कल (फाइनल) के लिए तैयार हैं।

कप्तान ने कहा, हमारे अंदर काफी आत्मविश्वास था, हम जिस तरह से तैयारी कर रहे थे, उसे लेकर हम आश्वस्त थे, हमारी रणनीति हमारा साथ दे रही थी। हम टूनामेंट जीतने के लिए एक स्पष्ट योजना के साथ आए हैं और हमें अभी भी लगता है कि हमारे पास ऐसा करने के लिए टीम है। वनडे वर्ल्ड के खिताब को पांच बार अपने नाम करने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम ने टी-20 वर्ल्ड कप का एक भी खिताब नहीं जीता है। फिंच को उम्मीद है कि रविवार को उनकी टीम इसमें बदलाव कर सकती है। उन्होंने कहा, बिल्कुल, यह वह चीज है जिसे अतीत में हम हासिल नहीं कर पाए है। लेकिन यह तथ्य है कि हम फाइनल में हैं, यह हमें इसमें सुधार करने का एक मौका मिला है। 34 साल के सलामी बल्लेबाज ने कहा, यह शानदार मैच होगा। न्यूजीलैंड शानदार टीम है, वे पिछले छह सालों में सभी (आईसीसी टूनामेंट) फाइनल में पहुंचे हैं। हम मैच का इंतजार कर रहे हैं। न्यूजीलैंड को खतरनाक टीम करार देते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें कम करके नहीं आंका जा सकता। उनके पास काफी क्षमता, अनुभव और कौशल है, इसलिए मुझे थोड़ा भी आश्चर्य (न्यूजीलैंड के फाइनल में पहुंचने पर) नहीं हुआ। न्यूजीलैंड की टीम में काफी प्रतिभा है, वह लंबे समय से गेंद के साथ पावरप्ले में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली टीम रही हैं, यह एक चुनौती होगी।

फिंच ने यह भी कहा कि वह टॉस को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं हैं क्योंकि किसी समय, आपको पहले बल्लेबाजी करते हुए मैच जीतना होता है। जाहिर है कि इस टूनामेंट और इससे पहले आईपीएल में यह चलन रहा है कि लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम मैच जीतती है। आखिरी मुकाबले में, मैं वास्तव में टॉस हारने की उम्मीद कर रहा हूं। मुझे पहले बल्लेबाजी करने से गुरेज नहीं है लेकिन मैं टॉस जीत गया (पिछले मैचों में) था। मुझे लगता है कि अगर हम बड़ा स्कोर खड़ा कर सकते हैं, तो हम लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम पर दबाव डाल सकते हैं।

सचिन तेंदुलकर ने बताया, आखिर डेविड वॉर्नर ने पाकिस्तान के खिलाफ आउट होने के बाद क्यों नहीं लिया डीआरएस

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया ने भले ही पाकिस्तान को हराकर टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। लेकिन सेमीफाइनल मैच में डेविड वॉर्नर के जल्दी आउट होने के बाद ऑस्ट्रेलिया की मैच में वापसी की उम्मीदें कम हो गई थी। पारी की शुरूआत में आरोन फिंच, मिशेल मार्श और स्टीव स्मिथ के जल्दी आउट होने के बाद वॉर्नर ने एक छोर संभाला। 49 रन पर आउट होने से पहले वो बेहतरीन फॉर्म में नजर आए। शादाब खान की गेंद पर वो विकेट के पीछे आउट हुए। एक्शन रिप्ले में साफ दिख रहा खा कि वॉर्नर के बल्ले से गेंद नहीं लगी थी। लेकिन वॉर्नर इसका अनुमान लगाने में नाकाम रहे और बिना डीआरएस लिए पवेलियन चले गए। दुनिया के महान क्रिकेटर और भारत के पूर्व बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने एक फैसबुक वीडियो पर वॉर्नर के आउट होने के बारे में बात की। उन्होंने स्वीकार किया कि जब उन्होंने रिप्ले देखा तो वो भी हर किसी की तरह हैरान थे। तेंदुलकर ने कहा, उनका आउट होना आश्चर्यजनक था। सभी ने अपील की अपील की और यहां तक कि अंपायर मे भी उन्हें आउट दे दिया।

उन्होंने आगे कहा,कई बार बल्लेबाज गेंद को छूता है और उसे इसका एहसास नहीं होता। कभी-कभार गेंद बल्ले से नहीं लगती, लेकिन विरोधियों और अंपायर के मजबूत प्रतिक्रियाओं के असर के कारण वह वापस लौट जाता है। मुझे लगता है कि वॉर्नर के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा। लेकिन जब मैंने एक्शन रिप्ले देखा, तो काफी हैरान था। वॉर्नर के आउट होने के बाद मैथ्यू वेड के नाबाद 41 और मार्कस स्टोइनिस के नाबाद 40 रन की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने 177 रनों के लक्ष्य को पांच विकेट खोकर हासिल किया और फाइनल में जगह बनाई।

अनुष्का शर्मा-विराट कोहली को लेकर फैन ने बनाया मजेदार मीम, युवराज सिंह ने किया शेयर

नई दिल्ली। विराट कोहली की अगुवाई में आखिरी टी-20 वर्ल्ड कप खेलने उतरी भारतीय टीम का सफर खत्म हो चुका है। यूएई और ओमान में जारी इस टूनामेंट में भारत को पहले पाकिस्तान और फिर न्यूजीलैंड से हार का सामना करना पड़ा, जिसकी वजह से वह सुपर 12 राउंड से आगे ही नहीं बढ़ पाई। भारत के इस टूनामेंट से बाहर होने के बाद भारतीय फैन्स ने पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह की कमी होने की बात कही थी, साथ ही उनको लेकर सोशल मीडिया पर जमकर मीम्स भी बनाए थे। इन्हीं में से एक मीम को अब युवराज ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया है। इसमें विराट के साथ-साथ अनुष्का शर्मा भी नजर आ रही हैं। युवराज ने जो मीम शेयर किया है, उसमें अनुष्का को लग रहा है कि विराट किसी लड़की के खयालों में खोए हुए हैं। लेकिन यहां ऐसा नहीं है। यहां विराट सोच रहे हैं कि अगर युवराज सिंह होते तो मिडिल ऑर्डर मजबूत होता। बता दें कि इस वर्ल्ड कप में पाकिस्तान और न्यूजीलैंड जैसी मजबूती टीमों के सामने भारतीय बल्लेबाज ज्यादा कुछ खास नहीं कर सके, जिसकी वजह से टीम को हार का सामना करना पड़ा। युवराज ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर करते हुए ऐलान किया था कि वे फरवरी में क्रिकेट के मैदान पर वापसी करेंगे।

ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड में से कौन करेगा खिताब पर कब्जा, केविन पीटरसन ने लिया इस टीम का नाम

नई दिल्ली। सेमीफाइनल मुकाबले में अपने से कहीं मजबूत पाकिस्तान और इंग्लैंड जैसी टीमों को धूल चटाकर फाइनल मुकाबले में जगह बनाने वाली न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया की टीमें पहले खिताब की तलाश में हैं। इन दोनों पड़ोसी देशों ने जिस अंदाज में अपने सेमीफाइनल मुकाबले जीते थे, उसे देखते हुए रिंग ऑफ फायर में एक और जोरदार मैच की उम्मीद की जा सकती है। इस मैच में अपनी फेवरेट टीम को लेकर कई दिग्गज भविष्यवाणी कर चुके हैं और अब इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन ने भी भविष्यवाणी करते हुए ऑस्ट्रेलिया टीम को खिताब जीतने के लिए फेवरेट बताया है।

उन्होंने ट्विटर पर अपना ब्लॉग शेयर करते हुए लिखा, न्यूजीलैंड क्रिकेट के साथ सबकुछ ठीक है, लेकिन मैं ऑस्ट्रेलिया पर दांव खेलूंगा। इतिहास बताता है कि जब आप इन दोनों को एक-साथ बड़े फाइनल में देखते हैं तो ऑस्ट्रेलियाई टीम हर बार कीवियों को उड़ा देती है। 2015 में मेलबर्न में 50 ओवरों के वर्ल्ड कप फाइनल में भी ऐसा ही हुआ था। रविवार को ऑस्ट्रेलिया को ट्रॉफी उठाते हुए देखकर मुझे बिल्कुल भी अचंभा नहीं होगा।

दोनों टीमों के बीच अब तक जितने भी टी-20 इंटरनेशनल मुकाबले खेले गए हैं, उसमें हमेशा ऑस्ट्रेलिया का मौजूदा वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियन पर दबदबा रहा है। लेकिन न्यूजीलैंड ने भारत में 2016 वर्ल्ड कप के ग्रुप स्टेज में अपनी एकमात्र भिड़ंत में जीत हासिल की थी। दोनों टीमें अबतक 14 बार एक दूसरे के खिलाफ मैदान पर उतरी हैं, जिसमें से 9 बार बाजी कंगारू टीम ने मारी है, जबकि महज पांच में ही जीत कीवी टीम के हक में रही है।

मतदाता बनने को विशेष कैंप में एकत्र हुए युवा

पोलिंग बूथों पर लगाए गए शिविरों का सीडीओ, एसडीएम ने किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

भदोही। विधानसभा निर्वाचक नामावलियों के अभियान के तहत आज विशेष कैंप लगाए गए। इन कैंपों में नाम जोडने, घटने और संसोधन के लिए फार्म जमा करवाए गए। कई केंद्रों पर नये मतदाताओं की भीड़ देखने को मिली। सीडीओ भानुप्रताप सिंह ने बताया कि एक जनवरी 2022 तक 18 वर्ष की उम्र पूरी करने वालों का नाम जोड़ा जा रहा है। पोलिंग स्टेशनों पर लगाए गए कैंपों का उप जिलाधिकारी के साथ निरीक्षण किया गया। अधिकारी द्वय ने मतदाता सूचीपुनरीक्षण कैंप की व्यवस्थाओं काजायजा लेते हुए युवा मतदाताओं से बातचीत की और बीएलओ से डोर टू डोर सर्वेक्षण की जानकारी ली। सीडीओ ने बीएलओ से कहा कि 18 वर्ष की उम्र पूरी करने वाले सभी लोगों का नाम मतदाता सूची में जोड़ा जाए। सीडीओ ने बीएलओ से उनकी ट्रेनिंग की जानकारी ली। नाम घटाने और संसोधन वालों का सत्यापन कराने का निर्देश दिया। कहा कि महिलाओं और 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहे युवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने बीएलओ को निर्देश दिए कि सर्वे का अंकन पंजिका में अवश्य करें। दिव्यांग व वृद्ध मतदाताओं की सूची अलग से भी तैयार करें। सुपरवाइजर, बीएलओ से समन्वय कर उनकी पंजिकाएं दुरुस्त कराएं। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कहा कि सभी बीएलओ यह सुनिश्चित कराएं की नये मतदाता फार्म की प्रत्येक एंट्री प्रॉपर भरें, आवश्यकतानुसार उनकी मदद करें। फार्म के साथ सभी जरूरी दस्तावेज जमा कराएं।

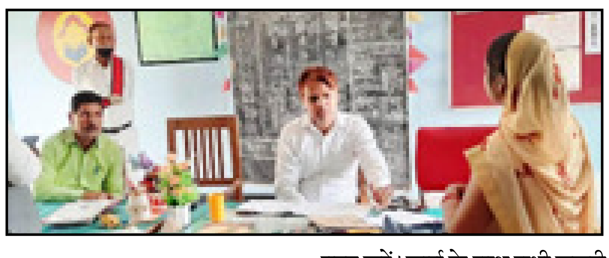

कीवी हेड कोच गैरी स्टीड ने दिए संकेत, फाइनल में यह खिलाड़ी कर सकता है डेवोन कॉनवे को रिप्लेस

नई दिल्ली। केन विलियमसन की अगुवाई में न्यूजीलैंड शानदार प्रदर्शन करके टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंच चुकी है और खिताब से एक कदम दूर खड़ी है। टीम ने सेमीफाइनल में दुनिया की नंबर वन इंग्लैंड टीम को जिस तरह धूल चटाई, वह काबिले-तारीफ है। इस मैच में न्यूजीलैंड की तरफ से डेवोन कॉनवे ने मुश्किल समय में 46 रनों की अहम पारी खेलकर टीम को जिताने में अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि चोट की वजह से कॉनवे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाले फाइनल मुकाबले से बाहर हो चुके हैं और उनकी जगह अब प्लेइंग इलेवन में टिम सीफर्ट ले सकते हैं। इस बात के संकेत टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने दिए हैं। ईएसपीएन क्रिकइंफो से बात करते हुए उन्होंने कहा, ₹हर कोई ओस की बात कर रहा है, लेकिन अब यह उतना फर्क नहीं पैदा कर रही, जितना कुछ दिनों पहले तक देखने को मिल रहा था। हालांकि ग्लेन फिलिप्स भी विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभाल सकते हैं, लेकिन उनके कमर को देखते हुए हम यह जोखिम नहीं लेना चाहते और उन्हें आउटफील्ड में ही रखना बेहतर होगा। लिहाजा विकेट के पीछे टिम सीफर्ट नजर आ सकते हैं।

स्टीड ने कहा, ₹असल में टॉस बड़ा दिलचस्प हो सकता है, हालांकि अबु धाबी में खेले गए पिछले तीन मैच और दुबई के पिछले मैच में भी ओस न के बराबर थी। सभी लोग ओस को लेकर बात कर रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दिनों से ये उतना फर्क पैदा नहीं कर रही। लिहाजा मुझे लगता है कि अगर हम पहले बल्लेबाजी करते हैं और स्कोर बोर्ड पर एक बड़ा स्कोर खड़ा कर देते हैं तो फिर फाइनल में सामने वाली टीम पर दबाव बन सकता है। हालांकि मैं यह मानता हूं कि अगर टॉस हमारे पक्ष में गया तो फिर 50% मैच हमारी ओर झुक सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि आप टॉस जीत जाएं, इसलिए हमें दोनों ही चीजों के लिए तैयार रहना होगा।

शाहिद अफरीदी ने की भविष्यवाणी, अगले साल टी-20 वर्ल्ड कप जीत सकता है पाकिस्तान

नई दिल्ली। पाकिस्तान का टी-20 वर्ल्ड कप में सफर गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के हाथों सेमीफाइनल में मिली हार के साथ ही खत्म हो गया। पाकिस्तान ने टी-20 वर्ल्ड कप में ग्रुप स्टेज में शानदार प्रदर्शन किया था। उसने ग्रुप स्टेज में भारत और न्यूजीलैंड जैसी दिग्गज टीमों को मात दी थी। पाकिस्तान एकमात्र ऐसी टीम थी जो बिना हारे सेमीफाइनल में पहुंची थी। पाकिस्तान के पूर्व स्टार ऑलराउंडर शाहिद अफरीदी का मानना है कि पाकिस्तान अगले साल टी-20 वर्ल्ड कप जीत सकता था। अफरीदी ने कहा ने ट्वीट कर लिखा, लड़कों आपने बेहतरीन फाइट देकर हमें गौरवान्वित किया, पूरे टूनामेंट के दौरान शानदार प्रयास किया। ऑस्ट्रेलिया ने अच्छा खेला। मुझे वास्तव में लगता है कि यह टीम अगले साल टी-20 वर्ल्ड कप जीत सकती है। हम सभी को खिलाड़ियों का समर्थन करना जारी रखना होगा। पाकिस्तान की सेमीफाइनल में हार के बाद उन्होंने ये ट्वीट किया। मैच के दौरान एक समय लग रहा था कि पाकिस्तान आराम से फाइनल में पहुंच जाएगा। लेकिन आखिरी ओवरों में मार्कस स्टोइनिस और मैथ्यू वेड ने तूफानी पारी खेलकर पाकिस्तान से जीत छीन ली।

वेड ने शाहीन अफरीदी के ओवर में लगातार तीन छक्के जड़कर टीम को 19 वें ओवर ही मैं ही जीत दिला दी। पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 176 रन बनाए थे। टी-20 वर्ल्ड 2021 से बाहर होने के बाद पाकिस्तान अब तीन मैचों की टी-20 सीरीज और दो टेस्ट खेलने के लिए दुबई से बांग्लादेश जाएगा।

भदोही को गंगा पर दो पुल और रेलवे ओवरब्रिज की सौगात

सूबे के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कालीननगरी को दी तीन परियोजनाओं की सौगात

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज(भदोही)। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य आज जनपद में थे। उन्होंने जनपद की तीन योजनाओं की सौगात सौंपते हुए कहा कि हम जो कहते हैं, वह करते भी हैं। उन्होंने जनपदवासियों को रामपुर घाट से मीरजापुर को जोडने के लिए गंगा नदी पर पुल, माधोसिंह रेलवे ओवर ब्रिज और डेंगूरपुर घाट पर पुल निर्माण कराने का ऐलान किया। कहा कि उक्त तीनों बड़ी परियोजनाओं के लिए विभाग को निर्देशित किया जा चुका है।

केशवप्रसाद मौर्य ने कहा कि जनपद भदोही अपनी एक नयी पहचान के साथ आगे बढ़ रहा है। जनपद के जनप्रतिनिधि सांसद, विधायक पूरी निष्ठा के साथ सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने का कार्य कर रहे है। इससे पहले की परियोजनाओं पर सत्ताधारी दलों की बेइमानी का ग्रहण लग जाता था। यदि कोई परियोजना जनता के लिए सौंपी जाती थी तो राजनीति के अपराधीकरण की भेंट चढ़ जाती थी। हमारी सरकार ने अपने कार्यकाल में प्रदेश भर में सडकों का जाल बिछाया है। एक महत्वपूर्ण बात यह रही कि राष्ट्रीय राजमार्ग होने के बावजूद भी प्रयागराज से लेकर वाराणसी तक भीषड़ जाम का सामना लोगों को करना पड़ता था। हमारी सरकार आने के बाद भदोही से प्रयागराज और वाराणसी तक का सफर दो घंटे की बजाय मात्र 50 मिनट का हो गया है।

आवाम को 15 नहीं अब 100 फीसद मिलता है योजनाओं का लाभः केशवप्रसाद मौर्य

कार्यक्रम में केशव प्रसाद मौर्या को गदा भेंट करते जिपं अध्यक्ष अनिरूद्ध त्रिपाठी

सांसद रमेशचंद बिंद ने कहा कि जनता ने 2019 में हमारी सरकार जो विश्वास दिखाया है, हमने उस पर खरा उतरने का प्रयास किया है। 2022 के चुनाव में भी हम पूर्ण बहुमत से सरकार बनाने जा रहे है। विधायक औराई दीनानाथ भाष्कर ने कहा कि किसी अन्य जनपद से भदोही में सफाई कर्मचारियों का समायोजन नहीं होगा। बल्कि यहां पर प्रयासरत अभ्यर्थियों का चयन हमारी सरकार की प्राथमिकता में शामिल है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी सरकार ने जनता को इतनी सुविधाएं मुहैया कराई हैं कि आज कटाई के लिए मजदूर नहीं मिलते।

विधायक भदोही ने कहा कि कंधिया एवं सुरियावॉ में ओवर ब्रिज का निर्माण जल्द ही प्रारंभ हो जाएगा। पूर्व सांसद गोरखनाथ पांडेय तथा जिलाध्यक्ष विनय श्रीवास्तव ने भी जनता को संबोधित किया। इसके पूर्व जनपद आगमन पर जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने केशव प्रसाद मौर्य को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। इसके पश्चात वहॉ उपस्थित जनप्रतिनिधियों सांसद रमेशचंद बिंद, जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी, विधायक भदोही रवींद्र नाथ त्रिपाठी, दीनानाथ भाष्कर, पूर्व सांसद गोरखनाथ पांडेय ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

प्रेस क्लब भदोही अध्यक्ष व महासिव का स्वागत रविवार को

भदोही। प्रेस क्लब भदोही के अध्यक्ष अजय राय व महासचिव साजिद अली अंसारी का रविवार को दोपहर 2 बजे नगर के पत्रकारो की ओर से स्वागत किया जायेगा। समाजसेवी शहाबुद्दीन खान के तकिया कल्लन शाह स्थित आवास पर स्वागत के पश्चात बैठक भी होगा। जानकारी देते हुए नैरंग आलम खान ने बताया कि भदोही प्रेस क्लब का गठन होने से सभी पत्रकारो में ऊर्जा का संचार हुआ है।

दलित और किसान विरोधी है सरकार : हृदय नारायण

चौपाल का आयोजन कर सपा नीतियों व रीतियों से कराया अवगत

अखंड भारत संदेश

भदोही। विधान सभा क्षेत्र औराई के ग्राम सभा तुलसीपुर विक्रमपुर में सुजीत कुमार पासी के आवास पर जन चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ग्रामीणों की समस्याओं को सुनने के साथ लोगों को पार्टी की नीतियों के बारे में जानकारी दी गई। सपा सरकार में हुए विकास कार्यों एवं उपलब्धियों को बताया गया। जन चौपाल में उपस्थित पासी समाज व ग्रामीणों को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के जिला महासचिव हृदय नारायण प्रजापति ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार दलित और किसान विरोधी है। दलितों पर अत्याचार होते हैं और मुख्यमंत्री मौन रहते हैं। दलित महिलाओं पर हो रहे सामूहिक अत्याचार छुपे हुए नहीं। महंगाई, बेरोजगारी, महिला उत्पीड़न, कानून व्यवस्था के मुद्दे पर सरकार पूरी तरह विफल है। दलितों के अधिकार समाजवादी पार्टी में ही सुरक्षित हैं। आने वाले समय में जन भावनाओं का आदर करते हुए सपा सभी वर्ग का उत्थान करेगी। चौपाल में उपस्थित पासी समाज एवं ग्रामीणों से आगामी 2022 के विधान सभा चुनाव में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए सहयोग की अपील भी किया गया। चौपाल कार्यक्रम में मुख्य रुप से बिहारी लाल सरोज, गोरख सरोज, पिंटू सरोज, आनंद पासी, विक्रमा पासी, सुरेंदर पासी, निहाल पासी, शुभम सरोज, बबलू सरोज, मंजय गौड़, मनोज कन्नौजिया, सुनील सरोज, सुरेश कन्नौजिया, अखिलेश, राजू, सन्तोष, गोलू मौजूद रहे।

क्रिप्टोकरेंसी टेरर फंडिंग और मनी लॉन्ड्रिंग का ना बने हथियार

पीएम मोदी की अध्यक्षता में बनी रणनीति

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में शनिवार को एक अहम मीटिंग हुई। इस बैठक में क्रिप्टोकरेंसी और इससे जुड़े मसलों पर गंभीर चर्चा की गई।

सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया जा रहा है कि युवाओं से झूठे वादे कर और पैसों का लालच देकर उन्हें बरगलाने की किसी भी कोशिश को नाकाम करने को लेकर इस मीटिंग में चर्चा की गई। बैठक में यह तय किया गया कि क्रिप्टोकरेंसी को लेकर सरकार विशेषज्ञों और स्टेक होल्डर्स के साथ लगातार चर्चा करती रहेगी। पीएम मोदी की अगुवाई में हुई इस बैठक में इस बात पर भी चर्चा की गई कि अस्थायी क्रिप्टो मार्केट को मनी लॉन्ड्रिंग और टेरर फंडिंग का हथियार नहीं बनने दिया जाएगा। इस दिशा में बेहतर प्रयास करने के लिए ठोस रणनीति बनाई गई है। क्रिप्टो करेंसी के गलत इस्तेमाल पर सरकार ने चिंता जताते हुए इससे निपटने के उपायों पर चर्चा की है।

सूत्रों ने कहा कि बैठक में लुभावने विज्ञापनों के जरिये युवाओं को गुमराह करने के प्रयासों को रोकने की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई। सूत्रों ने कहा, 'सरकार इस तथ्य से अवगत है कि यह एक विकसित तकनीक है, इसलिए इसपर कड़ी निगरानी रखी जाएगी और इसपर सक्रिय कदम उठाए जाएंगे। इस बात पर भी सहमति थी कि सरकार द्वारा इस क्षेत्र में उठाए गए कदम प्रगतिशील और दूरदर्शी होंगे। बता दें कि यह अहम बैठक ऐसे समय में हुई है जब कांग्रेस ने हाल ही में करोड़ों रुपये के बिटकॉइन घोटाले और कर्नाटक में भाजपा सरकार द्वारा इसे छिपाने का आरोप लगाया है और इस मामले की स्वतंत्र जांच कराने की मांग की है।

मणिपुर आतंकी हमले पर पीएम मोदी ने जताया शोक, कहा- कभी भुलाया नहीं जा सकता बलिदान

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को असम राइफल्स के काफिले पर हुए आतंकवादी हमले की निंदा की और कहा कि उनके बलिदान को भुलाया नहीं जा सकेगा। मणिपुर में आज सुबह उग्रवादियों के एक विस्फोट में असम राइफल्स के कर्नल और 4 जवान शहीद हो गए। इस हमले में कर्नल की पत्नी और बेटे की भी मौत हो गई। घटना आज सुबह 10 बजे से 11 बजे के बीच हुई है। असम राइफल्स की खुगा बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल विप्लव त्रिपाठी, उनकी पत्नी और बेटे के अलावा अर्धसैनिक बल के चार जवान शनिवार सुबह मणिपुर में घात लगाकर किए गए हमले में मारे गए।

मैं भी एक किसान हूं... पराली के मुद्दे पर बोले सुप्रीम कोर्ट के जज सूर्य कांत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस सूर्य कांत ने शनिवार को कहा कि वह एक किसान हैं और चीफ जस्टिस एनवी रमना भी एक किसान परिवार से आते हैं और वे जानते हैं कि गरीब-सीमांत किसान पराली प्रबंधन के लिए मशीन नहीं खरीद सकते हैं। जस्टिस कांत ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से कहा, "आप कह रहे हैं कि 2 लाख मशीनें उपलब्ध हैं, लेकिन गरीब किसान यह नहीं खरीद सकते। कृषि कानूनों के बाद यूपी, पंजाब और हरियाणा में जोत 3 एकड़ से भी कम है। हम उन किसानों से उन मशीनों को खरीदने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं।" जस्टिस कांत ने कहा, "केंद्र और राज्य सरकारें मशीनें क्यों नहीं उपलब्ध करा सकती हैं? पेपर मिल्स और अन्य उद्देश्यों के लिए इन्हें लिया जाए। राजस्थान में सर्दियों में पराली बकरियों आदि के लिए चारा हो सकती हैं।" सर्वोच्च अदालत में पर्यावरण कार्यकर्ता आदित्य दुबे और लॉ स्टूडेंट अमन बांका की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई चल रही थी, जिसमें उन्होंने छोटे किसानों के लिए मुफ्त में पराली हटाने वाली मशीनें उपलब्ध कराने के लिए निर्देश की मांग की थी।

केंद्र सरकार की ओर से पेश हुए मेहता ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि ये मशीने 80 फीसदी सब्सिडी रेट पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। सुप्रीम कोर्ट के जज ने मेहता से पूछा कि क्या उनकी सहायता करने वाले अधिकारी सब्सिडी के बाद वास्तविक कीमत बता सकते हैं। चीफ जस्टिस एनवी रमना और जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के साथ बैठे जस्टिस कांत ने कहा, "क्या किसान इसका वहन कर सकते हैं। मैं एक किसान हूं और मैं जानता हूं, सीजेआई भी एक किसान परिवार से हैं और वह भी जानते हैं और मेरे भाई (जज) भी इसे जानते हैं। जस्टिस कांत ने यह भी कहा कि वायु प्रदूषण के लिए किसानों को दोष देना फैशन बन गया है।

अमेजन के जरिए मारिजुआना की तस्करी का भंडाफोड़, दो अरेस्ट

भिंड। मध्यप्रदेश पुलिस ने अंतरराष्ट्रीय कंपनी अमेजन द्वारा ऑनलाइन मारिजुआना यानी गांजा तस्करी के मामले में एक बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर अमेजन ऑनलाइन द्वारा सप्लाई किया जा रहा 20 किलो गांजा जब्त किया है। आरोपियों से शुरूआती पूछताछ में जानकारी मिली है कि अभी तक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से करीब 1 टन मारिजुआना की तस्करी की जा चुकी है।

दरअसल पुलिस को ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म अमेजन द्वारा गांजे की डिलीवरी की सूचना मिली थी जिसके आधार पर भिंड एसपी मनोज सिंह ने साइबर सेल की टीम को इस की जिम्मेदारी देते हुए मामले में संदिग्ध आरोपी ग्वालियर मुरार निवासी सूरज पवैया पर नजर रखने के निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह ने गोहद एसडीओपी समेत साइबर सेल और अन्य पुलिस अधिकारियों को उसे पकड़ने के लिए निर्देशित किया जिसमें गोहद थाना प्रभारी और साइबर सेल ने मिलकर आरोपी सूरज पवैया को बैंक ग्वालियर हाइवे रोड पर गोविंद धागे के पास पकड़ा, साथ ही गोविंद धावा के संचालक बृजेंद्र तोमर को भी हिरासत में लिया है। पुलिस ने आरोपियों से 20 किलो गांजा सहित अंतरराष्ट्रीय कंपनी अमेजन की पैकिंग के डिब्बे रैपर बारकोड टैगिंग समेत अन्य सामग्री भी जब्त की है। पुलिस को आरोपी से मिली जानकारी के अनुसार आरोपी द्वारा ुं४ ३७ नाम के फर्म बनाकर विशाखापट्टनम की कंपनी अमेजन पर सेलर के रूप में दर्ज कराई गई थी।

दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत भारत पर आंख नहीं उठा सकती : राजनाथ सिंह

सरोजनीनगर। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सरोजनीनगर के जुनाबगंज स्थित एक रिसॉर्ट में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रही केंद्र सरकार में देश की सुरक्षा इतनी मजबूत कर दी गई है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत भारत की ओर निगाह उठाकर नहीं देख सकती। उन्होंने कहा कि भाजपा देश ही नहीं, दुनिया की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी है। रक्षामंत्री ने केन्द्र सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए कहा कि देश की गरीब महिलाओं ने कभी सपने में भी गैस के चूल्हे पर खाना बनाने को नहीं सोचा था, प्रधानमंत्री ने उन गरीब महिलाओं तक गैस सिलेंडर पहुंचा कर उनका सपना पूरा किया है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार द्वारा किसानों के खातों प्रति वर्ष छह हजार रुपये दिल्ली से सीधे उनके खातों में भेजे जा रहे हैं। रक्षामंत्री बोले कि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी ने माना व कहा था कि केन्द्र सरकार से जो रकम जनता के हित

के लिए भेजी जाती थी, उसका 15% हिस्सा ही उन तक पहुंचता था। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने यह व्यवस्था खत्म कर सीधे खातों में रुपए भेजने की व्यवस्था कर दी है।

उन्होंने कहा कि सन 2024 तक पूरे देश में सभी कच्चे मकानों को पक्का करने के साथ ही सभी को छत उपलब्ध करा दी जायेगी। इस मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व जिला पंचायत सदस्य राजेश सिंह चौहान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सांसद रीना चौधरी, भाजपा के रामचंद्र सिंह राठौर और जितेंद्र सिंह चौहान पिंकू सहित तमाम अन्य भाजपाई मौजूद रहे।

दिल्ली में अब पलूशन वाला 'लॉकडाउन'

एक सप्ताह तक सिर्फ ऑनलाइन पढ़ाई और वर्क फ्रॉम होम

नई दिल्ली। दिल्ली में वायु गुणवत्ता लगातार 'गंभीर' श्रेणी में बने रहने से सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद हरकत में आई दिल्ली सरकार ने सोमवार से दिल्ली में 1 सप्ताह के लिए सभी स्कूल बंद कर दिए हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में 1 सप्ताह के लिए वर्क फ्राम होम लागू होगा। सरकार की ओर से निजी कार्यालयों के लिए भी वर्क फ्राम होम को बढ़ावा देने के लिए अपील जारी की जाएगी। इसके साथ ही सभी प्रकार के निर्माण कार्यों पर भी 17 नवंबर तक रोक लगा दी गई है। दिल्ली में वायु गुणवत्ता शनिवार को भी गंभीर श्रेणी में है और वायु गुणवत्ता सूचकांक (अदक) 499 पर पहुंच गया है। हालात को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने वायु प्रदूषण से निपटने

के लिए आज शाम एक आपात बैठक बुलाई थी। बैठक में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन, पर्यावरण मंत्री गोपाल राय और दिल्ली के मुख्य सचिव ने हिस्सा लिया। इसमें प्रदूषण को काबू करने के लिए कई ठोस कदम उठाने पर चर्चा हुईबैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में सोमवार से एक हफ्ते के लिए सभी स्कूल बंद रहेंगे। सिर्फ वर्चुअल क्लास चलेंगी। 14-17 नवंबर तक कंस्ट्रक्शन एक्टिविटी का काम भी बंद किया जाएगा। सरकारी दफ्तरों को 100 फीसदी वर्क फ्रॉम होम किया जा रहा है तो दफ्तर भी बंद रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राइवेट सेक्टर में भी एडवाइजरी जारी की जाएगी कि वहां भी ज्यादा से ज्यादा लोगों को वर्क फ्रॉम दिया जाए। केजरीवाल ने कहा कि हम सुप्रीम कोर्ट के सुझाव के अनुसार अगर दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति बदतर होती है हम लॉकडाउन लगाने के प्रस्ताव पर भी काम कर रहे हैं, सुप्रीम कोर्ट में जल्द ही इसको लेकर एक प्लान पेश करेंगे, जिस पर अलग-अलग एजेंसियों और केंद्र के साथ भी चर्चा की जाएगी। बता दें कि, सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण में बढ़ोतरी को 'आपात' स्थिति करार देते हुए और केंद्र एवं दिल्ली सरकार को वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए आपात कदम उठाने के आदेश दिए हैं। चीफ जस्टिस एन.वी. रमण की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि प्रदूषण की स्थिति इतनी खराब है कि लोग अपने घरों के भीतर मास्क पहन रहे हैं। इस बेंच में जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ और जस्टिस सूर्यकांत भी शामिल थे। बेंच ने कहा कि हर किसी पर किसानों को जिम्मेदार ठहराने की धुन सवार है। क्या आपने देखा कि दिल्ली में पिछले सात दिनों में कैसे पटाखे जलाए गए हैं? यह आपात स्थिति है, जमीनी स्तर पर कई कदम उठाने की जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से सोमवार को जवाब मांगा है। कोर्ट ने इसका भी संज्ञान लिया कि राजधानी में स्कूल खुल गए हैं और प्रशासन से कहा कि वाहनों को रोकने या लॉकडाउन लगाने जैसे कदम तत्काल उठाए जाएं।

केंद्र सरकार की तरफ से पैरवी कर रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि पंजाब में पराली जलाई जा रही है।

कर्ज जाल में फंसाने वाले चीन को श्रीलंका ने दिया बड़ा झटका, बौखलाया ड्रैगन

कोलंबो। कर्ज जाल में फंसाकर शोषण करने वाले चीन को श्रीलंका ने बड़ा झटका दिया है। श्रीलंका की ओर से खराब क्वालिटी के ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर (जैविक खाद) की खेप को खारिज किए जाने के बाद दोनों देशों में दुर्लभ कूटनीतिक जंग छिड़ गई है। श्रीलंका को दुनिया का पहला पूर्ण जैविक खेती वाला देश बनाने की कोशिश के तहत कोलंबो ने चीनी कंपनी किंगदाओ सीविन बायो-टेक ग्रुप से समझौता किया था। लेकिन 20 हजार टन की पहली खेप को श्रीलंका की ओर से खारिज किए जाने की वजह से दोनों देशों के बीच रणनीतिक तनाव बढ़ गया है। श्रीलंका सरकार की एजेंसी नेशनल प्लांट क्वॉरन्टीन सर्विस (एनपीक्यू) ने माल लेने से इनकार कर दिया है। इसने कहा है कि कार्गो से लिए गए सैंपल में रोगाणु मिले हैं, जो फसल को नुकसान पहुंचा सकते

हैं। बीबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, श्रीलंका कृषि विभाग के डायरेक्टर जनरल डॉ. अजंता डी सिल्वा ने कहा कि कार्गो से लिए गए नमूनों की जांच से पता चलता है कि उर्वरक जीवाणुरहित नहीं हैं। उन्होंने कहा, "हमें ऐसे बैक्टीरिया मिले हैं, जो गाजर और आलू जैसी फसलों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।"

चूंकि माल को श्रीलंका में अनलोड करने की इजाजत नहीं मिली, सरकारी उर्वरक कंपनी को कोर्ट से आदेश मिला कि सरकारी पीपल्स बैंक को 90 लाख डॉलर का पेमेंट रोक दिया जाए। यह स्पष्ट नहीं है कि समझौते के मुताबिक, खरीदार पेमेंट रोक सकता है या नहीं। इस बीच कोलंबो में स्थित चाइनीज दूतावास ने पेमेंट रोकने की वजह से बैंक को ब्लैकलिस्ट करके जवाब दिया है। अक्टूबर के अंत में चाइनीज दूतावास के ट्विटर हैंडल ने श्रीलंका के सरकारी बैंक को ब्लैक लिस्ट करने की घोषणा करते हुए घटनाक्रम के टाइमलाइन को ट्वीट किया था।

हालांकि, दूतावास ने उर्वरक की क्वालिटी पर कोई सफाई नहीं दी है। चीनी विदेस मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि कार्गो थर्ड पार्टी टेस्टिंग से गुजर चुका है। उन्होंने यह भी कहा कि चीन हमेशा निर्यात की क्वालिटी को बहुत अधिक तवज्जो देता है। किंगदाओ सीविन ने श्रीलंकाई मीडिया पर ₹चीनी उद्यमों और चीनी सरकार की छवि को बदनाम करने₹ के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। इसने विवाद के बाद हुई प्रतिष्ठा के नुकसान के लिए एनपीक्यू से $ 8 मिलियन के मुआवजे की भी मांग की। कंपनी ने कहा कहा है कि श्रीलंका के एनपीक्यू की ओर से अपनाया गया जांच का तरीका अंतरराष्ट्रीय मापदंडों के मुताबिक नहीं है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025

वर्ष 2021 के छात्र अंक सुधार के लिए निःशुल्क दे सकेंगे वर्ष 2022 की परीक्षा

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने माध्यमिक शिक्षा परिषद के छात्रों के हित में बड़ा फैसला लिया है। परिषद की ओर से वर्ष 2021 की अंक सुधार परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को छोड़कर प्रोन्नत श्रेणियों के सभी छात्रों सहित परीक्षा में पंजीकृत हुए सभी छात्रों को पुनः वर्ष 2022 की परीक्षा में बैठने का अवसर दिया जाएगा। अंक सुधार के लिए 2022 की परीक्षा देने वाले वर्ष 2021 के छात्र-छात्राओं से परीक्षा शुल्क नहीं लिया जाएगा। यह जानकारी उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने दी। उन्होंने बताया कि अंक सुधार परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को वर्ष 2022 की परीक्षा में अंक सुधार के लिए पुनः सम्मिलित होने का मौका नहीं दिया जाएगा। यह अंक सुधार परीक्षा 18 सितंबर 2021 से छह अक्तूबर 2021 के बीच आयोजित की गई थी। उन्होंने बताया कि कक्षा 10 एवं कक्षा 12 के संस्थागत एवं व्यक्तिगत तथा कक्षा नौ एवं कक्षा 11 के छात्रों के अग्रिम पंजीकरण के लिए आवेदन की तिथि को 20 नबंबर की मध्यरात्रि 12 बजे तक बढ़ा दिया गया है।उप मुख्यमंत्री ने बताया कि वर्ष 2021 की परीक्षा के अंक सुधार के लिए जो परीक्षार्थी वर्ष 2022 की परीक्षा में शामिल होंगे, उनका परीक्षा वर्ष 2021 ही माना जाएगा। उन्हें उत्तीर्ण होने का प्रमाणपत्र व अंकपत्र वर्ष 2021 का ही प्रदान किया जाएगा। वर्ष 2021 के जो परीक्षार्थी अंक सुधार के लिए वर्ष 2022 की परीक्षा में शामिल होंगे, उनके आवेदन निःशुल्क लिए जाएंगे। हालांकि वर्ष 2021 के जो परीक्षार्थी अंक सुधार के लिए वर्ष 2022 की परीक्षा में शामिल होंगे उनके अतिरिक्त शेष सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा शुल्क के साथ आवेदन करना होगा।

वतन वापसी! जेल से रिहा होने के बाद गुजरात के 20 भारतीय मछुआरे

नई दिल्ली। पाकिस्तान की जेल से रिहा किये गये 20 भारतीय मछुआरों को जल्द ही बाघा बॉर्डर के जरिए भारत भेजा जाएगा। इन सभी को पाकिस्तान की लांधी जेल से हाल ही में रिहा किया गया था। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इन सभी को रविवार को बाघा बॉर्डर भेजा जाएगा। इसके बाद इन्हें यहां भारतीय प्रशासन के हवाले किया जाएगा।

गुजरात के रहने वाले ये 20 मछुआरे पाकिस्तान की जेल में बंद उन 350 भारतीयों में से हैं जिन्होंने अपना जेल टर्म पूरा कर लिया है। इन सभी को अलग-अलग बैच में रिहा कर भारत भेजा जाएगा।

शरिया कानून लागू करने के लिए बेकरार तालिबान, हबीतुल्लाह अखुंदजादा के आदेश पर मिलिट्री ट्रिब्यूनल बनाया

नई दिल्ली। तालिबान अफगानिस्तान में शरिया कानून लागू करने के लिए बेकरार है। तालिबान ने इसके लिए वहां मिलिट्री ट्रिब्यूनल (सैन्य न्यायाधिकरण) भी बनाया है। ' ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि इस मिलिट्री ट्रिब्यूनल के पास देश में शरिया कानून लागू करवाने की जिम्मेदारी होगी।

इस मिलिट्री ट्रिब्यूनल को बनाने का आदेश तालिबान के शीर्ष नेता हबीतुल्लाह अखुंदजादा ने दिया था। न्यूजपेपर ने तालिबान के उप-प्रवक्ता इमानुल्लाह समानगनी के एक बयान के हवाले से कहा कि इस ट्रिब्यूनल का गठन शरिया कानून को लागू करवाने और सोशल रिफॉर्म के लिए किया गया है। इस बयान में आगे कहा गया है कि ओबियादुल्लाह नेजामी

को इस ट्रिब्यून का अध्यक्ष बनाया गया है। इसके अलावा सैयद अगहज और जाहेद अखुंदजादा इसके डिप्टी होंगे।

इस रिपोर्ट में इमानुल्लाह समानगनी के हवाले से कहा गया है कि मिलिट्री ट्रिब्यूनल को शरिया शासन लागू करवाने, इस्लामिक कानूनों को लागू करवाने, शिकायद दर्ज करने, तालिबान अधिकारियों के खिलाफ किसी याचिका को देखने और किसी पुलिस कर्मी के खिलाफ शिकायत को सुनने का अधिकार दिया गया है। इसके अलावा इसके पास आर्मी और इंटेलिजेंस यूनिट के खिलाफ मिलने वाली शिकायतों को भी सुनने का अधिकार होगा। बहरहाल आपको बता दें कि कई मीडिया रिपोर्ट्स में लगातार यह बात कही जा रही है कि अफगानिस्तान में आतंकी हमले बढ़ने के बाद तालिबान की योग्यता और अफगानियों को सुरक्षित रखने खासकर अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर तालिबान पर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं। आईएसआईएस-खुरासान यहां तालिबान के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। अफगानिस्तान नें शासन को लेकर तालिबान की सबसे बड़ी परीक्षा अभी चल रही है। अंतरराष्ट्रीय समुदायों ने अभी तक तालिबान को मान्यता नहीं दी है। लिहाजा यहां उसकी चुनौती लगातार बढ़ती ही जा रही है।

6 जनवरी को हिंसा भड़काने मामले में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के सलाहकार स्टीव बैनन जेल जाएंगे?

नई दिल्ली। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के सीनियर सलाहकार रहे स्टीव बैनन पर अमेरिकी कांग्रेस की अवमानना का आरोप लगाया गया था। यह आरोप 6 जनवरी 2021 को हुए हिंसा की जांच कर रही प्रतिनिधि सभा की एक चयन समिति द्वारा उन्हें जारी एक सम्मन की अवहेलना करने के लिए किया गया था। बता दें कि अभियोग वाशिंगटन डीसी के लिए अमेरिकी अटॉर्नी द्वारा लाया गया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक बैनन खुद को 15 नवंबर को अधिकारियों के हवाले कर देंगे। अगर उन्हें मामलों में दोषी ठहराया जाता है तो बैनन को दो साल तक जेल और डेढ़ लाख रुपये तक का जुमार्ना देना पड़ सकता है। कमिटी ने बैनन को यह कहते हुए तलब किया था कि हमारे पास मानने के कई कारण हैं कि आपके पास 6 जनवरी को हुए हिंसा संबंधित जानकारी हैं।

बता दें कि हाउस कमिटी ने बैनन को 23 सितंबर को तलब किया था लेकिन उन्होंने ट्रंप के राष्ट्रपति के कार्यकारी विशेषाधिकार के संरक्षण का दावा करने से इनकार कर दिया था जो अमेरिकी राष्ट्रपति और पूर्व राष्ट्रपति और उनके सहयोगियों को पद पर रहते हुए की गई कार्रवाई के लिए कानूनी चुनौतियों से बचाता है। अटॉर्नी जनरल मेरिक गारलैंड ने बताया है कि कार्यालय के अपने पहले दिन से मैंने न्याय विभाग के कर्मचारियों से वादा किया है कि हम अमेरिकी लोगों को शब्द और काम से दिखाएंगे कि विभाग कानून के शासन का पालन करता है। तथ्यों और कानून का पालन करता है। स्टीव बैनन पर जारी जांच विभाग के इस प्रतिबद्धता को दशार्ते हैं। बता दें कि डॉनल्ड ट्रंप समर्थक भीड़ ने 6 जनवरी को अमेरिकी कांग्रेस के जॉइंट सेशन में धावा बोल दिया था।